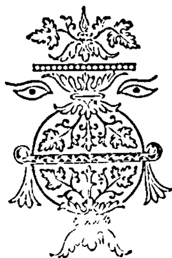


योगनिष्ठ पूज्य जैनसाधु श्रीमद् बुद्धिसागरजी अने तेमनो काव्य संग्रह.

हरकोइ मनुष्यने सुख प्राप्त करवानी अभिलाषा होय छे. अने ए सुख माटेज प्रत्येक प्राणीओ विविध प्रकारनी प्रवृत्तिमां प्रवृत्त थता जणाय छे, तेमां ते मार्गना परंतरे आवी कोइ विजयवंत निकळता नथी तो एक बाजुए विरल विरल पुरुषो सत्सुखमां निमग्न थयेला होय छे. विशेष स्तुतिपात्र एनेज मानी शकाय के, जाते सत्सुखानन्दी होइ बीजानुं दुःख टाळवा प्रवृत्ति करे छे.

हुं बीजाने सुख आपीश एम धारी घणा माणसो पोताने प्राप्त थयेल साधनो पोताथी अधः स्थितिवाळाने पुरां पाडवा जाय छे. राजाओ, शेठीआओ, अने धनवंत जनो, धनलक्ष्मी एज सुखनुं साधन माने छे अने एथीज बीजा सुखी थशे एम विचारी धनादिकथी अनेक प्रकारे सहाय आपे छे पण आ मार्ग मध्यम छे. कारण के धनादिक पदार्थ मात्र आजन्मपर्यंतने माटे पण अनिश्चयात्मक सुखस्वरूप होय छे. ए करतां महात्मा पुरुषो उपदेशादिथी हृदयपूर्वकनुं शुद्ध अध्यात्मज्ञानथी विभूषित ज्ञान आपे छे. ए ज्ञानथी उत्पन्न थयेल निजानंद स्वरुप सुख कदी एटले जन्मांतरमां पण नष्ट थतुं नथी. ए सर्व कोइ मार्गवाळा माने छे.

उपदेश उभय प्रकारे आपी शकाय छे प्रत्यक्षपणे, अने अप्रत्यक्षपणे, ज्यां सुधी शरीर आ लोकपर विचरी शके छे. त्यां सुधीना माटेज प्रत्यक्षपणे उपदेश आपी शकाय छे. पण ग्रंथादिक बनावी अविचळ अक्षर देहथी आपवामां आवतो अप्रत्यक्षपणे उपदेश ज्यां सुधी लांबो काळ रही शके ए कहेवुं मानवनी

बुद्धिनी बहार छे तथा पहलुं तो मानवुं पडशे के आवो काव्य सुधी ए असरदेह परोपकारार्थ दर्शी शके छे.

प्रत्यक्ष अने अप्रत्यक्षोपदेश पण उभय प्रकारनो होय छे. एक गद्यमां अने बीजो पद्यमां अक्षरोने अमुक प्रकारनी गोठवणी शिवाय मात्र रसपूरित भावार्थवाळुं जे लखाण ते गद्य कहेवाय छे. अने वर्णमात्राने अमुक प्रकारनी गणमात्राए पद्धतिमां लखेल लेख पद्य कहेवाय छे आ बेय असरदेह स्वरूप छे. पण बुद्धिनी लालित्यता भाषा गौरव ने हृदय पर छाप पाडनार भाव पद्यमां, गद्य करतां अधिक अंशे समायेल छे. साधारण वार्ताओ करतां कवि लोकोए लखेला कविताओना ग्रंथो केवी अस्तित्वता भजवी उन्नतता भोगवे छे ए कोनी जाण बहार छे.

पद्यमां पण बे भेद छे. पिंगळ पद्य, शार्दूलविक्रीडित, स्रग-धरा, शिखरिणी आदि वर्ण मेळना छंदो ए प्रथम प्रकार छे. अने रागरागणीमां भजन कीर्तनो, पद ख्याल, ठुमरीओ, गजलो ए पद्यनो बीजो प्रकार छे. पहेला प्रकार करतां पण काळबळ, देशनी स्थिति रीति मानवनी मनोविचारणाओने अवलोकी, आ पद्यना बीजा प्रकारने अमो प्राधान्य मानीशुं. कारण जे भणेल वर्ग होय छे. अने तेमां पण जेमणे पिंगळ वगेरेनो अभ्यास करेलो होय छे उपरांत रस अलंकारना जेओ ज्ञाता होय छे तेमने प्रथम मार्ग सरस मालुम पडशे पण हिंदनी हालनी प्रजा अधमथी ते उत्तम वर्ण सुधी संगितपर जेटली मस्त छे. तेटली प्रथम प्रकारमां गौण अंशे छे.

मानव तो शुं पण सर्प, हरिण, आदि पशु जातिमां संगीत साम्राज्य भोगवे छे. सुंदर चंद्रमानी पवित्र श्वेत छाया अने पवननी सुखद लहरिओमां वीणानादे आरंभेल रागध्वनि हरिणनो

मनोबळ पर जे खेंचाण करे छे ते तथा मधुर मुरलीनो नाद क्रूर अने भयंकर सर्प जातिमां पोतानी मोहिनी नाखी डोलावी बेभान करी दे छे एकोना हृदय बहार छे? अर्थात् सर्वने विदित छे तो मनुष्य के जे सहृदय छे ते प्राणिना हृदयने संगीत केटलुं आकर्षी शके ए सुज्ञजने जाते विचारवुं जोइए.

उपरनी वात तो आपणे कही गया पण कइ भाषामां आ रीते उपदेशादिक होवुं जोइए. एमां पण वांधा अने तकरारो विद्वानो अनेक प्रकारनी उठावे छे. इंग्रेजी भणेला इंग्रेजी भाषाने सारी अने प्रौढ माने छे. संस्कृत भणेला संस्कृतना प्रेममांथी बीजी भाषा तरफ आंख उघाडीने जोता पण नथी हिंदुस्थानी भाषा वाळाओ 'हिंदुस्थानि के सौलेहि आने मानते हे.'

गुर्जरी भाषाना साक्षरो गुजरातीनी गौरवता गणे छे. आदि आदि अनेक देश प्रचलित भाषाना साक्षरो पोत पोतानी भाषाने वखाणे ए स्वाभाविक छे. उपरनी भाषाओमांथी मात्र संस्कृतने अमो आर्यावर्तना प्रदेशो माटे मानीए. कारण आखा हिंदनी मूळथी मांडीनेज संस्कृत सामान्य अने मोभादार तथा प्रिय भाषा छे. अमो माध्यस्थदृष्टिथी विलोकी कहिए छिए के जे जे देशमां प्रचलित जे भाषा होय ते देश माटे ते भाषा सारी छे. जेमके गुजराती भाषामां सामान्य रीते सर्व प्राणीना हृदयने आल्हाद आपवा. हिंदुस्थानी के मराठी आदिक भाषाओ होइ शके नहि. गुजरातने माटे गुजरातीज होय. तेम उत्तरहिंदने माटे गुजराती के मराठी उपयोगी परीपूर्ण होइ शके नही. तेम दक्षिणमां हिंदुस्थानीय के गुजराती प्रिय होइ शके नही एतो गुजरातीमां गुजरातीज 'उत्तरहिंदमां हिंदी, दाक्षणमां दक्षणिज' पोषाइ शके. प्रश्न थशे के, संस्कृत के इंग्रेजी आखा आर्यावर्तने माटे हाल सा-

मान्य भाषाओ छे तो ते भाषा प्रिय केम नही. ?

तेमने पण अमो खुल्ला हृदयथी कहिशुं के, गुजरातमां अत्यारे गुजराती भाषा जाणनार जेटलां माणसो छे तेथी केटलाक ओछा अंशे अंग्रेजी अगर संस्कृत भणेलाओ छे. माटे संस्कृत जाणनार माटे संस्कृत भाषा उत्तम अने अंग्रेजीवाळाने इंग्रेजी ठीक. संस्कृत भणेलाने इंग्रेजी नकामी, ने इंग्रेजीवाळाने संस्कृत नकामी छतां गुजराती तो बेउने उपयोगी छे माटे गुजराती भाषानुं प्राधान्य कहीए ए अमने ठीक जणाय छे. गुर्जर देशवाळा मनुष्योने गुर्जर भाषा मातृ भाषा गणाय छे मातृ भाषामां जे हृदयना उद्गार नीकळे छे ते अन्य भाषामां नीकलता नथी.

जे वखतमां संस्कृत भाषा आर्यावर्त्तमां चालती ते वखतमां संस्कृत ग्रंथो रचाया छे. पण काल वधे जेम जेम भाषामां फेर-फार थई प्राकृत भाषाओ थवा मांडी त्यारे ते ते भाषाओनुं संस्कृत करतां प्राधान्यपत्र थयुं. हाले तो संस्कृत अने इंग्रेजी भाषाओनां गुजरातीमां भाषान्तर बनाववां पडे छे. अमो एम नथी कहेता के संस्कृत भाषा करतां गुजराती अने बीजी प्राकृत भाषाओ चेडायली छे. संस्कृत भाषा. घणी गौरवतावाळी छे ए नकी छे पण हाल आपणा देश, धर्म अने व्यवहारना उदय माटे गुजराती भाषामां ज जनसेवा बजाववानी छे तेम बीजा देशवाळाए पोत पोतानी भाषामां सेवा बजावा जेवुं छे.

जेम संस्कृतमां एक अष्टक कर्युं होय अने हेन्डबील तरीके तेने जन समाजमां मोकल्युं होय तो तेने हजारमां बे चार जणज आदर पूर्वक स्वीकारशे पण जो गुजरातीमां भजन, ख्याल के ठुमरी के दुहा चोपाइ-या छंदमां लखी कोइ मोकलवामां आवे तो हजारके लगभग लाख उपर स्वीकारनार मळशे. छेवटे अभ-

पण भणेलाना मुखथी सांभळी तेने समजी आल्हाद्ये. भाग-ना संस्कृतभाषाना जमानाना संगितपर असारना लोकोनुं हृदय प्रेम वत्ववाळुं तेटलुं होय एम परिपूर्ण लागतुं नथी. कारण संस्कृतना तमाम ग्रंथो छंदोमां छे, कोइ पण संगितमां क्वचित् मालुम पडे छे. शोभन स्तुतिना कर्त्ता शोभन मुनि, विनयविजयजी, यशोविजयजी, जयदेव जेवा भोए एक वखत आ मार्ग प्रकाश कर्यो जणाय छे पण तेना पछी ते मार्ग कोइ पंडित परवर्यो होय एम जणातुं नथी.

अने अत्यारे अनेक जातना लोको पण एकतारो, मंजीरानी धुनमां के नही संगितमयमार्गी भजनमां मस्त जणाय छे. तथा केटलाक द्रुपदी अने साधारण पदोमां ईश्वर स्तवनादि पोताना हृदयने प्रीय लागे तेवा रागोमां गाय छे. केटलाक लोको भैरवी, मालकोश, धनाश्री, सारंग, कल्याण. वगेरे रागोमां सतार, हारमोनीयम वगेरे वाद्योमां, छाया जमावी घडीभर दुःखनी विस्मृति करावे छे. नाटकोमां पण गायन, गायन ने गायन ज. अर्थात् आखा देशोना देशोमां संगितनी लगनी लागी रही छे.

तो आवे समये संगीतद्वाराए लोकोनां हृदयने उन्नत करवां. ए एक मुख्य कर्त्तव्य छे.

जैन साधु योगनिष्ट पूज्य श्री बुद्धिसागरजी.

एओना करेला भजनपद संग्रहना चारे भाग म्हें वांच्या छे. अने ए अवलोकनथी म्हारुं हृदय शांत थाय छे. कारण व्यवहार परमार्थ अने स्वदेश ए त्रणनी उन्नतिना सारुं गद्यमां, पद्यमां, ग्रंथो वांधी एमणे अल्प समयमां गुर्जर वर्गनुं हित साचव्युं छे. एमना भजनोमां गौरवता एवी छे क जेम जेम वांचता जइए छीए तेम तेम पुनः पुनः वांचवा ए कवितामां जिज्ञासा थाय छे.

ता थोडा समयमां एटली यइ छे के

मां, भजनमां, अने एकांतमां,

य छे. विजापुर वगेरेमां

यथी गाय छे. ए शिवाय

ी मूर्तिस्वरूप थोडां मननो

र्पाइ दाखल करेलां छे.

कौन गुन भयोरे

भमरा कौन गुन

तथा

मत कोइ प्रेमके

परत सो निक

प्रेमके कारन

दीपक पतंग

*

आनन्दघन

तुम विरह

आनदघनजी

श्रीमान् बुद्धि

ानन्दनी जोडमां

. कारण के

नानी कविता

बीजो भाग

:यानुं

सिद्ध

ा ब्र-

ादरुप

ा छे.

ा छे.

यता

थइ

मन

ाथी

.थी.

.र्यंत

युक्तिथी वश्य

ाधकनो प्राण

पूर्ण समाया

रलण सहज

छीए.मात्र

अत्र बतावीए

ां तो ए ग्रंथो करतां

कविता पिंगळमां बतावेल छंदोमां छे. ते शुद्ध व्यवहारने अति उपयोगी छे. कारण दया, विवेक, न्याय, सत्य आदि लक्षणो आबालवृद्ध सर्व दर्शनवाळाने उपयोगी छे ए संबंधीनाज लेखो छे. भाषा सरल छे, रसहृदयभेदक छे उपरांत वैराग्य. सुख दुखमां समभाव, निंद्रा त्याग, स्वार्थ स्वरूप, परमार्थ स्वरूप, दान स्वरूप, कपट स्वरूप, उपकार महिमा, आदि अनेक उपदेशो समाया छे. वळी योग मार्गमां पोते निष्पक्षपाती होवाथी, योग महिमाना विषयोनां तेमनां भजनो बहुज आनंद आपे छे. ४४ मा पत्रे योग माटे थोडा झूलणा छंद छे. तेमांथी अवकाश स्थळ संकोचने लेइ एक बे टांकी बतावुं छुं.

योग विद्यातणुं धाम चेतन प्रभु,
शक्ति सिद्धो समी रही प्रकाशी
योगविद् मानवी चित्तमां ध्यानथी,
पिण्ड ब्रह्माण्ड भावो विलासी. १

चक्र षट् भेदवां वायुनां पिण्डमां,
गगनगढ चालवुं वंक नाले;
ज्योति जळ हळ अति शोक चिन्ता नथी,
हंसलो शान्ति सुख मांहि म्हाले.
पिण्ड ब्रह्माण्डनी ऐक्यता आत्ममां,
शुद्ध उपयोगथी जेह जागे;
अष्ट सिद्धि सदा हस्त जोडी रहे,
चित्त रंगाय नहि बाह्य रागे,
अलखनी धूनमां भासता दिन मणि,
भक्ति उत्साहथी यत्न धारो;
बुद्धिसागर सदा ज्योतिमां जागजे,

शुध्धचेतन प्रभु चित्त प्यारो,

आ छंदोमां कर्तानुं विद्वान्‌पणुं यथार्थ जणाय छे. योगविद्यानुं धाम परमात्मा छे. सिद्ध समान शक्ति योगमां छे. अर्थात् सिद्ध थवुं होय तो पण योग शक्तिथी थइ शकाय छे. पिण्ड तथा ब्रह्माण्डनी ऐक्यता योगथी थइ शके छे. छचक्र भेदीने गगनगढरुप ब्रह्मरंध्रमां जवुं, त्यां जवा वंकनाल कहेतां मेरु दंड मार्ग छे. गया बाद अनंततेजोमय ऐश्वर्यमय आत्मानो भास थाय छे. चिंता अने शोक त्यां जणातां नथी. पिन्ड ब्रह्मांडनी ऐक्यता आत्मामां थाय छे. त्यारे अष्ट सिद्धि हाथ जोडी वरवा खडी थइ जाय छे पण ते बाह्य रागवाळी सिद्धिओमां ते योगीनुं मन रंगातुं नथी.आसक्त थतुं नथी अलक्ष्यनुं स्वरूप वैखरीना शब्दोथी वर्णी शकातुं नथी. आत्मा वर्णोथी परिपूर्ण रीते लखातो नथी. तेम अज्ञानीना परिपूर्ण लक्ष्यमां आवतो नथी, एटलो ऐश्वर्यवंत छे. ते भक्तिना उत्साहथी तेने मेळववा यत्न करो.

आ वातने योगीओ कबुल करे छे.

यथा सिंहो गजो व्याघ्रो,
भवेत् वश्यं शनैः शनैः

सिंह गज व्याघ्र वगेरे प्राणीओ हळवे हळवे युक्तिथी वश्य थाय छे, तेमज प्राणने वश्य करवो अन्यथा साधकनो प्राण नाश थाय छे.

मात्र एज भजनमां भक्तियोग वैराग्यादिक संपूर्ण समाया छे, माटे कर्तानुं ज्ञान, भक्ति,क्रिया ए त्रण पदार्थपर वलण सहज लागे छे. जे जे भजनो गाइए छीए. तेमां निमग्न थइए छीए,माटे अमो तो थोडी थोडी कडीओ लेइ कर्तानो निर्देश अत्र बतावीए छीए कारण दरेक भजनोनुं अवलोकन करतां तो ए ग्रंथो करतां

बीजा नवा कोण जाणे केटला घणा ग्रंथ थाय एम छे.

त्रीजा तथा चोथामां तो मात्र अलख खुमारीज छे. एक विद्युत् चमत्कारमां जेम मोतिहार परोववा जेटली एकाग्रता अने बाह्यवृत्तिनी निवृत्ति जोइए तेटलीज निवृत्ति लेइ स्वात्मलक्ष्यमां कर्ता चाल्या जाय छे जाणे एक मुक्त महद् पुरुष होय नहि ? उपरना बे करतां आ बे भाग वधारे हृदयाकर्षनार छे भाषा उच्च छे.

देह तंबुर विषे एक बे वाक्यो.

देह तंबुरो सात धातुनो
रचना तेनी वेश बनी
इडा पिंगळा अने सुषुम्णा
नाडिनी शोभा अजब घणी.

देह तंबुरो अलख धुनमां, परा पश्यंतिथी वागे;
जाग्रत् तुर्यावस्थामांहि, चेतन यथाक्रमे जागे.
देह तंबुरो वगाडनारो, चिदानन्द घटमां जागे;
बुद्धिसागर अलख धूनमां, अनंत सुख छे वैराग्ये.

आ आत्मभावनी उच्चदशानी पराकाष्टा कहीए तो चाले. आत्मखुमारी, योगविषय, तत्वज्ञान, वगेरेनां हेडींगवाळी कविताओ अति उत्कृष्ट छे.

अमो हद बहार जइ वखाणता नथी. पण हृदय पूर्वकनी लागणी साथे कहीएछीएके आत्मज्ञान स्वदेशोदय, व्यवहारोदय माटे सर्वे जणने ए भाग बहु उपयोगी छे. जैनोना तीर्थकरोनी स्तुतिओ एमां समायली छे ते जैनोने अति उपयोगी छे. पण दया, दान तपश्या, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, योग आदिना विषयो लखवा निर्लोभताए जनकल्याणमाटे ज ए विरक्तपुरुषे जे प्रयत्न कर्यो छ तेने धन्यवाद आपीएछीए, पुस्तकोनुं मूल्य एटलुं

सरल थएलुं छे के ए मुमोभिन पुस्तकोना मूल्य करतां छपावनारने खर्च वधारे छे. एम करवानुं कारण तेमनी परोपकार दृष्टिज छे.

हवे अमो एटलुं कहीने विरमीए के श्री बुद्धिसागरजी जेवा सत्यग्राही, ज्ञानी, धर्मी आत्मनिष्ट अने परोपकार परायण पुरुष धर्म मार्गनो उद्धार करो एटलुंज नहीं पण व्यवहार तथा देशनुं पण उदय करो ते माटेज तेमनुं जीवन परमात्मा दीर्घ करे. तथास्तु सं. १९६५ विजया दशमी.

वसोडा निवासी पंडित भोळानाथ शर्मा.

भजनसंग्रहभागचतुर्थ संबंधी लेख.

नवरस रंगित काव्यना आस्वादथी जे सुख थाय छे ते सुख खरेखर अध्यात्म रसनी आगळ एक बिंदु मात्र पण नथी. अध्यात्मरसमां रंगित थतां पराभाषा स्वयमेव खीले छे, अने जे वस्तुनो अनुभव थाय छे, ते वैखरीवाणी द्वारा अक्षर रूपे बहिर् प्रकाशे छे. आ भजन संग्रह चतुर्थ भागमां पण विशेषतः तेवीज स्थिति थएली छे. संवत १९६५ ना माह शुदी बीजना दीवसे अमदावादथी डभोइ तरफ जवा विहार कर्यो. त्यारे विहारमां जे जे गामो आवतां तेमां अनुपाधिदशायोगे जेवा जेवा संयोगो पामी जेवा जेवा आध्यात्मिक विचारो उद्भवता हता. ते काव्यरूपे गोठववामां आव्या छे. अमदावादथी मातर अने मातरथी कावीठा अने कावीठाथी बोरसद थइ पादरा जवानुं थयुं. पादरामां

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां मास कल्प करतां. प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेभी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समक्ष होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां फंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां.त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी सांकिटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमत् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी खेडा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी

૭ ના રોજ પાછું અમદાવાદ આવવાનું થયું. આ વિહારના ગામોમાં નિરુપાધિ દશા વિશેષતઃ રહેતી હતી તે સમયે જે ઉદ્‌ગાર પ્રગટ્યા તેનો ભજન સંગ્રહ ચોથો ભાગ થયો છે.

કાવીઠા, બોરસદ, દમોઇ, વટોદરા, પાદરા, ખંભાત, નાર, સુણાવ, વસો, ખેડા વગેરે અન્ય ગામોમાં વિહારમાં જ આ ભાગ રચાયો છે તેથી સહજ સ્ફુરણાના જ વિશેષતઃ ઉદ્‌ગારો છે તે વાંચવામાં આવતાં આત્મભિમુખ ચેતના થાય છે.

શેઠાણી ગંગા બેન કે જે શેઠ દલપતભાઇ ભગુભાઇનાં પત્ની છે. જેનું નામ જૈનોમાં જાહેર છે. તેમના ભક્તિના આગ્રહથી અમદાવાદમાં ચોમાસું ગુરુ મહારાજની સાથે થયું.

શેઠાણી ગંગાબેન શેઠ લાલભાઇ દલપતભાઇની માતુશ્રી છે. શેઠાણીનું જન્મ ગામ વિજાપુર (વિદ્યાપુર) છે. શેઠ જનાદ્રા પીતાંબરની બેન થાય છે. તેમનાં પગલાંથી લક્ષ્મીની વૃદ્ધિ થવા લાગી. શેઠાણી ગંગાબેનની સાસુ હરકોર શેઠાણી હતાં. અને તે શ્રી નેમસાગરજી મહારાજનાં શ્રાવિકા હતાં, શેઠ દલપતભાઇનો પણ શ્રી નેમસાગરજી મહારાજ ઉપર પૂર્ણરાગ હતો. એક દીવસ શ્રી નેમસાગરજી નરોડાએ ગયા હતા ત્યાં હરકોર શેઠાણી દર્શન કરવા ગયાં હતાં. શેઠાણી ગુરુ મહારાજને વાંદી બોલ્યાં કે મહારાજજી અન્ય લક્ષાધિપતિયોની પેઠે મારાથી ગુરુ ભક્તિનાં મોટાં કાર્ય થતાં નથી, અહો મારું કેવું ભાગ્ય. આવું શેઠાણીનું ભક્તિનું વચન સાંભળી શ્રી નેમસાગરજી બોલ્યા કે શેઠાણી દીલગીર થશો નહિ, તમારા પુત્રથી તમારી ઇચ્છાઓ પૂર્ણ થશે, અને ધર્મના પ્રભાવે સારું થશે. અકસ્માત્ આ પ્રમાણે ગુરુની દૈવીવાણી નીકળવાથી શેઠ દલપતભાઇને વ્યાપારમાં શુભ કર્મયોગે લાભ થવા લાગ્યો, પ્રતિદિન લક્ષ્મી વૃદ્ધિ પામવા લાગી, નગર શેઠીયાના કુટુંબમાં શેઠ દલપ-

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां मास कल्प करतां. प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेसी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी सुंदरी स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समक्ष होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां फंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां.त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी सांकेटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमद् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्यां. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी खेडा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामोमां निरुपाधि दशा विशेषतः रहेती हती ते समये जे उद्गार प्रगटया तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, दभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेषतः उद्गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा बेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगाबेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी बेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगाबेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता त्यां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी बोल्यां के महाराजजी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थतां नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी बोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि, तमारा पुत्रथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनी दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइने व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो, प्रतिदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां माम कल्प करतां. प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेभी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समस्त होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां फंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां. त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी सांकेटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमत् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी सेढा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामो· मां निरुपाधि दशा विशेषतः रहेती हती ते समये जे उद्गार प्रगटया तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, डभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेषतः उद्गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा बेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगाबेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी बेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगाबेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता त्यां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी बोल्यां के महाराजजी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थतां नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी बोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि, तमारा पुत्रथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनी दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइने व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो, प्रतिदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां मास कल्प करतां. प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेभी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समक्ष होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां फंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां.त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी त्यांकेटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमत् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी संघात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी सेढा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामोमां निरुपाधि दशा विशेषतः रहेती हती ते समये जे उद्गार प्रगटया तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, डभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेषतः उद्गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा वेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगावेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी वेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगावेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता त्यां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी बोल्यां के महाराजजी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थतां नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी बोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि, तमारा पुत्रथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनी दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइने व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो, प्रतिदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां माम कल्प करतां. प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्या. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोइ जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेसी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समस्त होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां कंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां.त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी सांकिटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमद् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी खेडा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं, त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामोमां निरुपाधि दशा विशेषतः रहेती हती ते समये जे उद्गार प्रगटया तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, डभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेषतः उद्गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा बेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगाबेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी बेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगाबेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता त्यां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी बोल्यां के महाराजजी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थतां नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी बोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि, तमारा पुत्रथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनी दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइने व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो, प्रतिदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां मास कल्प करतो. प्रथम चोवीशी रचवामां आवी. चोवीशीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्या. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्या. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेभी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समस्त होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां फंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां.त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी त्यांकेटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमत् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी खेडा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामोमां निरुपाधि दशा विशेषतः रहेती हती ते समये जे उद्गार प्रगटया तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, डभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेषतः उद्गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा बेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगाबेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी बेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगाबेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता त्यां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी बोल्यां के महाराजनी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थतां नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी बोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि. तमारा पुत्रथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनी दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइने व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो, प्रतिदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

वकीलजी शा. मोहनलालभाई हीमचंदभाई प्रथम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां माम कल्प करतां. प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोई जवानुं थयुं. सं. १९३५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेसी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समक्ष होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां कंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां.त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रयें आवी त्यांकेटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमद् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी सेहा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामोमां निरुपाधि दशा विशेषतः रहेती हती ते समये जे उद्गार प्रगटया तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, डभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेषतः उद्गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा बेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगाबेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी बेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगाबेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता त्यां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी बोल्यां के महाराजजी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थता नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी बोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि. तमारा पुण्यथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनां दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइने व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो. दिनदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां मास कल्प करतां, प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेसी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समक्ष होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां फंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां.त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी सांकेटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमत् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी लेहा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामो· मां निरुपाधि दशा विशेषतः रहेती हती ते समये जे उद्‌गार प्रगटया तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, डभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेषतः उद्‌गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा बेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगाबेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी बेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगाबेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता त्यां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी वोल्यां के महाराजजी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थतां नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी वोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि, तमारा पुत्रथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनी दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइने व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो, प्रतिदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां मास कल्प करता. प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीशीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयजीनी देरी पासे बेसी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समक्ष होळी करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां कंदोवाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां. त्यांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी सांकेटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमद् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो. त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां. लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी खेडा आवी त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी

७ ना रोज पाछुं अमदावाद आववानुं थयुं. आ विहारना गामोमां निरुपाधि दशा विशेषत: रहेती हती ते समये जे उद्गार प्रगट्या तेनो भजन संग्रह चोथो भाग थयो छे.

कावीठा, बोरसद, डभोइ, वडोदरा, पादरा, खंभात, नार, सुणाव, वसो, खेडा वगेरे अन्य गामोमां विहारमां ज आ भाग रचायो छे तेथी सहज स्फुरणाना ज विशेषतः उद्गारो छे ते वांचवामां आवतां आत्मभिमुख चेतना थाय छे.

शेठाणी गंगा बेन के जे शेठ दलपतभाइ भगुभाइनां पत्नी छे. जेनुं नाम जैनोमां जाहेर छे. तेमना भक्तिना आग्रहथी अमदावादमां चोमासुं गुरु महाराजनी साथे थयुं.

शेठाणी गंगाबेन शेठ लालभाइ दलपतभाइनी मातुश्री छे. शेठाणीनुं जन्म गाम विजापुर (विद्यापुर) छे. शेठ जनाशा पीतांबरनी बेन थाय छे. तेमनां पगलांथी लक्ष्मीनी वृद्धि थवा लागी. शेठाणी गंगाबेननी सासु हरकोर शेठाणी हतां. अने ते श्री नेमसागरजी महाराजनां श्राविका हतां, शेठ दलपतभाइनो पण श्री नेमसागरजी महाराज उपर पूर्णराग हतो. एक दीवस श्री नेमसागरजी नरोडाए गया हता त्यां हरकोर शेठाणी दर्शन करवा गयां हतां. शेठाणी गुरु महाराजने वांदी बोल्यां के महाराजजी अन्य लक्षाधिपतियोनी पेठे माराथी गुरु भक्तिनां मोटां कार्य थतां नथी, अहो मारु केवुं भाग्य. आवुं शेठाणीनुं भक्तिनुं वचन सांभळी श्री नेमसागरजी बोल्या के शेठाणी दीलगीर थशो नहि, तमारा पुत्रथी तमारी इच्छाओ पूर्ण थशे, अने धर्मना प्रभावे सारु थशे. अकस्मात् आ प्रमाणे गुरुनी दैवीवाणी नीकळवाथी शेठ दलपतभाइने व्यापारमां शुभ कर्मयोगे लाभ थवा लाग्यो, प्रतिदिन लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी, नगर शेठीयाना कुटुंबमां शेठ दलप-

उपर भक्ति राग छे. रविसागरजी महाराजना संघाडामां अग्रगण्य श्राविका हाल ते वर्ते छे. शेठाणीए अनेक तीर्थेनी घणीवार यात्राओ करी छे. जंगम तीर्थ साधुओनी पण अनेक यात्राओ करी धर्म देशना सांभळी छे. शेठाणी साधु साध्वीओने पूर्ण भक्तिथी वहोरावीने खाय छे. तपश्चर्या करवामां उत्साही छे. देव गुरुनुं आराधन यथामति शक्तिथी सारी रीते करे छे. आवी उत्तम शेठाणीना आग्रहथी अमदावादमां सं. १९६५ नुं चोमासुं करी भव्य जीवोना हित माटे भजनसंग्रह चोथो भाग तैयार कर्यो छे. आध्यात्मिक भजनो अंतरनी स्फुरणा सहेजे उद्‌भववाथी बन्यां छे. अने नीति आदि पदो तेवी औपदेशिक स्फुरणा लावी बनाव्यां छे.

निष्काम भावनाथी आ प्रवृत्ति थई छे अन्य दर्शनवाळाओ पण आ भजनने वांची सन्मार्गमां प्रवर्ते छे. निश्चयनयनी प्राधान्यताए केटलाक आत्माना आध्यात्मिक उद्गार नीकळ्या छे. केटलाक व्यवहार नयना प्राधान्यताए उद्‌गार नीकळ्या छे. ज्यां त्यां नयो वडे सापेक्षबोध समजवो. राग वा कोई विषय न बेसे तो पंडितो पासेथी खुलासो मेळवी निःशंक थवुं. भजनसंग्रहचतुर्थभागमां श्री यशोविजयउपाध्यायकृतसीमंधरजिनस्तवन, तथा बे तेमनां स्तवन तथा परमेष्ठीगीता, तथा समुद्रवहाणसंवाद तथा ब्रह्मगीता, सिद्धाचल स्तवन तथा संवत.१३२७नी सालनो सात क्षत्रनो रास यथामति शुद्ध करी तथा फुटनोट करी छपाव्यो छे. खंभातना भंडारमांथी सात क्षेत्रनो रास शोधतां नीकळ्यो छे. आगळ उपर आ छपायलो रास तथा ते जूनो एम बे बराबर तपासी पूर्ण शुद्ध करी रास छपाववा विचार थशे गुर्जर भाषाना अभ्यासकोने आ रास अत्यंत उपयोगी थशे विशेष कंइ भूलचूक रही होय तो पंडित पुरुषो सुधारशो.

भव्य जीवोना हित माटे आ पुस्तक अमदावादना शा. मोहनलाल हीमचंदना पुत्रोए पोतानी माता जासुदना स्मरण माटे लक्ष्मीनो व्यय करी छपाव्युं छे तेथी तेमने तथा वांचकोने सदाकाल लाभ थशे. ज्ञान मार्गमां आवी तेमनी प्रवृत्ति देखी अन्य पण ज्ञानमां लक्ष्मीनो व्यय करशे. आवा पुस्तको छपाववा माटे तेमने धन्यवाद घटे छे. झवेरी चमनभाई मोहनलालना आग्रहथी ग्रंथ छपाव्यो छे. अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडलना सद्गृहस्थो तन मन धनथी आवा उत्तम ग्रंथो छपावी प्रसिद्ध करी परोपकार करे छे तेथी ते मंडलना गृहस्थोने धन्यवाद घटे छे

लेखक मुनिबुद्धिसागर—अमदावाद.



बे बोल.

मंडळे शरु करेल ग्रन्थमाळा पैकीनो आ सातमो ग्रन्थ छे. जे ग्रन्थमां मुनिवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजी महाराज रचित स्तवनो पदो उपरांत श्रीमद् यशोविजयजीनी कृतिनां पदो पण छे. हालमां पुस्तको घणी प्रकारनां घणी संस्थाओ तरफथी प्रगट थाय छे पण आ शैलीवाळा ग्रन्थो छेल्ला केटलाक सैकाओमां कोइक ज तरफथी लखाया हशे. आवा प्रकारना ग्रन्थनो आ चोथो भाग प्रगट थयो छे अने तेज उपरथी जोइ शकाशे के जनसमाजमां ते तरफ रुचि वृद्धि पामती जाय छे; केमके विविध विषयोथी भरपूर साथे बोधक, अने रसिक छे. जेम जेम आवा ग्रन्थोनुं वांचन, मनन, वधतुं जशे तेम तेम तत्त्व स्वरूपनो प्रकाश वृद्धि पामशे.

आवा ग्रन्थो प्रगट करवाने समाज. तरफथी मंडळने जुदा जुदा ग्रहस्थो तरफथी मदद मळे छे अने तेथी मंडळ पोताना कार्यमां आगळ वधे छे. मंडळ इच्छे के आ ग्रन्थमाळाना १०८ मणका.अनेक ग्रहस्थोनी सहायताथी सत्वर प्रगट थाओ.

आ ग्रन्थ अमदावादवाळा शा. मोहनलाल हेमचंद सुपुत्रो तरफनी संपूर्ण मदद करी प्रगट करवामां आव्यो छे जे माटे मंडळ तेओने तेओना द्रव्यनो आ रीते करेला सदुपयोग माटे धन्यवाद आपे छे.

अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ.

भजनपदसंग्रह चोथा भागनी अनुक्रमणिका.

विषय.	पत्र.



अथ श्री

योगनिष्ठ मुनिवर्य बुद्धिसागरमहाराज-कृत
स्तवनपद (भजन) संग्रह.

चतुर्थ भाग आरभ्यते.

ऋषभदेव स्तवनम्.

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए-ए राग.

ऋषभ जिनेश्वर वंदना, होशो वारंवार;
पुरुषोत्तम भगवान निराकार संत छो, गुणपर्याय आधार. ए टेक.
उत्पत्ति व्यय ध्रौव्यता, एक समयमां हि जोय;
पर्यायार्थिकनयथी व्यय उत्पत्ति छे, द्रव्यथकी ध्रुव होय. ऋ. १
तुम करतां सामर्थ्यना, होय पर्याय अनन्त;
अगुरु लघुनी शक्ति ते तेहमां जाणीए, अनन्त शक्ति सतंत ऋ. २
परमभाव ग्राहक प्रभु, तेम सामान्य विशेष;
ज्ञेय अनन्तनुं तोल करे प्रभु ताहरो, क्षायिक एक प्रदेश. ऋ. ३
स्थिरता क्षायिक भावथी, सुखथी कहीं नहि जाय;
अनन्त गुण निज कार्य करे लही शक्तिने, उत्पत्ति व्यय पाय. ऋ. ४
गुण अनन्तनी ध्रौव्यता, द्रव्यपणे छे अनादि;
गुणनी शुद्धि अपेक्षी पर्याये करी, भंगनी स्थिति छे सादि. ऋ. ५
सादि अनंति मुक्तिमां, सुख विलसो छो अनंत;
सुख ज्ञेयादिक ज्ञानमां ज्ञाता जगगुरु, ज्ञान अनंत वहंत. ऋ. ६
रागद्वेष युगल हणी, थइया जग महादेव;
बुद्धिसागर अवसर पामी भक्तिथी, पामे अमृतमेव. ऋ. ७

३

श्री संभवनाथ स्तवनम्.

देखो गति दैवनीरे-ए राग.

संभवजिन तारशोरे, तारशो त्रिभुवननाथ संभव जिन तारशोरे.

निमित्त पुष्टालंबनेरे, साध्यनी सिद्धि कराय;
उपादाननी शुद्धतारे, निमित्त विना नहि थाय. संभव. १

द्रव्य क्षेत्र काल भावथीरे, निमित्तना बहु भेद;
ज्ञान दर्शन चारित्रनारे, निमित्त टाळे खेद. संभव. २

शुद्धदेव गुरु हेतुछेरे, उपादान करे शुद्धि;
उपादान अभिन्नछेरे, कार्यथी जाणो बुद्ध. संभव. ३

कार्य द्रव्यथी भिन्नछेरे, निमित्त हेतु व्यवहार;
शुद्धादिक षट भेदछेरे, व्यवहार नयना धार. संभव. ४

भिन्न निमित्त पण कार्यमारे, उपादान करे पुष्टि;
निमित्त पण उपादानथीरे, थाय न साध्यनी सृष्टि.संभव. ५

पुष्टालंबन जिनविभुरे, आदर्यो मन धरी भाव,
उपादाननी शुद्धिमां रे, बनशे शुद्ध बनाव. संभव. ६

त्रिकरण योगथी आदर्यो रे, मन धरी साध्यनी दृष्टि;
बुद्धिसागर सुख लहेरे, पामी अनुभव सृष्टि. संभव. ७



अभिनंदन स्तवनम्.

पद्म प्रभु तुज मुज आंतरु-ए राग.

अभिनन्दन जिनरूपने, ध्यानमां स्मरणथी ध्यावुं रे;
ध्यानमां लीनता योगथी, सुख अनन्त घट पावुं रे. अभि १

मन वच कायना योगनी, स्थिरता जेह प्रमाणरे;
तदनुगत वीर्यता उल्लसे, भाव क्षयोपशम सुख खाणरे. अभि. २

असंख्यप्रदेशमयी व्यक्तिमां, ध्यानथी ऐकयता थायरे;
पंडित वीर्य त्यां संपजे, उज्ज्वल अध्यवसायरे. अभि. ३

क्षण क्षण उज्ज्वल ध्यानमां, प्रगटतो सहज आनन्दरे;
बाह्य जड विषयना सुखनो, वेगथी नासतो फन्दरे. अभि. ४

अन्तरशुद्धपरिणति थकी, भावथी होय निज मुक्तिरे;
शुद्ध नय स्थापना सहजथी, प्रगटती ए तत्त्वनी युक्तिरे० अभि. ५

क्षयोपशम ज्ञान वीर्यथी, क्षायिक धर्म ग्रहायरे;
निर्विकल्प उपयोगमां, श्रुतज्ञान एक स्थिर थायरे. अभि. ६

भावश्रुतज्ञान आलंबने, जीव ते जिनरूप थायरे,
बुद्धिसागर शिव संपदा, मंगलश्रेणि पमायरे; अभिनंदन. ७

सुमतिनाथ स्तवनम्.

विरति ए सुमति धरो आदरो, ए राग.

सुमति जिनेश्वर सद्गुणा, पुद्गला परम स्वभावरे
अस्तिता नास्तिता एकता, ज्ञातृता नहि परभावरे. सुमति १
भिन्न अभिन्नता नित्यता, तेम अनित्य पर्यायरे;
एकसमयमांहि संयमे, पर्याय उपजे विलायरे. सुमति. २
अगुरु लघु पर्यायनी, शक्ति अनन्ति सदायरे;
परिणमे असंख्य प्रदेशमां. कारक षट् उपजायरे. सुमति ३
आदि अनादि षट्कारको, व्यक्तिपणे एकेक प्रदेशरे,
अनादि अनन्त स्थिति शक्तिथी, कारक षट् रहो वेशरे. सुमति. ४.
एक अनेकता वस्तुमां, नित्य अनित्यता धाररे;
समय सापेक्ष विचारतां, होय अनेकान्त विस्ताररे. सुमति. ५
सदसत् कथ्य अकथ्य छे, जिनवर धर्म अनन्तरे;
ज्ञानमां ज्ञेयनी भासना, जाणे एक समय भदन्तरे. सुमति. ६
सम्यग् ज्ञान प्रभावथी, प्रभु तुज रूप जणायरे;
नयप्रमाणने भंगीथी, धर्म अनेक परखायरे. सुमति. ७
मन वच काय अतीत तुं, आदर्यो योगथी साररे;
तुजमुज ऐक्यता संयमे, बुद्धिसागर निर्धाररे. सुमति. ८

पद्मप्रभु स्तवन.

विरति ए सुमति धरी आदरो, ए राग.

पद्म प्रभु अलख निरञ्जन, सिद्धना आठ गुणधारीरे
साकार उपयोगे चेतना, निराकार उपकारीरे. पद्म. १

अजर अमर अगोचर विभु, नाम न रूप न जातिरे;
जगगुरू जय श्री चिंतामणि, त्रण भुवनमांहि ख्यातिरे. पद्म. २

उपमातीत परमातमा, अनुभव विण न जणायरे
दिवी देखाडी आगम रहे, अनुभवे प्रभु परखायरे. पद्म. ३

सद्गुरु तीर्थ उपासना, स्याद्वाद सूत्रनो बोधरे।
परंपर गुरुगम जोडतां, करे भवी जिनवर शोधरे. पद्म. ४

ज्ञानना ध्यानमां ध्यान छे, ध्यानथी होय समाधिरे;
परम प्रभु एक तानमां, मटतां जाय उपाधिरे. पद्म. ५

अनुभव अमृत स्वादतां, चित्त अन्यत्र न जायरे
चकोर जेम चंद्र तेम राचनुं, परम प्रभुरूप मांयरे. पद्म. ६

सुख अनंतनी राशिमां, जीवनमुक्तपद पायरे।
बाह्यना सुख रूचे नहि, निश्चय सुख निज मांयरे. पद्म. ७

परपरिणति रंग परिहरी, शुद्ध परिणतिमांहि रंगरे।
बुद्धिसागर जिनदर्शन, देखता प्रेम अभंगरे. पद्म. ८

सुपार्श्वनाथ स्तवनम्.

नदी यमुनाके तीर ए-राग.

सुपार्श्व प्रभु जिनराज कृपालु तारशो,
दीनतडी मुज प्रेम धरीने स्वीकारशो;
राग द्वेष अन्याय नृपति जोर टाळशो,
शुद्धरमणता सन्मुख दृष्टि वाळशो. १

विषय वासना पासथी प्रभुजी छोडावजो,
परम दयालु देव दया दील लावजो;
अनुभव अन्तरदृष्टिनी दृष्टि जगावजो,
परमानन्दनुं पात्र चेतन मुज थावजो. २

केवलज्ञाननी ज्योतिमां ज्ञेय अभिन्न छे,
परद्रव्यादिक ज्ञेय थकी वळी भिन्न छे;
ज्ञेयाकारे ज्ञान परिणमे जाणजो,
भिन्नाभिन्न स्वरूप अनेकांत आणजो. ३

ज्ञेयापेक्षे ज्ञान अनन्तुं जिन कहे,
ज्ञेयनी पासे ज्ञान गया वण सहु लहे;
दर्पण पर्याइ न जाय दर्पणमां समाय छे,
ज्ञेयाकारीभावो ए दृष्टांत न्याय छे. ४

दूरवर्ती जे ज्ञेय ज्ञानमांहि भासतो,
ज्ञान अचिन्त्यस्वभाव हृदयमां भावतो;

ज्ञेय विना सहु ज्ञाननी शून्यता जाणीए,
षट् द्रव्यो पर्याय अनन्त मन आणीए. ૫

अस्ति विना न निषेध घटे कोइ द्रव्यनो,
द्वि पण नहि अद्वैत निषेध केम सर्वनो;
द्वैतनुं ज्ञान थया पण अद्वैत शुं करो,
भासे ज्ञानमां द्वैत सत्यभाव सद्दहो. ૬

द्रव्य अने पर्यायथी ज्ञेय अनन्तता,
वस्तुधर्म स्याद्वाद स्यां एकानेकता;
ध्रुवता ज्ञेयना द्रव्यपणे नित्यता खरी,
उत्पत्ति व्यय ज्ञेय अनित्यता अनुसरी. ૭

जीवद्रव्य एक व्यक्ति अनादि अनंत छे,
गुण पर्यव आधार चेतनजी सन्त छे.
बुद्धिसागर जिनवर वाणी सद्दहे,
समकित श्रद्धायोगे अपेक्षा सहु लहे. ૮



चंद्रप्रभु स्तवनम्।

ए अब शोभा सारी हो मल्लिजिन. ए राग.

चंद्र प्रभु पद राचुं हो, चिद्घन, चंद्रप्रभु पद राचुं।
मन मान्युं ए साचुं हो चिद्घन, चंद्रप्रभु पद राचुं.
षट्‌ अखंड अनन्त गुण लक्ष्मी, तेना प्रभु तमे दरिया।
सघाए ज्ञानादिक लक्ष्मी, व्यक्तिपणे तमे वरिया हो. चि. १
अनाघनन्तने आदि अनन्त, सत्ता व्यक्ति सुहाया;
अस्तिनास्तिमय धर्म अनन्ता, समय समयमां पाया हो. चि. २
क्षपक श्रेणिए उज्ज्वल ध्याने, घातक कर्म खपाव्यां;
दग्ध रज्जुवत् कर्म अघाति, तेरमे चउदमे नसाव्यां हो. चि. ३
केवल ज्ञाने ज्ञेय अनन्ता, समय समय प्रभु जाणो;
अव्याबाध अनन्तु वीर्य, समय समय प्रभु माणो हो चि. ४
ऋद्धि तमारी तेवीज मारी, कदीय न तुमथी न्यारी;
चंद्र प्रभु आदर्श निहाळी, आत्मिक ऋद्धि संभारी हो. चि. ५
निज स्वजाति सिद्ध निहाळी, अजवृन्दगत हरि चेत्यो;
निज स्वजातीय सिद्ध संभारी, जीव स्वपदमां वहेतो हो. चि. ६
अन्तर दृष्टि अनुभव योगे, जागी निजपद रहियो;
बुद्धिसागर परम महोदय, शाश्वत लक्ष्मी लहियो हो. चि. ७

१०

सुविधिनाथ स्तवन.

नदी यमुनाके तीर-ए राग.

सुविधि जिनेश्वर देव दया दीनपर करो,
करुणावंत महंत विनति ए दील धरोः
भवसागरनी पार उतारो कर ग्रही,
शक्ति अनन्तना स्वामी कहावोछो सही. १

तमनो शो छे भार करो रवि आगळे,
कीडीनो शो भार के कुंजरने गळे;
कर्मतणो शो भार प्रभुनी तुम छते,
सिंहतणो शो भार अष्टापद त्यां जते २

शुं पयोतनुं तेज रवि ज्यां झळहळे,
तेम शुं मोहनुं जोर के उपयोग नीकळे;
ममत्वानुं शुं जोर सिंह आगळ अहो,
अनेकांत ज्यां ज्योति एकांतनुं शुं कहो ३

परम प्रभु वीतराग राग त्यां शुं करे,
देखी इन्द्रनी शक्ति के सुरसहु करगरे;
प्राणजीवन वीतराग हृदयमां मुज वस्या,
ते देखी मोह योधके सहु दूरे खस्या. ४

गुण पर्यायाधार स्मरण रहाउं सरु,
ध्यान समाधि योगे अलख निज पद वरुं;
परम ब्रह्म जगदीश्वर जय जिनराजजी,
शरणे आव्यो सेवक राखो लाजजी. ५

वार वार श्री वीनति जाणो सहु कहुं,
वार झगाडो न लेश दुःख में बहु सहुं;
बुद्धिसागर सत्य भक्तिथी उद्धारजो,
वन्दन वार हजार विनति ए स्वीकारजो. ६

श्री शीतलनाथ स्तवनम्.

प्रीतलडी बंधाणीरे शीतल जिणंदशुं,
प्रभु विना क्षण मात्र नहि सोहायजो;
प्रेमी विना नहि बीजो ते जाणी शके,
रूप प्रभुनुं देखी मन हरखायजो. प्रीतलडी. १

अन्तरना उपयोगे प्रभुजी दिल वश्या,
भक्ति आधीन प्रभुनी प्राण सनाथजो;
अनुभवयोगे रंज मजीठनो लागीयो,
त्रणभुवनना स्वामी आव्या हाथजो. प्रीतलडी. २

जेम प्रभुना दर्शनमां स्थिरता थती,
तेम प्रभुजी आनन्द आपे बेशजो;
आनन्द दाता भोक्तानी थइ ऐक्यता,
चढी खुमारी यादी आवे हमेशजो. प्रीतलडी. ३

आत्माऽसंख्य प्रदेशे शीतलता खरी,
अवधूत योगी प्रगटावे सुख कंदजो;

औदयिक भाव निवारी उपशम आदिथी;
टाळे सघळा मोहतणा महाफंदजो. शीतलडी. ४

गुणस्थानक निःसरणि चडतो आतमा,
उज्ज्वल योगे पामे शिवपुर म्हेलजो;
क्षायिक भावे सुख अनंतु भोगवे,
निजपद ध्रुवता धारी करतो रहेलजो. शीतलडी. ५

बाह्य भावनी सर्व उपाधि नासतां,
प्रभु विरहनो नाश थशे निर्धारजो;
अनुभव योगे रंगायो जिनरूपमां,
थाशुं प्रभु सम अन्ते जयकारजो. शीतलडी. ६

निजगुण स्थिरतामां रंगाशुं सहजथी,
वस्तु धर्म ज्ञानादिक तुं आधारजो;
बुद्धिसागर अनुभव वाजां वागीयां,
भेट्या शीतल जिनवर जग जयकारजो. शीतलडी. ७



१३
श्रेयांसनाथ स्तवन.

श्री वीर प्रभु परम प राग.

श्रेयांस प्रभु अन्तर्यामी, सात्विक नवलब्धि धणी।
ज्ञाता ज्ञाता परोपकारी, निर्भय योगी दिनमणि.
प्रभु शुद्धस्वरूप म्हारु जेवुं, प्रभु शुद्ध स्वरूप म्हारु तेवुं।
उज्ज्वल ध्याने खेंची लेवुं, श्रेयांस. १

प्रभु नाम रूपथी भिन्न खरो, प्रभु अनन्त सुखनो भव्य हरो;
में स्थिर उपयोग दील धर्यो, श्रेयांस. २

उत्पत्ति व्यय ध्रुवता भोगी, योगातीतपण निर्मल योगी;
कर्मातीतथी तुं नीरोगी, श्रेयांस. ३

ध्याने प्रभुनी पासे जावुं, साधनथी साध्यपणुं पावुं;
ज्ञानादर्शे प्रभु घटलावुं, श्रेयांस. ४

प्रभु दर्शन देजो शिव रसिया, प्रभु प्रेमे म्हारा दिल वसिया;
स्थिर उपयोगे जिन उल्लसिया, श्रेयांस. ५

प्रभु परममहोदय पद आपो, प्रभु जिन पदमां मुजने थापो;
फर्यां कर्म अनादि सहु कापो, श्रेयांस. ६

प्रभु उपादान योगे आवो, भक्तिथी निज गुण विरचावो;
बुद्धिसागर मळीयो ल्हावो, श्रेयांस. ७

१२

वासुपूज्य स्तवनम्.

गिरुआरे गुण तुम तणा. ए राग.

वासुपूज्य त्रिभुवन धणी, परमानन्द विलासीरे;
अकळकळा निर्भय प्रभु, ध्याने नासे उदासीरे. वासुपूज्य. १
जगजीवन जगनाथ छो, परमब्रह्म महादेवारे;
व्यापक ज्ञानथी विष्णु छो, सुरपति करे पद सेवारे. वासुपूज्य. २
आदि अनन्त तुं व्यक्तिथी, एवंभूतथी योगीरे;
अनाद्यनन्त सत्तापणे, गुणपर्यवनो भोगीरे. वासुपूज्य. ३
व्याप्य व्यापकता अभेदता, ज्ञाताज्ञेय अभेदीरे;
भिन्नाभिन्न स्वभाव छे, वेदरहित पण वेदीरे. वासुपूज्य. ४
परम महोदय चिन्मणि, अजरामर अविनाशीरे;
नित्य निरञ्जन सुखमयी, व्यक्तिशुद्ध प्रकाशीरे. वासुपूज्य. ५
निराहार अशर विभु, जग बंधव जग त्रातारे;
क्षायिक नवलब्धि धणी, ज्ञेय अनन्तना ज्ञातारे. वासुपूज्य. ६
पुरुषोत्तम पुराण तुं, तुज ध्याने सुख लहीशुंरे;
बुद्धिसागर शुद्धता, पामी जिनपद रहीशुंरे. वासुपूज्य. ७

१५
विमलनाथ स्तवनम्.

ज्यां लगे आतम तत्त्वनुं-ए राग.

विमल जिन चरणनी सेवना, शुद्ध भावे करशुं;
अन्तर ज्योति झळहळे, शिव स्थानक ठरशुं विमल. १
पुद्गल भावना खेलथी, चित्त वृत्ति हठावुं;
परमानन्दनी मोजमां, निर्मळ पद पावुं. विमल. २
अन्तर रमणता आदरी, ध्रुवता निजवरशुं;
मनमोहन जग नाथना, उपयोगथी तरशुं. विमल. ३
असंख्यप्रदेशी आतमा, नित्यानित्य विलासी;
स्याद्वादसत्तामयी सदा, जोतां टळती उदासी. विमल. ४
पुद्गल ममता त्यागीने, अन्तरमां रहीशुं;
अनुभवअमृत स्वादथी, अक्षय सुख लहीशुं. विमल. ५
काया वाणी मनथकी, विमलेश्वर न्यारो;
शुद्ध परिणति भक्तिथी, भेंटीशुं प्रभु प्यारो. विमल ६
स्थिर उपयोग प्रभावथी, एकघातथी मळशुं;
बुद्धिसागर भक्तिथी, ज्योति ज्योतमां भळशुं. विमळ. ७

अनंतनाथ स्तवन.

शांति जिन एक मुज ए राग.

अनन्त जिनेश्वर नायने, वन्दतां पाप पलायरे;
रवि आगळ तम शुं रहे, प्रभु भजे मोह विलायरे अनन्त. १

अनन्त गुणपर्यायपात्र तुं, व्यक्ति एवंभूत साररे;
संग्रह नय परिपूर्णता, ध्याता ते व्यक्तिथी धाररे. अनन्त. २

उपशमभाव क्षयोपशमथी, साध्यनी सिद्धि करायरे;
धर्म निज वस्तु स्वभावमां, स्थिर उपयोग सुहायरे. अनन्त. ३

ज्ञानदर्शन चरणगुण विना, व्यवहार कूळ आचाररे;
साध्यलक्ष्ये शुद्ध चेतना, जाणवो शुद्ध व्यवहाररे. अनन्त. ४

द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी, पर्याय द्रव्य अनन्तरे;
शुद्ध आलंबन आदरी, व्यक्तिथी थाय महंतरे. अनन्त. ५

स्वकीय द्रव्यादिक भावथी, अनंतता अस्तिपणे साररे;
पर द्रव्यादिक अस्तिनी. नास्तिता अनन्त विचाररे अन. ६

वीर्य अनन्त सामर्थ्यथी, उत्पाद व्यय प्रति द्रव्यरे;
छति पर्यायथी ध्रुवता, समय समयमांहि भव्यरे. अनन्त. ७

धर्म अनन्तनो स्वामी तुं, ध्यानमां ध्येय स्वरूपरे;
बुद्धिसागर निज द्रव्यनी, शुद्धि ते जय जिन भूपरे अनन्त. ८

धर्मनाथ स्तवनम्.

धर्म जिनेश्वर गाउं रंगश्युं-ए राग.

धर्म जिनेश्वर वंदु भावथी, वस्तु धर्म दातार जगत्मां।
वस्तु स्वभाव ते धर्म जणावता, षड् द्रव्योमांहि सार. जगत्मां. १
ज्ञेय हेय आदेय जणावता, सकल द्रव्यछेरे ज्ञेय; जगत्मां
उपादेय चेतननो धर्म छे, पुद्गल आदिरे हेय. जगत्मां. २
भावकर्म ते रागने द्वेष छे, काल अनादिथी जाण, जगत्मां.
द्रव्यकर्मनुं कारण तेह छे, नोकर्म निमित्त आण, जगत्मां. ३
अशुद्धपरिणति योगे बंध छे, शुद्ध परिणतिथी छे मुक्ति, जगत्मां;
अन्तरचेतनसन्मुख योगथी, शुद्ध उपयोगनी युक्ति, जगत्मां ४
कर्त्ता हर्ता चेतन कर्मनो, बाहिर अन्तर योग, जगत्मां
आत्मस्वभावे रमणता आदरे, प्रगटे शिव सुख भोग, जगत्मां ५
सुख अनन्तनी लीला ध्यानमां, चेतन अनुभव पाय, जगत्मां;
उपयोगतणी स्थिरता होवे, वीर्य अनन्त प्रगटाय, जगत्मां. ६
सविकल्पसमाधि शुभउपयोगमां, ध्याता ध्येयनो भेद, जगत्मां;
शुद्धउपयोगे शुद्ध समाधिमां, टळतो विकल्पनो खेद, जगत्मां. ७
अन्तरमां उतरीने पारखो, निर्मल सुखनोरे नाथ, जगत्मां;
बुद्धिसागर समता एकता, लीनता योगे सनाथ, जगत्मां ८

शान्तिनाथ स्तवनम्.

साहिब सांभळोरे संभव. ए राग.

शान्तिनाथजीरे, शान्ति साची आपो;
उपाधि हरीरे, निज पदमां निज थापो. शान्ति. १
शान्ति केम लहुंरे, तेनो मार्ग बतावो;
विनति माहरीरे, स्वामी दीलमां लावो. शान्ति. २
शान्ति प्रभु कहेरे, धन्य तुं जगमां प्राणी;
शान्ति पामवारे, मनमां उलट आणी. शान्ति. ३
जड ते जडपणेरे, चेतन ज्ञान स्वभावे;
भेदज्ञानना योगथीरे, समकित श्रद्धा पावे. शान्ति. ४
सद्गुरु परंपरारे, आगमना आधारे;
उपशम भावथीरे, शान्ति पदमां धारे. शान्ति. ५
साधु संगतेरे, पामी ज्ञाननी शक्ति;
समता योगथीरे, प्रगटे शान्ति व्यक्ति. शान्ति. ६
चेतन द्रव्यनुंरे, करवुं ध्यान ज भावे;
चंचलता हरे रे. साची शान्ति आवे. शान्ति. ७
सत्य समाधिमारे, शान्ति सिद्धि बतावे;
रसीया योगियोरे, शान्ति साची पावे. शान्ति ८
सिद्ध समा थईरे, शान्ति रूप सुहावे;
स्थिर उपयोगथीरे, बुद्धिसागर पावे. शान्ति. ९

कुंथुनाथ स्तवनम्

सांभळजो मुनि–ए राग.

ंथु जिनेश्वर जगजयकारी, चोत्रीस अतिशय धारीरे;
ांत्रीस वाणी गुणथी शोभे, समवसरण सुखकारीरे. कुंथु. १
स्तुधर्म स्याद्वाद प्ररूपे, केवलज्ञानथी जाणीरे;
र्म ग्रही पाळी शिव लेवे, जगमांहि बहु प्राणीरे. कुंथु. २
ाप्त भंगीने सात नयोथी, षट् द्रव्योने जणावेरे;
पादेय चेतनना धर्मो, बोधी शिव परखावेरे. कुंथु. ३
ध्युं आत्म स्वरूप बतावी, मिथ्या भर्म हठावेरे;
ास्तिनास्तिमयधर्म अनन्ता, द्रव्य द्रव्यमां भावेरे. कुंथु. ४
ार निक्षेपे चार प्रमाणे, वस्तु स्वरूपने दाखेरे;
व्य क्षेत्रने काल भावथी, वस्तु स्वरूपने भाखेरे. कुंथु. ५
ानन्दकारी जगहितकारी, गुणपर्यायाधारीरे;
त्पत्ति व्यय ध्रुवतामयी प्रभु, शाश्वत पद सुखकारीरे, कुंथु. ६
ान स्वरूप थइ जिनवर सेवी, लहीए अनुभव मेवारे;
ुद्धिसागर ज्ञान दिवाकर, सहज योग पद सेवारे. कुंथु. ७

मल्लिनाथ स्तवनम्.

स्वामी सीमंधर वीनति. ए राग.

मल्लिजिन सहज स्वरुपनुं, वर्णन कहो केम थायरे;
वैखरी वर्णन शुं करे, कंई परामांहि परखायरे. मल्लि. १
परमब्रह्म पुरुषोत्तम, अनंगी अनाशी सदायरे;
विमल परम वीतरागता, अखय अनल महारायरे. मल्लि. २
निर्भय देशना वाणीजे, अजर अमर गुणखाणरे;
सहज स्वतंत्र आनन्दमां, भोगवो शिव निर्वाणरे. मल्लि. ३
चेतन असंख्यप्रदेशमां, वीर्य अनंत प्रदेशरे;
छति शुद्धसामर्थ्य भावथी, वापरो समये निःक्लेशरे. मल्लि. ४
त्रिभुवन मुगुट शिरोमणि, परम महोदय धर्मरे;
जगगुरु परमबंधु विभु, सादि अनन्त सुशर्मरे. मल्लि. ५
अलख अगोचर दिनमणि, अविचल पुरुषपुराणरे।
सत्य एक देव तुं जगधणी, धारु हुं शिर तुम आणरे. मल्लि. ६
मल्लिजिन शुद्ध आलंबने, सेवक जिनपणुं पायरे;
बुद्धिसागर रस रंगमां, भेटिया चिद्घनरायरे. मल्लि. ७



नमिनाथ स्तवनम्.

ए गुण वीर तणो न विसारु ए राग.

नमि जिनवर प्रभु चरणमां लागुं, शुद्ध रमणता मागुंरे;
बाह्य परिणति टेव निवारी, शुद्धोपयोगे जागुंरे. नमि. १

अन्तरदृष्टि अमृतवृष्टि, सहजानन्द स्वरुपरे;
तन्मयता प्रभु साथे करती, शुद्ध समाधि अनुपरे. नमि. २

असंख्यप्रदेशी चेतनक्षेत्र, गुण अनंत आधाररे;
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता समये, द्रव्यपणुं जयकाररे. नमि. ३

ज्ञानचरण पर्यायनी शुद्धि, मुक्ति प्रभु मुख भाखेरे;
अस्तिनास्तिनी सप्त भंगीथी, षड् द्रव्योने दाखेरे. नमि. ४

शब्दादिक नयशुद्ध परिणति, उत्तर उत्तर साररे;
कारणे कार्यपणुं नीपजावे, द्रव्यभावे निर्धाररे. नमि. ५

निमित्त पुष्टालंबन सेवी, उपादान गुण शुद्धिरे;
शुद्धरमणता योगे करतो, पामे क्षायिक ऋद्धिरे. नमि. ६

सुखसागर कल्लोले चढीयो, लही सामर्थ्य पर्यायरे;
शुद्ध परिणति चंद्र प्रकाशे, आनन्द क्यांय न मायरे. नमि. ७

शुद्ध परिणति चरण शरणमां, शुद्धोपयोगे रहीशुं रे;
बुद्धिसागर ज्ञान दिवाकर, स्वपरप्रकाशी थइशुं रे. नमि. ८



२५
पार्श्वनाथ स्तवनम्.

साहिब सांभळोरे संभव-ए राग.

पूर्णानन्दमांरे, पार्श्व प्रभु जयकारी;
ध्रुवता शुद्धतारे, शाश्वत सुख भंडारी. १

केवलज्ञानथीरे, लोकालोक प्रकाशो;
ध्याता ध्यानमां रे, साहिब निज घर वासो. २

सहजानन्दनारे, समये समये भोगी;
रत्नत्रयी प्रभुरे, क्षायिक गुणगण योगी. ३

व्यक्ति तुज समीरे, भक्ति तुज मुज करशे;
तुज आलंबनेरे, चेतन शिवपुर ठरशे. ४

साचा भावथीरे, जिनवर सेवा करशुं;
शुद्ध स्वभावमां रे, क्षायिक सद्गुण वरशुं. ५

झटपट त्यागीने रे, खटपट मननी काची;
मळशुं भावथी रे, अनुभव व्यक्ति ए साची. ६

इळीयो देवशुंरे, ते जन शिव सुख पावे;
साची भक्तिथी रे, आविर्भाव सुहावे. ७



२८
महावीर स्तवन.

साहिब सांभळोरे संभव अरज हमारी. ए राग.

श्री महावीर प्रभुरे, लळी लळी पाये लागुं।
श्री महावीरपणुरे, प्रभु तुज पासे मागुं. श्री. १

द्रव्यभाव बे भेदथीरे, निक्षेपे तेम जाणो;
सातनयोथकीरे, महावीर मनमां आणो. श्री. २

नवधा भक्तिथीरे, महावीर प्रभुथी हळशुं।
स्वजाति ध्यानथीरे, आविर्भावे मळशुं. श्री. ३

श्रुत उपयोगथीरे, प्रगटे वीर्य स्वभावे;
ध्रुवता योगनीरे, महावीर घटमां आवे. श्री. ४

घातीघातथीरे, टळतां मळतां शान्तिः
शुद्ध स्वभावमांरे, रमतां लेश न भ्रान्ति. श्री. ५

सप्ताए रहीरे, वीरना ध्याने प्रगटे;
शब्दादिकनयेरे, कर्म मलिनता विघटे श्री. ६

अनुभव योगमांरे, महावीर नयणे देखेः
मिथ्यामोहनेरे, आपस्वभावे उवेखे. श्री ७

शुद्ध स्वभावमांरे, महावीर प्रभु घर आवे;
वीर्य अनन्तनांरे, बुद्धिसागर पावे. श्री. ८

कलश.

गाइ गाइरे ए जिनवर चोवीशी गाइ.
अन्तर अनुभव योगे रचना, जिनआणाथी बनाइरे. ए जिनवर,
जिन भक्तिथी शक्ति प्रगटे, प्रगटे शुद्ध समाधि;
मिथ्या मोहक्षये समकित गुण, नासे चित्तनी आधिरे. ए जि. १
जिन गुणना उपयोगे निजगुण, प्रगटे अनुभव साचो;
तिरोभावनो आविर्भाव छे, प्रेमधरी त्यां राचोरे. ए जि. २
अनेकान्तनयज्ञान प्रतापे, पंचाचारनी शुद्धि;
उपशम क्षयोपशमने क्षायिक, भावे प्रगटे ऋद्धिरे. ए जि. ३
प्रभु गुण गावे भावना भावे, नागकेतु परे मुक्ति;
शुद्ध रमणता भाव पूजा छे, सालंबननी युक्तिरे. ए जि. ४
सालंबन योगी जिन ध्याने, निरालंबन थावे;
कारण कार्यपणुं त्यां जाणो, ज्ञानी हृदयमां भावेरे. ए जि. ५
जिन भक्ति निज शक्ति वधारे, शुभ उपयोगना दावे;
शुद्धोपयोगे सहेजे आवे, स्याद्वादी मन भावेरे ए जि. ६
गाम डभोइ यशोविजय गुरु, चरणनी यात्रा कीधी;
उपाध्यायनी देरीमां रचना, पूर्ण चोवीशीनी सिद्धिरे, ए जि. ७
उपाध्याय गुरु चरण पसाये, भक्ति रंग उर धारी;
भावपूजा जिनवरनी करतां, जयजय मंगलकारीरे. ए जि. ८
सम्वत ओगणिश पांसठ साले, फाल्गुन पूर्णिमा सारी;
रविवार दिन चढते पहोरे, पूर्ण रची जयकारीरे. ए जि. ९
लोढण पार्श्व जिनेश्वर प्रेमे, जे भणशे नरनारी;
बुद्धिसागर पग पग मंगल, पामे संघ निर्धारीरे. ए जि.१०

सीमंधर स्तवन.

(नदी यमुना के तीर उडे दोय पंखीया—ए राग.

सीमंधर जिनराज कृपालु तारजो,
जन्म जराना दुखथी प्रभुजी उगारजो;
विद्यमान प्रभु वात हृदयनी जाणता,
साचा स्वामी सुखकर वीनति मानता. १

काल अनादि मोहवशे बहु दुःख लह्यां,
चार गतिनां दुःख विचित्र सहु सह्यां;
मोहवशे धामधूममां धर्मपणुं ग्रह्यु;
शुद्धस्वरुपस्याद्वाद तत्त्व नहि सद्द्यु. २

गाडरीया प्रवाहमां दृष्टिरागे रह्यो.
लोकोत्तर जिनधर्म परखीने में नवी लह्यो;
बाह्यक्रिया रुचि धामधूममां हुं पड्यो,
गुरुगमज्ञान विना हुं भवोभव लडथड्यो. ३

प्रभुतुम शासन पुण्यथी पामी में जाणीयुं.
मिथ्यादर्शन जोर कुमतिनुं वामियुं;
परख्युं सत्य स्वरुप जिनेश्वर धर्मनुं.
रहेशे जोर हवे केम आठे कर्मनुं; ४

तुम करुणा एक शरण सेवकने जाणजो,
प्राणी बाळक म्हारी करुणा आणजो.
म्हारे शरणुं एक जिनेश्वर जगधणी,
तारो करुणावंत महेश्वर दिनमणि; ५

बुद्धिसागर बाळ तमारो करगरे.

साचा स्वामी सेवक शिवपद सुख वरे.
उपादाननी शुद्धि प्रभुता जागशे,
जित नगारु अनुभव ज्ञाने वागशे ६

आत्मभावरमणता.

साहिब सांभळोरे–ए राग.

धन्य ते क्षण घडीरे, समता भावे रहीशुं;
स्थिर उपयोगथीरे, शाश्वत आनन्द लहीशुं. धन्य. १
निश्चयने व्यवहारथीरे, संयम साचुं धरशुं;
उदासीन श्रेणीथीरे. मोक्ष नगर संचरशुं. धन्य. २
निःसंगी थईरे, ध्याइशुं चेतन देवा
द्रव्यगुणपर्यायनोरे, ज्ञाने निजगुण सेवा. धन्य. ३
रमा सारिखीरे, लागशे दुनियादारी;
अन्तर्दृष्टिथीरे, स्थिरता घटमां भारी धन्य. ४
मनने स्थिर करीरे, धरशुं नाभिज घटमां;
उपाधि परिहरीरे, पडशुं नहि खटपटमां. धन्य. ५
शातावेदनीरे. उदये हर्ष न धरशुं;
अशाता उपनेरे. मनमां शोक न करशुं. धन्य ६
विषयो विष समारे, अवधुत मस्ता थाशुं;
संवरभावथीरे, निर्भय देशे जाशुं. धन्य. ७
धर्मा पेढीनो, धर्म करक संचरशुं;

स्थिरउपयोगथीरे, जयलक्ष्मी झट वरशुं. धन्य. ८
ज्ञानी संगतेरे, अनुभव वातो करशुं;
प्रभुता आत्मनीरे, सहज दशामां वरशुं. धन्य. ९
ऋद्धि आत्मनीरे, तेमां क्षण क्षण राचुं;
चढताभावथीरे, बुद्धिसागर याचुं. धन्य. १०

सहज स्वरूपवन्दन.

जय सहज स्वरूपी, रूपारूपी, जगगुरु स्वामी, निर्नामी. १
जयजय सुखकारी जग बलिहारी, बहु उपकारी, जय स्वामी. २
हुं शरण ग्रहुंछुं पाय पडुंछुं, विनति करूंछुं, शिरनामी. ३
अभयपद चहुंछुं करगरी कहुंछुं, शरणे रहुंछुं, बहुनामी. ४
मने मार्ग बतावो, करुणा लावो, दिलमां आवो, विश्रामी. ५
विनती उर धारो, सेवक तारो, शरण तमारो, हे स्वामी. ६
आपो सुख शान्ति, टाळी भ्रान्ति, अर्पी कान्ति, गुणरामी. ७
जय सद्गुरु देवा, करूंछुं सेवा, मीठा मेवा, शिवगामी. ८

३१

शुद्धदृष्टि. दुहा.

शुद्धदृष्टि उपयोगमां, अनुभव सुख पमाय;
टळे विकल्पनी श्रेणियो, परम प्रभु परखाय. १

शुद्धसमाधि स्वरूपमां, निर्विकल्प उपयोग;
परमज्योति झळके भली, आनन्दअनुभव भोग २

अन्तर्दृष्टि शुद्धिथी, जीवन जग जयकार;
चिदानन्द मेळो मळे, नासे दुःख विकार. ३

चैतन्यसृष्टिव्यक्तिनी, लीला अपरंपार;
स्वयं देखतो जाणतो, अनुभव निश्चयधार. ४

विवेकदृष्टिजागृति, निद्रा नहीं लगार;
ज्ञानदृष्टिरविनी प्रभा, त्यां नहि तमः प्रचार. ५

जड चेतननी भिन्नता, इष्टानिष्ट न दृष्टि;
निर्मलज्ञाननी ज्योतिमां, समतामेघ सुवृष्टि. ६

प्रतिप्रदेशे प्रगटतुं, सुख अनन्त अपार;
भोगवतां निज सुखने, नासे मिथ्याचार. ७

विषयवृत्तिवेगो टळे, गुणस्थानक सोपान;
चढतां निर्मलता घणी, अनुक्रमे भगवान. ८

वैराग्ये मन निर्मलुं. ज्ञाने निज उपयोग;
वीर्ये स्थिरता संपजे. होवे शिवसुख भोग. ९

परम प्रभु ध्याने मल्या, आप्यो अनुभव वेश;
बुद्धिसागर भक्तिथी, महज्ञानंद हमेश. १०

डभोइ लोढणपार्श्वनाथ स्तवन.

सुमतिनाथ गुण शुं मलीजी–ए राग.

लोढण पार्श्व जिनेश्वर वंदु, भाव धरी सुखकारी;
धरणेन्द्र पद्मावती सेवे, पार्श्व यक्ष गुणकारी.
प्रभुजी म्हारा जगमां तुज बलिहारी. १

मन वचन कायाथी भक्ति, करतां मंगलकारी;
ऋद्धि सिद्धि तुष्टि पुष्टि, अनुभव सुख निर्धारी. प्रभुजी. २

हरिहर ब्रह्मा अलख निरंजन, वर्तो जग जयकारी;
पुरिसादानी पुरुषोत्तम तुं, जग जन आनंदकारी. प्रभुजी. ३

तुज सेवाथी शिव सुख मेवा, चिंतामणि हितकारी;
कामकुंभ श्री कल्पवृक्ष तुं, परमानंद पदधारी. प्रभुजी. ४

तुज सेवामां निशदिन रहीशुं, प्राणजीवन उर धारी;
बुद्धिसागर प्रेमे गावे, लेशो आ विनति स्वीकारी. प्रभुजी. ५

अथ पुद्गल छत्रीशी ॥ दुहा ॥

नित्यानित्यानेक एक, भिन्नाभिन्न स्वरूप;
तेने प्रणमो भविजना, लोकाग्रे चिद्रूप. १

आत्मस्वरूप विचारणा, आत्मध्यानमां लीन;
चेतन उपयोगी थइ, करे कर्मने छिन्न. २

धर्म धर्म जग सहु करे. करता पर उपदेश;
आत्मधर्म विचार वण. समजे नाहि ते लेश. ३

धर्म नाम सामान्यमां, मूर्खजनो भरमाय;
आपआपनी ताणमां, राग द्वेष नंहि जाय. ४
नदी प्रवाह काष्ट जेम, सरितामांहि तणाय;
मनप्रवाह मोहथी, भव्यजनो भटकाय. ५
अनेकमत जगमां अहो, भिन्न भिन्न कहे तत्त्व;
सत्यतत्त्व सापेक्ष पण, समजे नहि जग सत्त्व. ६
फेर फुंदडी खावतां, स्थावर फरतुं जणाय;
मिथ्याज्ञाने जीवने, ए उखाणो न्याय. ७
दुःषम पंचम काळमां, यथामति अनुसार;
एकांते उपदेश दे, मतिया जन निर्धार. ८
षट् दर्शनना चक्रमां, युक्ति वृन्द विस्तार;
काल अनादि अनंतथी, सामान्ये ते धार. ९
भेद तेहना बहु कथा, पुण्यवंत लहे पार;
शुद्ध धर्मने आदरी, तरशे आ संसार. १०
यावत् चेतन धर्मनो, मर्म न समजे लोक;
तावत् कष्ट क्रिया सहु, थाशे जाणो फोक. ११
रत्नत्रयिना स्वामी जे, तीर्थंकर भगवंत;
समवसरणमां बेसीने, दिये देशना संत. १२
देव मनुष्य तिर्यंचने, उपदेशे जिन धर्म;
जिनवर वाणी सुणतां, भागे मिथ्या भर्म. १३
कर्मरूप पुद्गलतणो, काल अनादि योग;
चतुर्गतिमां भटकतां, सुख दुःख धरे वियोग. १४
पुद्गल संगे राचियो, नाच्यो माच्यो छेक
निगोद दुःख शुं विसर्यु, भूल्यो सत्य विवेक. १५

बहिरात्मभावना त्यागीने, शुद्ध स्वरूप निहाळ;
परपुद्गलसंयोग सहु, जाणो माया जाळ. १६

आतम ते परमातमा, व्यापी रह्यो शरीर;
आपोआप विचारतां, चेते चेतन वीर. १७

रूपानो भ्रम सीपमां, देहे चेतन भ्रम;
मोहे मुंझी आतमा, बांधे छे बहु कर्म. १८

बाजीगर बाजी रचे, जूठी रचना जेम;
म्हारुं त्हारुं जूठ छे, चेतन मुंझे केम. १९

चतुर्गतिना चोकमां, वेचायो बहु वार;
त्हारुं मान थुं त्यां रयुं, चेतन चित्त विचार. २०

एकेन्द्रियमां तुं भम्यो, वनस्पति निर्धार;
लसुन आदुमां उपन्यो, मूळी मान विचार. २१

शंख कोडा जन्म लेइ, पाम्यो दुःख अपार;
जु मांकण अवतारमां, मान नहि मन धार. २२

वृश्चिक भ्रमरा तीड थइ, भटक्यो वारंवार;
आत्मतत्त्वश्रद्धा विना, थइ न शान्ति लगार. २३

जलचर खेचर भूचरे, भमियो वार अनेक;
दुःख अनंतां त्यां सह्यां, जाग जाग धरी टेक. २४

परमाधामी वश पड्यो, ज्यां नहि सुख लगार;
छेदन भेदन ताडना, क्षेत्र वेदना धार. २५

हाय हाय त्यां तें करी, रोतो रमे महार;
अधुना शुं तुं भूलियो, जैनधर्म निर्धार. २६

नरकमांहिथी नीकळ्युं, करु कर्मनो अन्त;
धर्म भावना क्यां गइ, चेत चेत गुणवन्त. २७

जैनधर्मथी संपजे, सकल शर्म निर्धार;
वारंवार नहि मळे, सामग्री सुखकार. २८
जन्म्यो त्यारे लेश न, साथे लाव्यो जाण;
कुटुंब लक्ष्मी कामिनी, दुःख उपाधि खाण. २९
रत्नद्वीपमां जाइने, रत्न न लेवे जेह;
मूढ तुल्य शुं तुं थयो, चेत चेत सुखगेह. ३०
चार दीवसनी छांयडी, चार ऋद्धिनी होय;
पामी तेनो मद करे, भूल्यो मूढ ते जोय. ३१
संगत तुजने जेहवी, तेवो तुं थइ जाय;
मृत्यु शिरपर गाजतुं, आयु नष्ट थाय. ३२
लाखवातनी वात एक, संक्षेपे सुण भव्य;
जैनधर्म आराधना, जगमां ए कर्तव्य. ३३
आत्मभावमां रमणता, सत्य शर्म दातार;
पुद्गल ममता परिहरी, चेतो चित्त मझार. ३४
शुद्धचेतना योगथी, होशे सुख अनन्त;
शुद्धचरणना योगथी, भाखे छे भगवन्त. ३५
श्वासोश्वासे जाय छे, अनंत मूल्य समान;
बुद्धिसागर ध्यानथी, प्रगट थशे भगवान. ३६
पुद्गल छत्रीशी कही, चेतनने हितकार,
गाम पादरा शोभता, शान्तिनाथ जयकार. ३७
वकील मोहनलालना, हेते कीधी सार;
आत्मभावमां जे रमे, ते पामे भवपार. ३८
ओगणिस अहावननी, फाल्गुन कृष्ण रसाल.
तुनिया तीथी वांचतां, थाशे मंगलमाल. ३९

श्री यशोविजय उपाध्यायगुणस्तवन. (गुंहली.)

अली साहेली. ए राग.

वाचकवरजी यशोविजयजी, मुनिवर वन्दन कीजीए;
धन्यधन्यपरे, उपाध्याय दर्शन करतां मन रीजीए. १
सम्यक्तसचरणत जयकारी, जिन शासनधैर्तावरधारी;
वाचक प्रगटया जग सुखकारी, वाचक १
वैरागी, त्यागी, सौभागी, अन्तरदृष्टि घटमां जागी;
जिनशासन शोभाना रागी, वाचक २
जंगम तीरथ ज्ञानी ध्यानी, परभावतणा नहि अभिमानी;
श्रुतज्ञाने वात न को छानी, वाचक ३
भाषा पुस्तक रचना सारी, संस्कृत भाषामां हुंशियारी;
शतग्रंथ रच्या ज्ञाने भारी, वाचक. ४
जिनसूत्र हार्द अनुभव जाणे, जे मन पोतानो नहिताणे;
जे वर्ते चढते गुणठाणे, वाचक. ५
जिनशासन जेणे अजवाळ्युं, श्रुतनीरथ जीर्ण थतुं वाळ्युं;
नास्तिक पन्थोनुं बी बाळ्युं. वाचक. ६
अनुभवअमृतरसना भोगी, जे सहजपणे अन्तरयोगी;
मिथ्यात्वभावथी नहि रोगी, वाचक. ७
महाधर्म प्रभावक जे शूरा, शाब्दिकतार्किक पंडित पूरा;
चर्चाज्ञाने जे भरपूरा, वाचक. ८
बहु देशोदेश विहार कर्या, उपदेशे जीव अनेक तर्या;
गुर्जर देशे जे बहु विचर्या वाचक. ९
स्वर्गगमन गाम डभोई थयुं, अविचल जेनुं जग नाम रह्युं;
जीवंतां शिव सुख दील लह्युं, वाचक. १०

फागण एकादशी अजवाळी, ओगणीस पांसठनी लटकाळी;
गाम डभोई आव्या गुणमाळी, वाचक. ११
श्रीवाचकपद वंदन कीधुं, अनुभवअमृत प्रेमे पीधुं;
बुद्धिसागर कारज सिध्धुं, वाचक. १२

श्री यशोविजयजी उपाध्याय गुंहली.

वेनी रविसागर गुरु वंदीए–ए राग.

प्रेमे यशोविजय गुरु वंदीए, जे पंचमहाव्रतधारीरे;
साल सत्तरशतमां जे थया, उपाध्याय पदवी जयकारीरे. प्रेमे. १
बारवर्ष काशीमां जे भण्या, वैयाकरण नैयायिक मोटारे;
तार्किक शिरोमणि पद लयुं, काढी नाखे मिथ्यात्वना गोटारे. २
देशोदेश विहार कर्या घणा, गुर्जर मालव हिंदुस्थानेरे;
मरुधरमांहि विचर्या घणा, टाळे परवादि अभिमानेरे. प्रेमे. ३
विजयप्रभसूरीश्वर राज्यमां, जिनशासन उन्नति कीधीरे;
अष्टोत्तरशत शुभ ग्रंथने, रची कीधी धर्म प्रसिद्धिरे. प्रेमे. ४
आनन्दघन मुनिवरने मळ्या, अष्टपदी त्यारे बनाइरे;
तेम आनन्दघनजीए रची, जुओ ज्ञानतणी अधिकाइरे. प्रेमे. ५
अध्यात्मस्वरूपमां झीलता, निश्चय व्यवहारमां पूरारे;
वैरागी त्यागीशिरोमणि, ज्ञान ध्यान समाधिमां शूरारे प्रेमे. ६
सत्तरशतीचम्मालीशमां, मौन एकादशी सुखकारीरे;
स्वर्गगमन डभोइमां कर्युं, एवा गुरुनी जाउं बलिहारीरे प्रेमे. ७

ओगणीस पांसठनी सालमां, एकादशी फागण अजुवाळीरे;
भेटी यशोविजय गुरु पादुका, मारा मनतो आज दीवाळीरे. प्रेमे. ८
एवा सद्गुरुना गुण गावतां, थाउं अनुभव अमृत भोगीरे;
बुद्धिसागर संयम श्रेणिपर, चढे समता समाधि योगीरे. प्रेमे. ९

उपाध्याय गुंहळी.

गजनी मांगी पाम जिनेश्वर–ए राग

गुरु म्हारा यशोविजय जयकारीरे,
गुरु म्हारा दर्शननी बलिहारीरे;
गुरु म्हारा प्रतिबोध्या नर नारीरे,
गुरु म्हारा जगमांहि उपकारीरे. १

गुरु म्हारा उपाध्याय पद धारीरे,
गुरु म्हारा जगमां यश अवतारीरे;
गुरु म्हारा अनुभव अमृत क्यारीरे,
गुरु म्हारा वाणी जग हितकारीरे. २

गुरु म्हारा ग्रंथ रच्या सुखकारीरे,
गुरु म्हारा धर्मनी देशना भारीरे;
गुरु म्हारा ध्यान समाधि प्यारीरे,
गुरु म्हारा चिद्घनानंद हरे भारीरे. ३

गुरु म्हारा वाणी दुःख हरनारीरे,
गुरु म्हारा निश्चय शुद्धव्यवहारीरे:

ગુરુ મ્હારા ત્યાગી દુનિયાદારીરે,
ગુરુ મ્હારા પરિણતિ ત્યાગી નઠારીરે. ૪
ગુરુ મ્હારા દર્શન દ્યો નિરધારીરે,
ગુરુ મ્હારા સહાય કરો અણધારીરે;
ગુરુ મ્હારા તુમ આણા શિર ધારીરે,
ગુરુ મ્હારા મળજો ભક્તિ વિચારીરે. ૫
ગુરુ મ્હારા ઉત્કૃષ્ટ અનગારીરે,
ગુરુ મ્હારા વંદે પાદ વિહારીરે;
ગુરુ મ્હારા અરજી મ્હેનો સ્વીકારીરે,
ગુરુ મ્હારા ભક્તિ એક સમારીરે. ૬
ગુરુ મ્હારા આપ્યા હર્ષોઈ વિશધારીરે,
ગુરુ મ્હારા દર્શાયા મંગળકારીરે;
ગુરુ મ્હારા બુદ્ધિસાગર અનગારીરે,
ગુરુ મ્હારા વંદન વાર હજારીરે. ૭



શ્રી યશોવિજય પાદુકા-દર્શન વંદન.

સાખી.

ધન્ય ધન્ય દીવસને ધન્ય ઘડી તે આજ,
[illegible]
[illegible]
[illegible] ૧

गुरु अष्टोत्तर शत ग्रंथ रच्या जयकारी,
तार्किक शिरोमणि पदवी जगमां धारी;
गुरु उपाध्याय पदवीना धारक प्यारा,
श्वेतांबर संघे प्रगट्या जयजयकारा. २
संवत सत्तर पिस्तालीस मागशिर मास,
उज्ज्वळ अगियारस गुरुनो स्वर्गे वास;
दर्भावती नगरी गुरुनी जग हितकारी,
बुद्धिसागर वन्दे छे वार हजारी. ३
गुरु मळीया प्रेमे बीनति उर स्वीकारी,
दीठा चक्षुथी करुणाना भंडारी;
गुरु भक्ति वशमां अनुभव थो निर्धारी.
क्षणक्षणमां वंदन होशो वार हजारी. ४
जय मंगलकारी मूर्ति तव मनोहारी,
देशो दर्शनने पुनः पुनः उपकारी;
जे प्रेम धरी आ गाशे नरने नारी,
बुद्धिसागर सुख पामे मंगलकारी. ५

श्री यशोविजयजी आवाहन मंत्र स्तवनम्.

द्वारकाना वासीरे अवसरीए व्हेला आवजोजी—ए राग.

मन मंदिरना वासीरे, सद्गुरुजी व्हेला आवशोजी;
आवो आवो भक्तिवशे भगवान्. मन.
वाचक पदना अधिकारीरे, यशोविजयजी आवशोरे;
नहि आवो तो थाशे सेवकना बेहाल. मन. १

कामने हठावीरे, स्थिरता शुद्ध आपजोजी;
टाळो टाळो मन चंचलताना वेग. मन. २

लोभने हठावीरे, संतोष गुण आपीनेजी;
आपो आपो सुख समाधि अपार. मन. ३

शान्ति तुष्टि दातारे, दृद्धि करो बुद्धिनीजी;
टाळो टाळो विषय वासनाना दोष. मन. ४

भक्तिना मेर्यारे, व्हेल्या प्रभु आवशोजी;
करो लीला ल्हेर गुरुजी अपार. मन. ५

साची भक्ति जाणीरे, वार न लगाडजोजी;
देशो दर्शन कृपा करी साक्षात्. मन. ६

बुद्धिसागर मेयरे, दीठा गुरु देवताजी;
फळी फळी मननी सघळीरे आश. मन. ७

उपाध्याय स्तवनम्.

घनघटा भुवन रंग छाया—ए राग.

नमुं यशोविजय गुरुराया, जिनशासन जय वर्तायाः
सत्तर पिस्तालीस आया, मौन एकादशी सुखदाया.
तमे स्वर्ग गमन सिधाव्या नमुं–जिन. १

वाचकनी पदवी पाया, संवेगी मुख्य कहाया;
शुभ तार्किक ग्रंथ रचाया. नमुं–जिन. २

चेतांबर संघ सुहाया, दर्भावती नगरी आया;
धन्य धन्य गुरु महाराया. नमुं-जिन. ३
कीर्तिकी त्रिभुवन छाया, करो दयाप गुरु मन भाया;
बुद्धिसागर गुण गाया. नमुं-जिन. ४

शुद्ध ब्रह्मज्ञान.

मन मोंघा मंगल केरी हरणीने-ए राग.

शुद्ध चिद्घनरूपने ध्याउं रे, शुद्ध चिद्घन रंगने ध्याउं रे; शुद्ध.
ध्यानने मार्गे मोहने हणवी, अनहद डोर साउं रे. शुद्ध. १
अन्तरमां अवधूत दशाथी, क्यांई न जाउं आउं रे; शुद्ध.
अनहद सुर बजावी ध्याने, मोहनुं जोर हठाउं रे. शुद्ध. २
अन्तरमां अन्तरंगी मेळी, परमानंदमय थाउं रे; शुद्ध.
श्वासोश्वासे अजपाजापे, चिदानंदघन गाउं रे. शुद्ध. ३
सुरता तारी कदु न छूटे, वपु घटे रमाउं रे; शुद्ध.
इडा पिंगला सुषुम्ना मांहि, ब्रह्मरन्ध्रमां जाउं रे. शुद्ध. ४
ध्यान समाधि शुद्ध समाधि, परब्रह्म पद पाउं रे. शुद्ध.
बुद्धिसागर सहज निरंजन, शान्ति अनंत समाउं रे. शुद्ध. ५

उपाध्यायजी स्तवनम्.

ए गुण वीरतणो न विसारुं-ए राग.

वंदु सद्गुरुना पदपंकज, यशोविजय जयकारीरे;
उपाध्यायजी ज्ञानी ध्यानी, भावदया उपकारीरे. वंदु. १
अष्टोत्तर शत ग्रंथ अधिक शुभ, संस्कृत रचना सारीरे;
जिन शासननी उन्नति कीधी, संविग्न पक्ष वधारीरे. वंदु. २
दर्शन ज्ञानचरणमां लीना, पंच महाव्रत धारीरे;
द्रव्य क्षेत्र काल भाव प्रमाणे, परम प्रभावनाकारीरे. वंदु. ३
निश्चयने व्यवहारमां पूरा, साधन साध्य विचारीरे;
ज्ञान क्रियाना साधक शूरा, प्रगटया महा अवतारीरे. वंदु ४
तुज वाणी अमृत गुण खाणी, अनेकान्त नयधारीरे;
तुज ग्रंथोना अभ्यासक जन, अनुभव ले निर्धारीरे. वंदु. ५
जिनशासनना धोरी कलियुग, गीतारथ अनगारीरे;
दीर्घदृष्टि जिनशासन रक्षक, ध्याने घट उजियारीरे. वंदु ६
प्राणजीवन मुज हृदयना स्वामी, जंगम तीर्थ सुधारीरे;
तुज विरहे मुज चेन पडे नहि, दर्शन द्यो सुखकारीरे. वंदु. ७
अनेकान्तनयज्ञान बतावी, सेवक श्रद्धा वधारीरे;
ए उपकार तमारो न भूलुं, भवोभव तुं हितकारीरे वंदु. ८
अष्ट सिद्धि रूद्धि शुभदायक, सेवाग्रही एक तारीरे;
बुद्धिसागर सहाय करो गुरु, वन्दु वार हजारीरे वंदु ९

उपाध्याय स्तवन.

सुमतिनाथ गुणशुं मलीजी. ए राग.

ज्ञान दाता दाता गुरुजी, वाचकवर जयकार;
यशोविजयजी भेटीयाजी, गाम डभोइ मझार.
मनमोहन स्वामी, धन्य धन्य तुम अवतार. १
चार अनुयोगे करीजी, देशना अमृतधार;
अन्तर अनुभव दाखवोजी, श्रुतवाणीनुं सार. मन० २
चउ निक्षेप प्रमाणथीजी, सातनयोथी विचार;
षड्द्रव्यो दर्शावताजी, गुणपर्यायाधार; मन० ३
उपादेय चेतन कहोजी, पुद्गल वस्तुथी भिन्न;
असंख्यप्रदेशी आतमाजी, ज्ञान आनन्द छे चिन्ह. मन ४
भूत चतुष्क ने नहिजी, ज्ञान आनन्द स्वभाव;
ज्ञानानन्द स्वभावथीजी, चेतन निजगुणदाव. मन. ५
अन्तर्दृष्टि शोधताजी, स्थिरतायोगे जणाय;
परम प्रभुता पामताजी, आनन्द चित्त न माय. मन. ६
अन्तर दुःखने बाहिर दुःखडां, योगारंभे थाय;
बाहिर दुःखने अन्तर सुखडां, स्थिरता योगे सुहाय.मन.७
अन्तर सुखनी श्रद्धा वगरनो, बाहिर सुख न त्यजाय;
यदि तजे पण ज्ञान विना जीव, पाछो निश्चे भटकाय.मन.८
अनुभव रंग मजीठ समो ज्यां, प्रगटो त्यां बहु सुख;
अन्तरनो रंगानो ज्ञाने, नासे अनादिनां दुःख. मन. ९
शुद्ध चेतना ध्यानथीजी, अनुभव अमृत स्वाद,
बुद्धिसागर योगथीजी, प्रगटे अनहद नाद मन. १०

अध्यात्म वचनामृत ग्रन्थ.

दुहा.

ऐन्द्रवृन्दनतवीर जिन, नमतां आत्मप्रकाश;
अध्यात्म सुखमां मग्नता, शाश्वत शिवपुरवास. १
आत्माने उद्देशीने, पंचाचार प्रधान;
शब्द अर्थ योगे सदा, लहीए आतमज्ञान. २
मैत्र्यादि वासित चित्त, निर्मल बाह्याचार;
अध्यात्म तत्त्व निर्मल कह्युं, रूढयर्थी जयकार ३
एवंभूतनये भलो, प्रथम अर्थ सुखकार;
यथायोग्य बीजो कह्यो; अर्थ ऋजु व्यवहार ४
विगतनय भ्रांति जना, स्वरूप सन्मुख चित्तः
स्याद्वाद दृष्टि दृश्य तत्त्व, आत्मपात्र गुणवित्त ५
युक्ति धेनुने अनुसरे, मनोवत्स धरी प्रेम.
तुच्छाग्रह मन वांदरूं, खेंचे पुच्छने तेम. ६
अनर्थ माटे युक्तियो, हठ कदाग्रह जोरः
बुद्धि अवळी परिणमे, हस्ति हणे मन तोर. ७
पामी हणे नहीं पामीने, करे विकल्पो मूढः
हस्ती हणे ए न्यायमां, ममनो सानुं गूढ. ८
हेतुवादथी जाणीए, अतीन्द्रिय सहु ज्ञेयः
काले निश्चय तत्त्वमां, हेय ज्ञेय आदेय ९
आगमवादे आप्तनी, करो परीक्षा सत्यः
परोक्ष वस्तु सद्दहो, चेतन आदि सुद्रव्य १०
प्रत्यक्ष केवलज्ञान पण, पछी रहित संदेहः
स्वानुभव सम ज्ञान ज्ञान, बुद्धि मनपर न्याय ११

आत्मतत्त्व उद्देशीने, करे क्रियाओ सर्व;
पण हुं तुं नहि पाळवां, टाळे सघळा गर्व. २४
हुं तुं वृत्ति वाळवां, वर्ते तो अज्ञान;
आत्मतत्त्वना ज्ञानथी, नासे मिथ्या भान. २५
प्रभु थकी देखाय जे, पौद्गलिक पर्याय;
जडना तेवां व्यापी छे, समजुने समजाय. २६
जड वस्तु चेतन नहि, जडथी चेतन भिन्न;
आत्मरूपने ध्यावतां, शुद्ध समाधि लीन. २७
जडमां सुख न होय छे, सुख नहि जडनो धर्म;
जडना मोहे मानिया, बांधे निशदिन कर्म. २८
क्षणिक जड वस्तु अहो, ते पर शानो राग;
ज्ञानदृष्टिथी देखतां, प्रगटे छे वैराग्य २९
भेदज्ञान प्रगटया थकी, प्रगटे अन्तरदृष्टि;
गुणपर्याय विचारणा, प्रगटे निजगुण सृष्टि. ३०
अन्तरदृष्टि धारणा, अन्तरदृष्टि ध्यान;
अन्तरदृष्टि समाधिमां, प्रगटे छे भगवान ३१
अन्तरदृष्टि योगथी, प्रगटे वीर्य अनंत;
चिदानन्दनी पूर्णता, परमब्रह्म भगवंत ३२
दोषदृष्टि जो अंत; तो तुं अन्तरयोग;
विरोधयोगी टाळतां प्रगटे साचो योग. ३३
हुं तेनो अपराध जे, करतां ते नहु योग;
जड थतो नहि आत्मता, धुंधे दुनिया योग- ३४
देहादिकमां वृत्तिने, धारे मोहिक वृत्त;
आत्म थके नहि आत्मनो, शुं थाते ते ज्ञान ३५

धामधूम पुद्गलतणी, तेमां माने धर्म;
बाह्यदृष्टिजन मूढता, बांधे उलटां कर्म. ३६
कर्मयोगथी भोगवे, पुद्गलना पर्याय;
अन्तरथी न्यारो रहे, ज्ञानी नहि लेपाय. ३७

ज्ञानी अने अज्ञानिनां, बाहिर् कृत्य समान;
भोजन आदि जाणीए, अन्तरथी असमान. ३८
खावे पीवे ज्ञानी पण, रहे अन्तरथी भिन्न;
पण अज्ञानी मोहथी, बाह्य भाव लयलीन. ३९

दयाक्षमा आचारथी, ज्ञानीजन व्यवहार;
जगमां साचो जाणीए, परोपकृति करनार. ४०
विवेकदृष्टि रत्नवण, अन्तर बाह्याचार;
अज्ञानिना फोक छे, सापेक्षाए धार. ४१

अहंभाव जडमां जगे, अन्तरमां अंधेर;
अहंभाव जडनो टळे, चिदानंदनी लहेर. ४२
पुद्गलना पर्यायने, चुंथ्याथी शुं सुख;
सुखबुद्धि भ्रांति थकी, अन्ते दुःखनुं दुःख. ४३
करो उपायो कोटिपण, जडमां सुख न लेश;
अहंभाव जडमां थतां, मोहादिकनो क्लेश. ४४
अहंभाव जडमां जगे, राग द्वेषनुं जोर;
अहंभावमां मग्नता, त्यां अंधारुं घोर. ४५
जे जे अंशे नासतो, अहंभाव त्यां धर्म;
समजु सत्य विचारीने, टाळे सघळां कर्म. ४६
जड वस्तुमांहि वरतो, जड वस्तुनो भोग;
अन्तरथी न्यारो रहे, थशे शुद्ध उपयोग. ४७

रागद्वेष परिणाम वण, कर्मनो होय न बंध;
विवेक दृष्टि देखतां, लागे पुद्गल धंध. ४८
अन्तरदृष्टि योगथी, रागद्वेष नहि होय;
हुं छुं शुद्ध स्वभावमां, नडे न कोने कोय. ४९
शुद्धरूपमां हुं सदा, परमां नहि तलभार;
अहंभाव जडमां ग्रही, भूल्यो हुं संसार. ५०
पण पुद्गल ते हुं नहि, जाण्युं निश्चय सर्व;
कर्त्ता भोक्ता भावनो, टळ्यो अनादि गर्व. ५१
हुं कर्त्ता भोक्ता खरो, शुद्ध गुणपर्याय;
परमां म्हारु कंइ नहि, निश्चय ए सुखदाय. ५२
अन्तरदृष्टि योगथी, चिदानंदनी मोज,
भोगवता ते जन अहो, जेणे कीधी खोज. ५३
खंडन मंडन शुं करुं, चिद्घन नहि खंडाय;
बाकी जे खंडाय ते, पुद्गलना पर्याय. ५४
आत्मधर्म जिन धर्म छे, बाकी जडना धर्म;
आत्मधर्म समज्या विना, होय न शाश्वत शर्म. ५५
आत्मधर्ममां जिनपणुं, बाकी जड जंजाळ;
जडमां धर्म नहि कदा, करशे ज्ञानी ख्याल. ५६
जड लक्ष्मीनी लालचे, मूर्खजनो ललचाय;
मायाना कीडा बनी, चतुर्गति भटकाय. ५७
चिदानन्द चेतन प्रभु, निर्भय नित्य महान्;
परमज्योति सुखमय सदा, इष्टदेव भगवान्. ५८
सत्ताए अरिहंत हुं, वसियो पिंडमझार;
सिद्धसूरि वाचक मुनि, परमेष्टि निर्धार. ५९
अतीन्द्रिय अक्षर शुं हि, निरक्षर गुणवान;

वचनागोचर तुं प्रभु, धरुं हुं मनमां ध्यान. ६०
ध्याता ध्येयाभिन्नतुं, कथंचिद् तुं भिन्न;
शुद्धस्वरूपाधारमां, अन्तरयोगे लीन. ६१
म्हारुं त्हारुं सहु मटयुं, टळया विषयना खेद;
स्थिरोपयोगे आत्ममां, निज धर्मोथी अभेद. ६२
शुद्ध रमणता आत्ममां, चिदानन्द भंडार;
बाह्य रमणता त्यां टळे, निश्चय मनमां धार. ६३
निश्चयनय निज रूपमां, जन्मजरानो नाश;
अनुभव अन्तर धारीए, छोडी भवनी आश. ६४
अनुभवामृत स्वादतो, धन्य सफल अवतार;
परम प्रभुता संपजे, निश्चय धर्म विचार. ६५
अनन्त धर्म छे आत्ममां, जडमां न रहे लेश;
धामधूममां धर्म नहि, बाह्य विषयमां क्लेश. ६६
बाह्य विषयनी मोजमां, माने धर्म गमार;
उपादान निजधर्म छे, चेतनमां जयकार. ६७
उपादाननी शुद्धिनी, परिपूर्णता सिद्ध;
स्याद्वादी मन जाणशे, प्रगट अक्षय ऋद्धि. ६८
जडनी ताणाताणमां, वादविवादे कर्म;
समजु समजे ज्ञानथी, साधे शाश्वत धर्म. ६९
स्याद्वाददृष्टि थकी, नासे वादविवाद;
अनुभवीने ध्यानमां, प्रगटे अनहदनाद. ७०
बहुल जनो व्यवहारमां, राचे माचे नित्य;
अल्पजनो मार्गु धरे, अनेकांतनयरीत. ७१
अनेकान्तनय पारखे, ते पामे परमार्थ;
द्रव्यानुयोगे करी, पामे शिवपुर सार्थ. ७२

आत्मद्रव्य आदेयछे, शुद्ध समय पण तेह;
अनन्तगुण पर्यायमय, आत्मद्रव्य सुखगेह. ७३
आत्म द्रव्यमां लीनता, सहजयोग निर्धार;
परमपन्थ जिनवर कह्यो, अन्तरंग सुखकार. ७४
अनन्त ज्योति झळहळे, भासे लोकालोक;
आत्मद्रव्य जाण्या विना, पामे जगजन शोक. ७५
आत्मद्रव्यना ज्ञानथी, आनन्द हर्ष अपार;
आत्म धर्म अन्तर रह्यो, जगमां जयजयकार. ७६
यम नियम आसन अने, प्राणायाम विचार;
प्रत्याहारने धारणा, ध्यान समाधि सार. ७७
योगाष्टकनी साधना, निर्मल आत्म प्रकाश;
जैनागम गुरुगम थकी, परम प्रभुता वास. ७८
षद्द्रव्योमां आत्मद्रव्य, स्वपर प्रकाशक जाण;
प्रति शरीरे भिन्न भिन्न, अनंत चेतन आण. ७९
केवलज्ञान प्रत्यक्षथी, लोकालोक जणाय;
देखे तेवुं जिन कहे, श्रद्धा मोक्षोपाय. ८०
जडनी शक्ति अनन्त पण, जडमां रही समाय;
चेतनशक्ति अनन्त पण, जडमां कदी न जाय. ८१
अनाद्यनन्ति भंगीथी, षद्द्रव्यो वर्ताय;
आत्मद्रव्य चिद्शक्तिथी, प्रगटपणे परखाय. ८२
दर्शन ज्ञानानन्दगुण, चेतन तेनुं पात्र;
सर्वतीर्थ शिरोमणि, चेतन द्रव्य सुपात्र. ८३
नवधा भक्ति आत्मनी, परकारकनी शुद्धिः
सम्यग् ज्ञान चारित्रथी, प्रगटे क्षायिक शुद्धि. ८४
क्षायिक शुद्ध स्वभावमां, परमेश्वर कहेवाय:

व्यापे ज्ञाने विष्णु ते, सापेक्षे सुखदाय. ८५
रागद्वेष मणाशथी, महादेव जयकार;
अनंत केवलज्ञानथी, ब्रह्मा जग मनोहार. ८६
क्षायिक भावे खेंचतो, अनंत गुण तेहेत;
कृष्णरूप पण आतमा, अभिधेय संकेत. ८७
कर्म हण्याथी जीवते, शिवरूप सोहाय;
आतम ते परमात्मा, व्यक्ति अनंत ग्रहाय. ८८
नाम रूपथी भिन्नछे, निश्चयथी निर्धार;
अहं ममत्व विनाशथी, सिद्ध बुद्ध जयकार. ८९
अन्तरदृष्टि देखतां, प्रगटे वीर्य अनंत;
क्षायिक शुद्ध स्वभावमां, सुख विलसे भगवंत. ९०
अनेकान्तनयदृष्टिथी, सम्यक् जीव जणाय;
जिनदर्शनमां आत्मना, भेदो सर्व समाय. ९१
सप्तनयोना ज्ञानथी, सापेक्षा समजाय;
सापेक्षाए सर्व धर्म, जिनदर्शनमां माय. ९२
अनेकान्तनयमां अहो, भेद न किंचित्मात्र;
अनेकान्तनय आत्मज्ञान, समजे सज्जन पात्र. ९३
नित्य अनित्य विभेदथी, वेद बौद्धनो वाद;
जिन दर्शनमां बे मळे, अनेकान्तनयवाद. ९४
कर्तृत्वेतरवाद पण, अनेकान्तनय मान्य;
सर्वधर्म ग्राहक अहो, जिनदर्शन प्राधान्य. ९५
मतना खेद टळे सहु, जो समजे नयवाद;
सापेक्षाए सर्व धर्म, माने नय स्याद्वाद. ९६
स्याद्वादनयदृष्टिथी, समता प्रगटे वेश;
समकित चरित्र योगथी, आनन्द होय हमेश. ९७

क्षायिक केवलज्ञानमां, भासे सर्व पदार्थ;
केवलज्ञानाधार जीव, परम प्रभु परमार्थ. ९८
चिदानन्द चेतन प्रभु, मळता सुरता प्रेम;
सुरता अन्तर लावीए, प्रगटे मंगल क्षेम. ९९
ध्यान धारणाध्यानमां, देखो चेतन देव;
शुद्ध समाधियोगमां, अनुभवामृतमेव १००
उपयोगी चेतन तरे, भवोदधिने खास;
चिद्घनअसंख्यप्रदेशनो, रोम रोम विश्वास. १०१
परमशुद्ध परमार्थ छे, आत्मतत्त्व आदेय;
सर्व द्रव्यनो ज्ञेय छे, पुद्गलकर्म छे हेय. १०२
आत्मरमणता धर्म छे, बाह्यरमणता कर्म;
आविर्भावे आत्ममां, प्रगटे शाश्वत शर्म. १०३
अन्तरथी न्यारा रही, करे बाह्यनां कर्म;
ज्ञानी सहजदशा धरी, पामे शाश्वत शर्म. १०४
जे जे अंशे जाय छे, कर्म उपाधि दूर;
ते ते अंशे जाणजो, चिदानन्द भरपूर. १०५
शब्दप्रपंचथी भिन्न छे, परब्रह्म अपकार;
परमब्रह्म अन्तर रह्युं, अन्तरदृष्टि धार. १०६
निश्चयने व्यवहारथी, ध्यावो अन्तर्देव;
अनन्त सुखनुं धाम छे, क्षण क्षण कीजे सेव. १०७
भावोभावे ध्याइए, रही ध्याने गुणस्थान;
पूर्णानन्दी प्रगटशे, सहजशुद्ध भगवान १०८
अहोनिशदिन दोरता, परिपूर्ण आ ग्रन्थ;
वांचे ध्यावे जे जनो, पावे निश्चय पन्थ १०९
संवत ओगणिस पांसठे, अश्विदश दिन खास;

चैत्र मासमां ए रच्यां, वडोदरामां खास. ११०
मंगलमाला आत्ममां, सकल सुख भरपूर;
बुद्धिसागर ध्यानमां, वाजे मंगल तूर. १११

ब्रह्मरन्ध्रमां सुरता प्रवेश.

श्री राग.

सुरता जावे गगनगढ जाउरे, मेरुदंड मूल पाउरे; सुरता.
सिद्धासनवाळी गुरुगमथी, प्राणायाम चित्त लाउरे; सुरता.
मुद्राबीजथी, भेदी चक्रो, त्रिवेणी चढी जाउरे. सुरता. १
उलटवाटथी ब्रह्मरन्ध्रमां, ज्योतिमां ज्योति मिलाउंरे. सुरता.
असंख्यप्रदेशीआत्मप्रभुनी, लीला अपार त्यां पाउंरे. सुरता. २
जिनागम गुरुगमना ज्ञाने, साचुं न भूली हुं जाउरे. सुरता.
आपस्वरूपे आप प्रकाशे, पोते पोताने हुं ध्याउरे; सुरता. ३
एकान्तमांहि प्रभु प्रगटता, भेटीने हरखीत थाउरे; सुरता.
षट्कारकनी शुद्धि थाती, अनुभवथी एहि जणाउंरे. सुरता. ४
आव्यो अनुभव रहे न छानो, भिन्नपणे परखाउरे; सुरता.
बुद्धिसागर साहिब मळीया, ज्ञाने तेना गुण गाउरे. सुरता. ५

५५

अजितात्म स्वरूप खुमारी.

श्री राग.

चिदानन्दस्वरूप छे म्हारुंरे, क्षण एक कदी न विसारुंरे. चि.
अनेक नाम पण नामथी न्यारो, तारे अने पोते छे तारुंरे. चि. १
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता धारी, शुद्धरूप न गुणथी न्यारुंरे; चि.
ब्रह्मा विष्णु खुदा स्वयंभु, नाम रूपथी भिन्न विचारुंरे. चि. २
हरिहर बुद्धने कृष्ण स्वरूपी, शुद्ध अर्थथी चित्तमां धारुंरे; चि.
काल अनादि कर्मनो भोक्ता, ज्ञान ध्याने हुं कर्म संहारुंरे. चि. ३
जात जात नहि अलख स्वरूपी, भेद ज्ञानथी समकित सारुंरे; चि.
जड मकाने जडथी न्यारो, मारुं शुद्ध स्वरूप छे प्यारुंरे चि. ४
ज्ञानगुणमां सुख अनंतुं, जाणे अजवाळुं म्हारुं म्हारुंरे; चि.
बुद्धिसागर भेटयो साहिब, तत्त्व शोधी लीधुं वधु सारुंरे चि. ५

अनुभवामृत खुमारी.

श्री राग.

पूर्ण परम स्वरूप सुहायोरे, मेंतो अनुभवानन्द पायोरे; पूर्ण
जाणुं न जाणुं लेवुं न देवुं, पूर्णब्रह्मस्वरूप कहायोरे पूर्ण. १
[illegible] मूर्ति [illegible], अनुभव [illegible] आयोरे पूर्ण.
[illegible] पूर्ण २
[illegible] पूर्ण
[illegible] पूर्ण ३

सम्यग् ज्ञाने खेद टळ्या सहु, शुद्ध चेतन रत्न प्रकाश्योरे. शुद्ध.
जिनागम गोपयने पीतां, हुंतो अजरामर दर्शायोरे. शुद्ध. ४
हुं तुंनो बहु खेद टळ्यो झट, क्षयोपशमज्ञानथी गायोरे. शुद्ध.
बुद्धिसागर उपशमभावे, रोम रोम आनन्दथी छायोरे. शुद्ध. ५

अधिकारी समजी शके.

श्री राग.

म्हारु गायुं जाणे अधिकारीरे, नहिंतो होय ताणंताण भारीरे; म्हारु.
आतमपोता सम्यग् ज्ञाने, जाणे तत्त्व विचारीरे. म्हारु. १

सापेक्षाए वस्तु विचारे. तेनी छे बलिहारीरे; म्हारु.
मतियाभोद वाडा बांध्या, एकांत पक्ष धारीरे. म्हारु. २
वाडामांहि बकरां रहेछे, सिंह न रहे शणगारीरे; म्हारु.
स्याद्वादनय जाणे त्यारे, हठ न रहे तलभारीरे. म्हारु. ३

अष्टम पलकमांहि ज्ञानिकारक, स्याद्वाद जयकारीरे; म्हारु.
आतम ते परमातम साचो, जोवो अन्तरदृष्टि उतारीरे. म्हारु. ४
मनमोहन ईश्वर अविनाशी, जीव ने शिव सुखकारीरे. म्हारु.
बुद्धिसागर नित्य निरंजन, अजरामर पद धारीरे. म्हारु. ५

आश्चर्यज्ञान.

श्री राग.

एक अचरिज मनमां आयुंरे, सिंह पाछळ ससलुं धायुंरे; एक.
साधुजन वेश्याथी रमतो, गावे राजा मजानुं गायुंरे. एक. १
उलटी नदीमां योगी झीले, अंधाथी रतन परखायुंरे; एक.
वहाणमांहि समुद्र समायो, सूर्य चोमेर वादळ छायुंरे. एक. २
गर्भमांहि तो बहु बहु बोले, जन्म्या पछी ते मौन रहेवायुंरे; एक.
अंधकजन अंधकने दोरे, धूळ ढगल्यामां रत्न ढंकायुंरे. एक. ३
गुरु करे चेलानी सेवा, इन्द्रजाळे जगत् भरमायुंरे; एक.
ज्यां त्यां वानर पूजा पामे, एक वाडथी नगर आ वसायुंरे. ४
स्वप्ने विणसे ध्रुव कहावे, ज्यां त्यां जोयुं त्यां पद तपायुंरे:एक.
बुद्धिसागर गाव्यो राया, जेणे राज्य त्रिभुवननुं पायुंरे. एक. ५

शुद्धभक्ति.

श्री राग.

पदपंकजना [illegible] [illegible], [illegible] भक्तिना भोजन [illegible]; शुद्ध
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. शुद्ध १
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible]. शुद्ध

स्वानुभव निश्चयः

श्री राग.

ज्ञान ध्यानमां जीवन गाळुंरे, शुद्ध होवे अन्तर अजवाळुंरे; ज्ञान.
उपाधि संयोगो आवे, समभावथी नहि कंटाळुंरे. ज्ञान. १
पुद्गलपनथी कदी न शान्ति, शुद्धऋद्धि अन्तरमां भाळुंरे; ज्ञान.
स्थिर उपयोगे रेहेवुं निशदिन, रागद्वेष उदयने टाळुंरे. ज्ञान. २
मनमोहन अलबेलो भेटुं. योग प्रमत्तने नित्य खाळुंरे; ज्ञान.
उपशम, आदि भावमां राचुं, परमातमतणुं बीज पाळुंरे. ज्ञान. ३
निन्दाविकथा इर्ष्या त्यागी. द्रव्यभाव दयाने पाळुंरे; ज्ञान.
समता सरोवरमांहि झीली, सत्य अनुभव सुरसमां म्हालुंरे. ज्ञान. ४
असंख्यप्रदेशी चिद्घन व्यक्ति, जडपुद्गल जाणुं निराळुंरे; ज्ञान.
बुद्धिसागर परम महोदय, शुद्ध लक्ष्मी अनंत संभाळुंरे. ज्ञान. ५

सर्वनी उन्नति थाओ ॥

श्री राग.

सर्व जीवोनी उन्नति थाशोरे, शुद्ध प्रभुस्वरूप कमाशोरे; सर्व.
आत्मवत् जीवोमां दृष्टि, मैत्रीभावना सर्व प्रकाशोरे. सर्व. १
पोताना सम अन्य जीवोना, प्राणो सहु प्रिय जणाशोरे. सर्व.
मातृदृष्टिथी सर्व जीवोनुं, भलुं माराथी कराशोरे. सर्व. २
सर्व जीवोना सद्गुण देखी, प्रमोद मन प्रगटाशोरे; सर्व.
उच्चभावना सर्व जीवोपर, भाव माध्यस्थ सर्व पमाशोरे. सर्व. ३
दुःखिजीवपर करुणा दृष्टि, चार भावना नित्य भवाशोरे. सर्व.

मनना दोष टळो सहु मेला, दयादृष्टिथी नित्य पखाळोरे. सर्व ४
वेगे माया फंदो टळशो, प्यारा प्रभु हृदय परसाशोरे; सर्व.
बुद्धिसागर आनंद मंगल, जय जय जगत वर्ताशोरे. सर्व. ५

समभाव.

श्री राग.

समभावे रहेवुं सुखकारीरे, उपाधि भिन्न विचारीरे; समभावे.
नहि कोइ व्हालुं नहि कोइ वैरी, अहो ममता दुःखनी क्यारीरे.सम.१
कोइक निन्दो कोइक वन्दो, अरति रति बहु दुःखकारीरे. सम.
जे जे थावे ते सहु थावो, दृष्टि तटस्थ में निर्धारीरे. सम. २
मन कल्प्युं इष्टानिष्टत्व, ते सहु दूर निवारीरे। सम.
अन्तरमां रमशुं मन मेमे, बाह्य परिणति दूर निवारीरे. सम. ३
राग द्वेष वेथी छे बंधन, मुक्ति छे ध्यानथी सारीरे. सम.
परम प्रेम धारीशुं निजमां, शाश्वत सुख घट धारीरे; सम. ४
मुक्तिनां सुख मुक्तिमां छे, समता सुख अहीं महा भारीरे;सम.
बुद्धिसागर समता प्रगटी, आनंद मंगलकारीरे. सम. ५

सत्य शोधी लीधुं,

श्री राग.

में शोध्युं जगत्मांहि सारुरे, मने लाग्युं अन्तरमां प्यारुरे. में.
पुद्गल शोध्युं सुख न भास्युं, में चेतनमां सुख धार्युंरे. में. १

स्वरूप शोधी लीधुं मारु, म्हारुं रहारु मैं मनथी वार्युरे. मैं.
जडमां रहुं पण जडथी न्यारो. हवे इन्द्रिय सुरत विसार्युरे. मैं. २
रागद्वेषवृत्तिथी न्यारो, शुद्ध चेतन हुं ए विचार्युरे. मैं.
रमुं हवे हुं चिदानन्दमां, श्रद्धा भक्तिमां मन ठार्युरे. मैं. ३
मोजमझामां मन नहि लागे, मन मर्कट तो हवे हार्युरे. मैं.
प्रेमना प्याला पीधा प्रेमे, सुख शाश्वत दिल उतार्युं रे. मैं. ४
तेजतणुं पण तेज कर्युं मैं, मने रत्न जडयुं अणधार्युरे. मैं.
बुद्धिसागर मंगळ लीला, शोध्युं ब्रह्म स्वरूप मुज सारुरे. मैं. ५

नात जात विसारी,

श्री राग.

मैं नात जाति सहु त्यागीरे, हुं तो थइयो अन्तर गुणरागीरे. मैं.
सद्गुरुए सत्य बताव्युं, मने अन्तरमां लपकागीरे. मैं.१
नर के नारी नहि नपुंसक, बन्यो ज्ञानगर्भित वैरागीरे. मैं.
बाह्य भोगनी इच्छा विरमी, थाउ सद्गुणथी सौभागीरे; मैं.२
वस्तुस्वभाव ते धर्म प्रगटो घट, शुद्ध अन्तर सुरता जागीरे; मैं.
बुद्धिसागर अन्तर सुखडां, स्वादे राग न जग पण रागीरे. मैं.३

इष्टदेव निमंत्रण ॥

श्री राग.

इष्टदेव व्हेला म्हापे आवोरे, दया दृष्टि हृदयमांहि लावोरे; इष्ट
नाम मंत्र तुज निशदिन स्मरु, हुं गावुं तमारो वधावोरे. इष्ट १

मनमोहन अन्तर अलवेला, इष्ट सिद्धि कृपालु बतावोरे; इष्ट
जाप जपुं हुं निशदिन तारो, तुज ध्याने हुं जगमां चावोरे. इष्ट २
मंत्र कल्प सिद्धि सहु थावे, मळ्यो मळेछे इष्टनो ल्हावोरे; इष्ट
वचन सिद्धि रुद्धि सहु होवे, एम निश्चयथी करु दावोरे. इष्ट ३
शासन सानिध्यकारी देवा, ज्यां त्यां मंगळ माळा रचावोरे;इष्ट
नाम न बोलुं हृदये स्थापुं. चिदानंद प्रभुता मिलावोरे. इष्ट ४
अनंत सुखनी लेहेरो प्रगटे, प्राणजीवन दीलमांहि मावोरे; इष्ट
बुद्धिसागर अनुभव सुखनी, लीला हृदयमां ठावोरे. इष्ट ५

श्री यशोविजय उपाध्याय आमंत्रण ॥

श्री राग.

यशोविजय उपाध्याय आवोरे, आवो सद्गुरु व्हेला आवोरे;य०
इष्ट गुरु तुं सानिध्यकारी, मने सत्य समाधि बतावोरे. य० १
शुद्धोपयोगे साह्य करे तुं. क्षणमात्र न वार लगावोरे; य०
परम महोदय लक्ष्मी दाता, अनेकान्तस्वरूप जणावोरे. य० २
मन मंदिरमां दीपक सम तुं, शुद्ध अनुभव हृदयमां ठावोरे;य०
चोल मजीठनो रंग लगावो, गुरु ज्यां त्यां जय वर्तावोरे. य० ३
दर्शन देइ आनंद आप्यो, मने मळ्यो चिदानंद ल्हावोरे; य०
रोम रोम आनंद बहु प्रगट्यो, हुं तो गावुं गुरुनो वधावोरे. य० ४
देवता थइने दर्शन देता, मन मंदिरमां गुरु च्हावोरे; य०
बुद्धिसागर जय गुरु देवा, शुद्ध दर्शन घट प्रगटावोरे. य० ५

६२

परोपकार

परोपकारे रीझीए, परोपकारे धर्म;
परोपकाराभ्यासथी, नासे सघळां कर्म. १
द्रव्य भाव बे भेदथी, परोपकार कहाय;
निश्चयने व्यवहारथी, तेना भेद ग्रहाय. २
परोपकारे ज्ञातृता, परोपकारे मुक्ति;
परोपकारे सत्य धर्म, तत्त्व वातनी युक्ति. ३
परोपकारे उच्च भाव, जगमां कीर्ति गवाय;
परोपकार सद्गुण विना, नीचा सर्वे गणाय. ४
उपकारे जे रक्त छे, धर्मी सत्य विचार;
परस्पर उपकार छे, तत्त्वार्थ सूत्र मझार. ५
उपकारी अरिहन्त छे, परमेष्ठीमां मुख्य;
परोपकार कर्या विना, कोइ न होय प्रमुख. ६
उपकृति दुर्लभ अहो; शुभोन्नति करनार;
धन्य धन्य ते प्राणिया, तरे अने तरनार. ७
सम्यक्त्वज्ञान प्रदानथी, परोपकार महान्
उत्तम जन सौ राचता, भाखे छे भगवान् ८
ज्ञान दान उपकार छे, देवो पर उपदेश,
मोटो परोपकार छे, टळता सघळा कलेश. ९
करे एकेन्द्रिय उपकृति, निज शक्ति अनुसार;
मनुष्य थई जे नहि करे, तेनो धिक् अवतार. १०
तन मन धनने ज्ञानथी, करवो परोपकार।
बुद्धिसागर सुख लहे, चिदानन्द जयकार. ११

६३
परमब्रह्म निराकरण ॥

छप्पय छंदः

प्रणमुं श्री परमेश जगत्मां केवळ ज्ञानी,
पूजे चोसठ इन्द्र चरण पण नहि जे मानी;
महिमा अपरंपार जगत्मां शक्ति अनन्ति,
घातक कर्म व्यतीत प्रभुनी निर्मळ व्यक्ति;
द्रव्य क्षेत्रने काळभावे स्थिति अनादि अनन्त छे,
एक व्यक्ति अपेक्षताथी स्थितिहि सादि सांत छे. १
अरिहंत ते बुद्ध तत्त्वनुं ज्ञान लह्याथी,
अरिहंत ते विष्णु ज्ञानमां सर्व ग्रह्याथी;
भासे ज्ञेय अनंत ज्ञानमां ब्रह्मा माटे,
राग द्वेषनो नाश महेश्वर जिनवर माटे;
आत्मोन्नतिनी प्राप्ति करवा मार्ग तेनो अनुसरो,
माध्यस्थ दृष्टि राखी भव्यो सिद्धि शाश्वत सुखवरो. २
षद्द्रव्योनुं ज्ञान कर्याथी विवेक दृष्टि,
सम्यग्दृष्टि प्रगटे भासे गुणगण सृष्टि.
नव तत्त्वो पण षद् द्रव्योमां समाय जाणो,
अष्ट पक्षनुं ज्ञान करी साचुं मन आणो;
सप्त नयने सप्त भंगीथी द्रव्य षट्ने धारीए,
बुद्धिसागर अनेकान्तथी तत्त्व सत्य विचारीए. ३
स्यात् अव्यय छे अनेकान्त नयद्योतक सारो,
सापेक्षाए वस्तु धर्म छे चित्त उतारो;
सापेक्षाए षद्दर्शन जिन दर्शन अंगो,
सापेक्षाए वस्तु ज्ञानना सत्य तरंगो;

पण नित्य ब्रह्मने कहो विकारी दोष एतो नहि मटे. ८
ब्रह्म विकारी कारण तेनुं कहेवुं पडशे,
नहि कारण वण कार्य दोष ए मोटो नडशे.
ब्रह्म विकारी स्वयं मानशो तो बहु दोषो;
कदा टळे न विकार फोक निजमतने पोषो,
परथी ब्रह्म विकार हेतु त्यां कर्म खरे अरे मानशो,
मानो मत स्याद्वाद त्यारे शुद्ध श्रद्धा आपशो. ९
नित्य एक जो ब्रह्म बहु ते शाथी थावे;
मानो भ्रांति दोष श्रुति तव व्यर्थ कहावे
भ्रांति कारण ब्रह्म कहो तो ब्रह्मज भ्रांति,
भ्रांति कारण कर्म कहो तो कर्मनी कांति;
कर्म ब्रह्म बे वस्तुमाने अद्वैत ब्रह्म ते क्यां रह्युं,
ब्रह्म शाथी अनेक थावे ज्ञानिए कहो शुं कह्युं. १०
ब्रह्म कहो सक्रिय यदि तो पक्षनी हानी,
ब्रह्म कहो अक्रिय तदा बहुता केम मानी;
इच्छाविशिष्ट ब्रह्म कहो तो भ्रमणा आवे,
इच्छा ब्रह्मनो गुण एम तो कोइ न गावे;
एक वस्तु थावे बहु त्यां कर्म कारण जो कहो,
कर्म ब्रह्मथी भिन्न माने द्वैतता मनमां लहो. १०
कर्म ते ब्रह्म स्वरूप मानतां सत्य टळे छे,
ज्ञान ध्यानने सदाचार सहु धर्म गळे छे;
ब्रह्म एकनुं बहुपणुं जो काळ अनादि,
एकपणुं नहि थावे माने सम्यग्वादी.
ब्रह्म एकनुं बहुपणुं ते काळ भेदे जो कहो,
हेतु विना नहि कार्य भाख्यो वाद ए मिथ्या लहो. ११

ब्रह्म नित्य तो अनेक धर्मी कदी न थावे,
भिन्न धर्म न रहे एकमां व्यापक जावे;
नैकस्मिन ए सूत्रदोष निज मनमां आवे,
माटेसा ए यदि कहो स्याद्वाद सुहावे,
स्वयं एक अनेक थाय तृषा मयामां धर्मना.
एक आतप बहुपणुं त्यां हेतु भेदो कर्मना १२
बहुत्व शक्ति तो एकपणाने कारण मानो,
पाप पुन्यमय ब्रह्म दोष ए महाविज्ञानो;
ब्रह्म एकने बहुपणुं तेनुं तो थाय,
ब्रह्म कहुं एकांत नित्य ए मिथ्या थावे;
ब्रह्म विकारी अनित्यता त्यां कथंचित मानशो यदा,
स्याद्वादने अवलंबवाथी पक्ष त्यो नहि तुम तदा १३
इच्छा रहित तो ब्रह्म कहो तो बहु केम थावे,
इच्छा विशिष्ट ब्रह्म कहो तो दोषज आवे;
इच्छा हेतु ब्रह्म कहो तो कदी न शान्ति,
इच्छार्थी यदि ब्रह्म भिन्न तो करो न भ्रांति;
ब्रह्मने ममता विना तो भ्रांतिमां जीव शून्यतां,
एक एवहि ब्रह्म मानी भ्रांतिथी बहु कृत्यतां १४
एकोऽहं बहु स्याम् श्रुतिनी इच्छा कोने,
इच्छा कहो तो ब्रह्मने त्यांह दोषज जाने;
ब्रह्म एकने अनेक थवा इच्छा शाथी,
व्यापक कहो तो ब्रह्म सदा ते प्रगटी क्यांथी;
सर्वैश्वर्य तो प्रगट थांभी हेतु तेनां शुं अहो,
ब्रह्मवादि मत हेतु दोष मतनो तो कहो. १५
उपादानने निमित्त कारण भिन्न कहावे,

समजे तेने सम्यग् न्यायज मनमां भावे;
उपादान ते निमित्त नहि छे न्याय विचारे,
ब्रह्म स्वरुपने समज्या वण तो दोष वधारे;
शक्तिने तेम व्यक्ति भावे ब्रह्म भेदो अनुसरो,
बुद्धिसागर ब्रह्म सम्यक् समजवाथी सुखवरो. १७
कर्माच्छादित ब्रह्म अने तेम कर्मथी भिन्न,
स्यात् जीवो ते ब्रह्म ब्रह्मथी जीवो अभिन्न;
मुक्ति अने संसारी द्विविध जीवो जाणो,
करे कर्मनो नाश मुक्तिना जीव वखाणो;
अष्ट कर्मावरण जेने जीवो तेहि अशुद्ध छे,
संग्रहनय सत्ता ब्रह्मथी परम इश्वर बुद्ध छे. १८
प्रति शरीरे भिन्न भिन्न छे जीव अनंता,
जीव ते शिव स्वरूप ज्ञानियो एम वदंता;
कर्म प्रयोगे जीव ब्रह्म ते अशुद्ध होवे,
कर्म नाशथी जीव ब्रह्म ते शुद्धज जोवे;
कर्म कारण अशुद्ध परिणति काळ अनादि जाणीए,
बुद्धिसागर शुद्ध परिणति कर्म नाशे वखाणीए १९
अशुद्ध गुण पर्याय कर्मना योगे थाता,
लक्ष चोराशी जीव योनिमां देह ग्रहातां;
एक जीव पण अनेक कायारुपे थावे,
कारण तेनुं कर्म ज्ञानियो सम्यग् गावे;
द्रव्यरुपे जीव एकज पर्यायरूपे अनेक छे,
स्याद्वाद सापेक्षताथी श्रुति सत्य विवेक छे. २०
अनेक जीवनी सापेक्षाए जीव अनंता,
भिन्न भिन्न कहे व्यक्ति जीवनी देव भदंता;

सापेक्षाए जिनवर गायुं घटतुं सवळुं,
वक्र जीवोने परिणमे छे मनमां अवळुं;
ज्ञान एकज द्रव्यरूपे अनंत ज्ञेयो भासता,
एक ज्ञान अनंतरूपे एक समय प्रकाशता. २१
केवल ज्ञाने शुद्ध ब्रह्ममां श्रुति सुहाती,
एक समय पर्यायरूप अनंत पमानी;
जीव द्रव्य ते एक बहु ते एणीपेरे थावे,
शुद्धपणे परिणमतां षट्कारक जिन गावे,
शुद्धमांहि शुद्ध हेतु. अशुद्ध पुद्गल योगथी,
बुद्धिसागर अनेकांतनय समजशो श्रुत भोगथी. २२
षड्गुण हानि वृद्धि समये समये थावे,
एकोऽहं बहुस्याम् श्रुति त्यां लेखे आवे;
ज्ञानगुण छे एक अनेक पर्याय सुहावे,
उत्पत्तिव्यय ध्रुवताभंगी श्रुति सुभावे;
आत्मशुद्धि थया पछी तो अशुद्धता थावे नहीं,
शुद्धचेतन शुद्धरूपे परिणमे गुणनिज ग्रही. २३
ब्रह्मसत्ने असत् जगत् एम बहु जन बोले,
सापेक्षा समज्या वण वाग्वने कोई न तोले;
आकाशकुसुमवत् जगत् असत् जो मनमां धारो,
अनेक दोषो प्रगटे त्यारे चित्त उतारो;
असत्‌भाव न दृष्टि देखो ज्ञानी गावे ज्ञानथी,
नभोकुसुमवत् असत् मानो जाण्युं ए बेमानथी. २४
एकांते नहि असत् जगत् एम जिनवर कहेवे,
सापेक्षाए समजे ते शिवसुखने लेवे;
सापेक्षावण श्रुतिवाक्यमां दोष अनेक

सापेक्षा समजयाथी प्रगटये सत्य विवेक;
आत्मद्रव्यसापेक्षताथी असत् वस्तु कही सह्रु,
आत्मरुपे न थाय थाकी शेष द्रव्यो मन लहु. २५.
ब्रह्ममांहि जे भासे ते सहु भिन्नाभिन्न,
सदसत् समजी अनेकांतनय थावो लीन;
ब्रह्मरुप नविहोय भासतीज वस्तु सर्व,
सापेक्षाए असत् तेहथी वस्तु अगर्व;
भूतएष्यत् पर्यवो पण असत् अपेक्षाथी कह्या,
बुद्धिसागर गहनशैली समजतानर सुख लह्या. २६
आत्मस्वरूपे असत् पदार्थो जडता भावे,
जडताभावे अजीव भावो समज्या जावे;
ब्रह्मज्ञानपर्याय हंस वा समजी लेशो,
ज्ञाने भासे सर्व भाव पण भिन्नज कहेशो;
ज्ञानज्ञेय स्वरूप जाणे सर्व संशय जाय छे,
ब्रह्म माया भिन्न समजे तत्त्व धर्म पमाय छे. २७
परभावरुप जे जगत् इश तेनो छे कर्ता,
परभावरूप जे जगत् इश तेनो छे हर्ता:
देह जगत्नो स्रष्टा आतम इश्वर जाणो,
रागद्वेषप्रयोग कर्मनो कर्त्ता आणो:
रागद्वेषविनाशथी जीव देह जगत् हर्ता कथो,
कर्म हर्ता जीव इश्वर सिद्ध बुद्ध शाश्वत लयो. २८
सकल कर्मनो नाश थयाथी सहज मुक्ति,
जीव परमेश्वररूप पछी नहि कर्मनी युक्ति:
देहरूप जे जगत् पछी नहि तेनो कर्ता,
आत्मिक शुद्ध स्वभाव थकी छे तेनो हर्ता;

सापेक्षताए देह गृहि कर्ता हर्ता मानीए,
व्यवहार निश्चयनयपक्षी अहो जीव ईश्वर जाणीए. २९.
सापेक्षा पण कर्ता हर्ता ईश्वरमाने,
छोड़े न आत्मस्वरूप सत्य ते शुं मन जाणे;
निराकार साकार हंस ईश्वर छे जाणो,
व्यवहारे साकार इतर निश्चयनय आणो;
साकार कर्म संबंधथी छे चतुर्गति जीव जाणजो;
कृत्स्न कर्मातीतयोगे निराकार शिव आणजो. ३०
लडालडी नहि सापेक्षाए तत्व विचारे,
विना विचारे धर्म भेदनां युद्ध वधारे;
धर्म भेदनो खेद टळे सहु नयना ज्ञाने,
आत्मधर्म स्याद्वाद लहे छे सत्यपिछाने;
लडालडी नहि धर्ममां कंइ सापेक्षवातो सहु अहो,
समजीने अरे आत्मतत्त्वे साम्यभावे सुख लहो. ३१
माया कहो के कर्म कहो किस्मत पण ते छे,
सांख्य प्रकृति कोइ कहे पण वस्तु ए छे.
प्रारब्धादिक भेद कर्मना समजी लेवा.
करवो कर्म विनाश ध्यानथी धरीने सेवा;
चिदानन्द स्वरूप परखी शुद्धरूप विचारीए;
ब्रह्म माया भेद समजी माया कर्म निवारीए, ३२
नय सापेक्षे धर्म एक छे गुरुगम लेशो,
खंडन मंडन करो केम अरे समता वहेशो;
समजावो सापेक्षवाद तो भेद न एके,
करी कदाग्रह त्याग समजल्यो सत्य विवेके
अनेकान्तनय सत्य बोधे सर्व साचुं परिणमे,

स्थूलदृष्टि जे जना तेने अहो आ नहि गमे. ३३
षड्दर्शन जिन अंग कर्यां छे वातज साची.
अनेकान्त नय सहज खराथी वात न काची;
गंभीरनय उदार धर्ममां सर्व समातुं,
समजयो ते छे स्थिर कांई नहि आतुं जातुं;
रागदोष जीते गमे ते जैनधर्मी जाणीए,
नात जातनो भेद नहि अरे सत्यधर्म पिछाणीए. ३४
नातजातनो भेद पडे त्यां धर्मनी पडती,
नातजातनो भेद नहि त्यां धर्मनी चडती;
लिंग वेषमां धर्म नहि निश्चय नय जोशो,
जड वस्तुमां अहंभावथी धर्मज खोशो.
ज्ञानयोगे धर्म चडती सर्व लोको आदरे,
नीच जन पण उच्चभावे धर्म योगे जग तरे. ३५
धर्म खरेखर आत्म विषेछे सत्य विचारे,
वाडा बांधी रहा जीवो ते सत्य न धारे;
सापेक्ष दृष्टि प्रगट थतां तो सत्यज लेशो,
आत्मोन्नतिमां भव्य अरे बहु राची रहेशो।
आत्मोन्नतिमां अनेकान्तनय धर्म साचो अनुसरो,
सर्व धर्म समाय तेमां मूढ दृष्टि परिहरो. ३६
धन्य धन्य वीतराग वचन रस जेणे चाख्यो,
धन्य जीव छे तेह कदाग्रह काढी नांख्यो;
सत्य खरेखर धर्म हृदयमां जेणे धार्यो,
धरी ध्यान वैराग्य मोहने जेणे मार्यो;
आत्म धर्म नित्य सुखने साधता सिद्धज थया,
बुद्धिसागर विजयी मुनिवर सिद्ध शाश्वत सुख ग्रह्या. ३७

वीर जिनेश्वर वचन विचारी धर्म विचारो;
समभी मन स्याद्वाद तत्त्वने कार्य सुधारो।
मगटावो सामर्थ्य आत्मनुं ध्यान करीने.
धरो शक्ति विश्वास चिदानंद शर्म वरीने।
सहज शुद्ध स्वभाव पामो वाय ममता परिहरी,
नित्य विष्णु जीव पोते सत्य श्रद्धा मन धरी. १८
अनेक नामथी वाच्य खरेखर छे निर्नामी,
रह्यो रूपमां अरूप भिन्न तुं सुख गुणरामी;
वपु शोधे नें वाय वायमां जडता भासे,
अन्तरमां यदि शोध करे तो तत्त्व मकाशे;
शक्ति अनंतिनाथ आतम परम प्रभुता गेहरे,
विश्व व्यापक व्याप्य पण तुं अन्यने शुं करगरे. ३९
चिदानन्द चेतन तुं ज्यारे निजघर आवे,
सहजानंद स्वभाव खरेखर घटमां थावे;
नासे देहाध्यास वासना मूळ वळे छे,
परम प्रभु विश्राम कर्मनुं जोर टळे छे;
आत्म शक्ति मगट करवा ध्यान अंतर धारीए,
बुद्धिसागर शिव सनातन शुद्ध धर्म विचारीए ४०
धरो आत्मनी टेक वाय सहु भूली जाशो,
धरो सत्यपर मेम प्रभु सुख हृदय विकासो;
ध्यान दृष्टिथी तन्मय थाओ स्वयं प्रभु छो,
ज्ञान शक्तिथी सर्व मकाशो स्वयं विभु छो;
जीव ईश्वर भेद हेतु कर्म टाळो ज्ञानथी,
अलिप्तभावे वाय वर्तन राखशो शुभ ध्यानथी. ४१
आत्मगुणनी शुद्ध मवृत्ति ध्याने करीए,

शुद्धगुणउत्पाद दोप ते अंने हरीए;
आत्मगुणोमां प्रेम दया गुण बहु वधारो,
सत्यधर्मने ग्रहण करीने आतम तारो।
आत्मरमणतापरम भक्ति योगी निश्चय धर धरे,
बुद्धिसागर गुरु कृपाथी परम सुख शिवपोवरे। ४२
स्वमसमी दुनियादारी सहु दूर निवारी,
परम प्रेमथी रटन करो आतम जयकारी;
पुरुषोत्तमने परमब्रह्म आतम छे पोते,
भूली निजनुं भान अरे केम बाहिर गोते;
आत्म शक्ति आत्ममां छे ध्यानथी झट जागती,
मोह निद्रा दुःखमय स्वरे ध्यान योगे लागती. ४३
परमब्रह्म जगदीश जीव तुं मंगलकारी,
क्यां शोधे तुं बाह्य हृदयमां देख विचारी;
निराकार भगवान् कहुं जे जे ते तुं छे,
धर निश्चय विश्वास चिदानन्द ईश्वर तुं छे;
विज्ञानघन तुं हंस निश्चय देह देवळमां रह्यो,
सत्यभानु परम महोदय कदी न जाते तुं कह्यो. ४४
सामर्थ्य प्रगटाव खरेखर मळीयुं टाणुं,
सामर्थ्य प्रगटाव मळ्युं नृभवनुं नाणुं;
सामर्थ्य प्रगटाव मोहनी खटपट वारी,
सामर्थ्य प्रगटाव ध्याननी दृष्टि धारी;
सामर्थ्यने प्रगटावरे जीव हार हिम्मत नहि जरा,
आत्मशक्ति प्रगट करी ते जगतमां जन्म्या खरा. ४५
अद्भुत महा सामर्थ्य आत्मनुं योगाभ्यासे,
ब्रह्मरन्ध्रमां आसन पूरो झळहळ भासे;

वीर जिनेश्वर वचन विचारी धर्म विचारो;
समजी मन स्याद्वाद तत्त्वने कार्य सुधारो;
प्रगटावो सामर्थ्य आत्मनुं ध्यान करीने.
धरो शक्ति विश्वास चिदानंद शर्म वरीने;
सहज शुद्ध स्वभाव पामो बाह्य ममता परिहरी,
नित्य विष्णु जीव पोते सत्य श्रद्धा मन धरी. ३८
अनेक नामथी वाच्य खरेखर छे निर्नामी,
रह्यो रूपमां अरूप भिन्न तुं सुख गुणरामी;
क्यां शोधे तुं बाह्य बाह्यमां जडता भासे,
अन्तरमां यदि शोध करे तो तत्त्व प्रकाशे;
शक्ति अनंतिनाथ आतम परम प्रभुता गेहरे,
विश्व व्यापक व्याप्य पण तुं अन्यने शुं करगरे. ३९
चिदानन्द चेतन तुं ज्यारे निजघर आवे,
सहजानंद स्वभाव खरेखर घटमां थावे;
नासे देहाध्यास वासना मूळ बळे छे,
परम प्रभु विश्वास कर्मनुं जोर टळे छे;
आत्म शक्ति प्रगट करवा ध्यान अंतर धारीए,
बुद्धिसागर शिव सनातन शुद्ध धर्म विचारीए. ४०
धरो आत्मनी टेक बाह्य सहु भूली जाशो,
धरी सत्यपर प्रेम ब्रह्म सुख हृदय विकासो;
ध्यान दृष्टिथी तन्मय थाओ स्वयं प्रभु छो,
ज्ञान शक्तिथी सर्व प्रकाशो स्वयं विभु छो;
जीव ईश्वर भेद हेतु कर्म टाळो ज्ञानथी,
अलिप्तभावे बाह्य वर्तन राखशो शुभ ध्यानथी. ४१
आत्मगुणनी शुद्ध प्रवृत्ति ध्याने करीए,

शुद्धगुणउत्पाद दोष ते अंशे हरीए;
आत्मगुणोमां मेघ दया गुण बहु वधारो,
सत्यधर्मने ग्रहण करीने आतम तारो;
आत्मरमणतापरम भक्ति योगी निश्चय घट वरे,
बुद्धिसागर गुरु कृपाथी परम सुख शिष्योवरे। ४२
स्वप्नसमी दुनियादारी सहु दूर निवारी,
परम प्रेमथी रटन करो आतम जयकारी;
पुरुषोत्तमने परमब्रह्म आतम छे पोते,
भूली निजनुं भान अरे केम बाहिर गोते;
आत्म शक्ति आत्ममां छे ध्यानथी झट जागती,
मोह निद्रा दुःखमय खरे ध्यान योगे लागती. ४३
परमब्रह्म जगदीश जीव तुं मंगलकारी,
क्यां शोधे तुं बाह्य हृदयमां देख विचारी;
निराकार भगवान् कहुं जे जे ते तुं छे,
धर निश्चय विश्वास चिदानन्द ईश्वर तुं छे;
विज्ञानघन तुं हंस निश्चय देह देवळमां रह्यो,
सत्यभानु परम महोदय कदी न जावे तुं कह्यो. ४४
सामर्थ्य प्रगटाव खरेखर मळीयुं टाणुं,
सामर्थ्य प्रगटाव मळ्युं नृभवनुं नाणुं;
सामर्थ्य प्रगटाव मोहनी खटपट वारी,
सामर्थ्य प्रगटाव ध्याननी दृष्टि धारी;
सामर्थ्यने प्रगटावरे जीव हार हिम्मत नहि जरा,
आत्मशक्ति प्रगट करी ते जगतमां जन्म्या खरा. ४५
अद्भूत महा सामर्थ्य आत्मनुं योगाभ्यासे,
ब्रह्मरन्ध्रमां आसन पूरो झळहळ भासे;

वीर जिनेश्वर वचन विचारी धर्म विचारो;
समजी मन स्याद्वाद तत्त्वने कार्य सुधारो;
प्रगटावो सामर्थ्य आत्मनुं ध्यान करीने,
परो शक्ति विश्वास चिदानंद शर्म वरीने;
सहज शुद्ध स्वभाव पामो बाह्य ममता परिहरी,
नित्य विष्णु जीव पोते सत्य श्रद्धा मन धरी. ३

अनेक नामथी वाच्य खरेखर छे निर्नामी,
रह्यो रूपमां अरूप भिन्न तुं सुख गुणधामी;
जग शोधे तुं बाह्य बागमां जडता पामे,
अन्तरमां यदि शोध करे तो तत्त्व प्रकाशे;
शक्ति अनंतिनाथ आतम परम प्रभुता गेहरे.
विश्व व्यापक व्याप्य पण तुं अन्यने शुं करगरे. ३९

चिदानन्द चेतन तुं ज्यारे निजघर आवे,
सहजानंद स्वभाव खरेखर घटमां थावे;
नासे देहाध्यास वासना मूळ बळे छे,
परम प्रभु विश्वास कर्मनुं जोर टळे छे;
आत्म शक्ति प्रगट करवा ध्यान अंतर धारीए,
बुद्धिसागर शिव सनातन शुद्ध धर्म विचारीए ४०

धरो आतमनी टेक बाह्य सहु भूली जाशो,
धरो सत्यपर प्रेम प्रभु सुख हृदय विकासो;
ध्यान दृष्टिथी तन्मय थाओ स्वयं प्रभु छो,
ज्ञान शक्तिथी सर्व प्रकाशो स्वयं विभु छो;
जीव ईश्वर भेद हेतु कर्म टाळो ज्ञानथी,
अलिप्तभावे बाह्य वर्तन राखशो शुभ ध्यानथी. ४१

आत्मगुणनी शुद्ध प्रवृत्ति ध्याने करीए,

उपदेश रत्न.

झूलणा छंद.

विच आप्युं नहि दुःखियाने अरे, नाम प्रभुनुं अरे केम तारे;
दोषिना दोष टाळ्या नहि प्रेमथी, जन्मीने ते अरे जन्म हारे. वि.१
सुजननी संगति सर्व मानव करे, सुजनने मान सर्वज्ञ आपे;
सद्गुणीनी प्रशंसा जगज्जन करे, सन्तनुं वेण को न उथापे. वि.२
सुजनना बोलमां सहु कोण एवुं थशे, प्रेम दृष्टिथकी ते विचारो;
दोषीना दोषहत्व सत्य धर्मा खरो. पापीनुं पाप प्रेमे निवारो. वि.३
दोषीना दोष धोवा दयागंगथी, सन्त साचा करे कार्य एवुं;
चंड कौशिक अरे समज सद्ज्ञानथी, वीरनुं वाक्य ए चित्त लेवुं. वि.४
सर्वना श्रेयमां श्रेय म्हारू रहुं, दोषीपर प्रेमनी दृष्टि वरसो;
भलुं करे मानवी सत्य साधु खरो, दुःख मोहाग्निने शिघ्रतरशो. वि.५
उघने नीचनो भेद सहु टाळीने, ऐक्यता कीजीए सर्व साथे;
उघ ने भेद भासे नहि सर्वमां, एम भाख्युं अहो विश्वनाथे. वि.६
वचन काया अने ज्ञान सत्ता थकी, प्राणिपोले पडयां दुःख वारो;
सर्वनी उन्नति कीजीए प्रेमथी, कार्य उपकारनां धर्म धारो. वि.७
उच्च जीवन करो पुण्य करणी करो, कार्य उपकारनां साथ आवे;
बुद्धिसागर खरी धर्म करणी करो, सुजनना चित्तमां सत्य भावे. वि ८



शक्ति अपरंपार आत्मनी प्रगट करो झट,
वाणी अगोचर नाथ तेहनुं ध्यान धरो घट;
आत्मशक्ति प्रगट करवा योगविद्या आदरो,
जैनशैली गहन जाणी गुरुदेवे मन धरो. ४६
कुटुंबसम दुनिया जीव मानी भेद टळे छे,
वेर झेर ने क्लेश बुद्धि सहु दूर टळे छे;
आनंद अपरंपार अनुभव निश्चय आवे.
अशुद्ध भावनो नाश शुद्धता सहज सुहावे;
आत्मशक्ति प्राप्त करवी आत्म श्रद्धापर रही,
बुद्धिसागर आत्मशक्ति दीलमां व्यापी रही. ४७
स्वस्ति श्री खंभात नगरमां प्रेमे आवी,
भेटया स्तंभन पार्श्वजिनेश्वर ध्यान जगावी;
अचळ महोदय देव प्रेमथी दीठा भावे;
परम प्रभु चिद्घन जिनेश्वर हृदय सुहावे;
परम प्रभुनुं ध्यान धरीने ग्रंथ रचना आ करी.
परमप्रभु नामथी शुभ जगत्मां कीर्ति वरी. ४८
भणे गणे ते परम प्रभुता निश्चय पामे,
अजरामर थइ वेश ठरे ते निर्भय ठामे;
नासे मिथ्या रोग धर्मना ध्यान प्रभावे,
अष्टसिद्धि साम्राज्य हृदयमां वेगे आवे;
ओगणीस पांसठ चैत्र पुनम ज्ञानी जय सुख पामशे,
बुद्धिसागर गुरु कृपाथी सत्य सुखडां जामशे. ४९

उपदेश रत्न.

झूलणा छंद.

वित्त आप्युं नहि दुःखियाने अरे, नाम प्रभुनुं अरे केम तारे;
दोषिना दोष टाळ्या नहि प्रेमथी, जन्मीने ते अरे जन्म हारे. वि.१
सुजननी संगति सर्व मानव करे, सुजनने मान सर्वेज आपे;
सद्गुणीनी प्रशंसा जगज्जन करे, सन्तनुं वेण को न उथापे. वि.२
सुजनना वेली सहु कोण एवुं थशे, प्रेम दृष्टिथकी ते विचारो;
दोषीना दोषहृत् सत्य धर्मी खरो, पापीनुं पाप प्रेमे निवारो. वि.३
दोषीना दोष धोवा दयागंगथी, सन्त साचा करे कार्य एवुं;
चंड कौशिक अरे समज सद्ज्ञानथी, वीरनुं वाक्य ए चित्त लेवुं. वि.४
सर्वना श्रेयमां श्रेय म्हारू रह्युं, दोषीपर प्रेमनी वृष्टि वरसो;
भलुं करे मानवी सत्य साधु खरो, दुःख मोहाब्धिने शिघ्रतरशो. वि.५
उच्चने नीचनो भेद सहु टाळीने, ऐक्यता कीजीए सर्व साथे;
उच्च ने भेद भासे नहि सर्वमां, एम भाख्युं अहो विश्वनाथे. वि.६
वचन काया अने ज्ञान सत्ता थकी, प्राणियोने पड्यां दुःख वारो;
सर्वनी उन्नति कीजीए प्रेमथी, कार्य उपकारनां धर्म धारो. वि.७
उच्च जीवन करो पुण्य करणी करो, कार्य उपकारनां साथ आवे;
बुद्धिसागर खरी धर्म करणी करो, सुजनना चित्तमां सत्य भावे. वि ८

७९

देहस्थ आत्मानी परमात्मावस्थानुं स्मरण.

झूलणा छंद.

समजी ले भव्य तुं समजी ले भव्यतुं खीलववे आत्मशक्ति प्रभुनी;
आत्म सामर्थ्यथी सर्व कर्मो टळे, शक्ति हृदये धरो चिद्विभुनी स. १
आत्ममां रमणता ध्यान दृष्टि थकी, दुःखनां कारणो सर्व नाशे.
शरीर व्यापी रह्यो देह भिन्न लह्यो, ज्ञान सामर्थ्यथी सहु प्रकाशे स. २
स्वाश्रयी थइ रहो सत्यशांति लहो, करणी जेवी तथा कार्य थावे
चिंतना दोषवारो महाशक्तिथी, परम आनंद पद भव्य पावे. स. ३
बुद्ध निर्भय प्रभु कृष्ण रहेमान तुं, भूपने विष्णु तुं प्रभु सवायो;
तेमनो पार नहि वाणी गोचर नहि, ध्यानिना ध्यानमां तुज आयो.
झळहळे ज्योति आत्मप्रभुनी सदा. दुःखनी भ्रांतियो दूर नासे;
वीर विभेश तुं पिंड वसतो छतो, योगियोना हृदयने प्रकाशे. स. ५
तेमनुं तेम तुं देवनो देवतुं. ज्ञानसागर प्रभु तुं प्रमानो;
हृदय दृष्टा ग्रहि वचन मापेसर्धी, परम ध्याने रहे प्रभु न छानो. स. ६
अलख निर्भय प्रभु विष्णुने बुद्ध तुं, शुद्धज्ञाने प्रभु था प्रकाशी;
देव वीतराग तुं शुद्ध सत्ता ग्रहे. व्यक्तिथी था प्रभो धर्मवासी स ७
सारमां सार तुं पूज्यमां पूज्य तुं. जागतो देव तुं देह दीठो;
बुद्धिसागर नमुं ज्ञान दातारने, रोम रोमे प्रभु नित्य मीठो. स. ८

परना सारामां सारु.

थाळ राग.

परना सारामां सारुरे, समजो नरनारी;
पण बुरामां अंधारुरे, समजो नरनारी.
परना सारामां मीठुं, ज्यां त्यां जगमां दीठुं;
परनुं बुरु अनीठुंरे. समजो. १
परने आळ देतो, हिंसक जन छे तेतो;
दुर्गतिमां दुःखडां सहेतोरे. समजो, २
निंदाछे बुरो दारु, तेथी न थाय सारु;
आ वचन मानी ले मारुरे. समजो ३
दया धर्म जयकारी, अन्तरमां ल्यो उतारी;
हिंसकभाव निवारीरे. समजो. ४
शत्रु मित्र समभावे, चतुर्गतिमां नावे;
चिदानन्दपद पावेरे. समजो ५
दुःखिजन उगारो, नीति धर्म विचारो;
आवे भवदुःख आरोरे. समजो. ६
भलुं सर्वनुं कीजे, साचुं ते मानी लीजे;
बुद्धिसागर घट रीझेरे. समजो. ७

करवुं तो न डरवुं.

थाळ राग.

करवुं तो नहीं डरवुंरे, समजो नरनारी;
डरवुं तो नहि करवुंरे, समजो नरनारी;
आगळ विजय विचारी, कृत्य करो नरनारी;
जाओ न हिंमतहारीरे. समजो. १
चितिशक्ति खीलवशो, बाह्यवृत्ति सहु दमशो;
शुद्धप्रवृत्ति भजशोरे. समजो. २
दुनिया छे दीवानी. बात करे दुःख खाणी;
डरो नहि गुण जाणीरे. समजो. ३
दुःखो सामे लडवुं, पाछा कदी न पडवुं;
जरा नहि लडथडवुंरे. समजो. ४
हिंमत कदी नहि हारो, धार्यु पार उतारो;
चेतन शक्ति वधारोरे. समजो ५
धैर्य धरी सहु करीए, पाछां पगलां नहि भरीए;
बुद्धिसागर सुखवरीएरे. समजो. ६

कर्यां कर्म भोगववां.

थाळ राग.

कर्यां कर्म भोगववांरे, समता घट धारो;
उदास भावे सहवांरे. समता घट धारो.
कायर न थावुं च्हाला, वागे तो तन भाला;
थाजे मंगलमाळारे. समता. १

कर्म फंदी नहि मूके, दलीकना रस फुंके;
पण ज्ञानी शूर न चूकेरे. समता, २
कोइ दिन काजी पाजी, ने कोइ दिन राजी राजी;
एक वेळा नहि छाजीरे. समता. ३
कर्म आळ जे आवे, बहु फडफड जगमां थावे;
कोइ दिन कीर्ति भावेरे. समता. ४
कोइ दिन नृप भिखारी, कोइ दिन मित्रनी यारी;
क्षुधा उदरमां मारीरे. समता. ५
दुनिया पाये लागे, कांटा तो पगमां वागे;
कोइ दिन भिक्षा मागेरे. समता. ६
बांध्यां कर्म नचावे, ज्ञानी तो समता लावे;
बुद्धिसागर एम गावेरे. समता. ७

खरी वखत आवी.

थाळ राग.

खरी वखत आ आवीरे. ज्ञानी मन भावी।
देखो कर्म हठावीरे. ज्ञानी मन भावी.
मळीयुं उत्तम टाणुं. परखी ल्यो धर्मनुं नाणुं;
धो गुरुजीने नजराणुंरे. ज्ञानी. १
अवळी नदी उतरवी. पार पेले जावुं;
दया गंगमां न्हावुंरे. ज्ञानी. २
मधु मधु स्मरी जे. शरण प्रभुनुं कीजे;
दया दान बहु दीजेरे. ज्ञानी ३

कर्म विपाको सहेजे, तुं आपस्वरूपे रहेजे;
कोईने कांई न कहेजेरे, हिंमत. ५
शक्ति अनंति स्वामी, राख हवे नहि खामी;
बुद्धिसागर सुख रामीरे, हिंमत. ६

झटपट चेत.

थाळ राग.

चेतनजी झटपट चेतोरे, घटमां झट जागी;
अरे काळ झपाटा देतोरे, थाशो वैरागी.
दुःख सघळां सहीए, समभावमांहि रहीए;
परमानंदपद लहीएरे, घटमां. १
चेतन अमर कहेवायो, चिदानन्द गुण छायो;
घटमां छे दरसायोरे, घटमां. २
मोह खटपट मेली, वखत सुधारो छेल्ली;
करो न चिंता हेलीरे, घटमां. ३
छेवट वखत सुधारो, टाणुं मळयुं न हारोः
ब्रह्मस्वरूप अवधारोरे. घटमां. ४
क्षणमां थाशे सारु, पुद्गल नहीं छे म्हारू;
मान नहि मन म्हारूरे. घटमां. ५
क्षणमां पाप जाशे, परम प्रभु परखाशे;
समभावे सुखडां थाशे रे. घटमां. ६
हिंमत हैयडे धारो, मळयो वखत सुधारो;
बुद्धिसागर सारोरेः घटमां. ७

बाह्यधर्मक्रियाडंबर.

पैसा पैसा पैसा म्हारी.

बाह्य क्रियाडंबरमां भूलया, भोळा नरने नारीरे;
उपर उपरनी धर्मनी बुद्धि, भटके जग बहु मारीरे. बाह्य. १
साध्य साधननुं ज्ञान न होवे, मूढमतिथी चाले रे;
सत्य वातने निश्चयनय कहे, मन आवे त्यां म्हालेरे. बाह्य. २
सम्यग् आत्मस्वरूप न जाणे, बाह्य क्रियामां फूलेरे;
साध्य शून्य अरे करे क्रियाओ, धामधूममां भूलेरे. बाह्य. ३
मन सुधर्याविण शिर मुंडावे, वेष प्रभुनो लजावेरे;
एक एकनां छिद्र ज शोधे, मूढनी आगळ फावेरे; बाह्य. ४
व्रत लीधां पण व्रत आलोवे, ज्ञान दशाविण घेहेलारे;
बुद्धिसागर ध्यान क्रिया शुभ, सज्जन समजु वहेलारे बाह्य. ५

धामधूममां धर्म

राग उपरनो.

धामधूममां धर्म मनायो, भूल्यां नरने नारीरे;
चिदानन्द नहि शोध्यो घटमां, स्हाइ मति दुखियारीरे. धामधूममां. १
धर्म धूतारा केइ फरे छे, जग जांनि बहु भरनारे;
भोळा जनने भरमावीने, उदर पोषण अरे करतारे. धामधूममां. २
पोप लीला पलवे छे भारी, रास्वी बहु दुखियारीरे;
लोभी वसे त्यां धूर्तो फावे, जोशो चित्त विचारीरे. धामधूममां. ३
क्रियाकांडमां साध्य शून्य थई, मूर्ख जनो भटकायारे;

सम्यग् ज्ञानक्रियाथी मुक्ति, कोईक वीरला पायारे धामधूममां. ४
अलख खलकमां साचो समजो, देह पिंडमां वसियोरे;
बुद्धिसागर ध्यान क्रिया शुभ, अन्तर अनुभव रसियोरे.धामधूममां. ५

शुद्धपरमात्मस्वरुपस्मरण.

पैसा पैसा ए राग.

परमशुद्ध परमेश्वर स्वामी, रुपारुप प्रकाशीरे,
चिदानन्द चेतन निर्दोषी, शाश्वत सिद्धि विलासीरे परम. १
सात नयोथी आत्मधर्मनी, स्थिति शुद्ध विचारोरे;
द्रव्यार्थिकनय नित्यपणेछे, एकरुप ध्रुव प्यारोरे. परम. २
पर्यायार्थिकनय अनित्य, पर्याय शुद्धि मजानीरे;
सोऽहं सोऽहं प्रभु गुण गावो, सिद्धि रहे नहि छानीरे. परम. ३
रत्नत्रयीनी स्थिरता छाजे, आनन्द अनहद राजेरे;
परम महोदय लीला प्रगटे, त्रण भुवन शिर गाजेरे. परम. ४
तत्त्वमसि निश्चयनय निर्मल, घटमां गंगा काशीरे;
बुद्धिसागर घटमां शोधो, आनन्दघन अविनाशीरे. परम. ५

चितिशक्ति सामर्थ्य.

राग उपरनो.

चितिशक्ति अनंत खीलवची, योगाभ्यास वधारीरे;
बाह्य भाव सहु दूर हरीने. सेवो धर्म सुधारीरे. चिति. १

परिपूर्ण हुं पुरुषोत्तम छुं, वीर्य अनन्तनो स्वामीरे;
जे धारु ते करी शकुं हुं, मिश्रक्षायिक गुणरामीरे. चिति. २
कोइक निन्दो कोइक वन्दो, मन आवे ते धारोरे;
पण तेथी मुज कांइ न जातुं, शुद्ध स्वभावे प्यारोरे. चिति. ३
दुनिया खोटी तो शुं मारे, सारी तो शुं मोरेरे;
समभावे आनन्दमां झीलुं, निश्चय शुद्ध विचारेरे. चिति ४
निश्चयनय आनंद स्वभावी, शोधो घट नरनारीरे;
बुद्धिसागर वीर्योत्साहे, परमब्रह्म पद भारीरे. चिति. ५

परमज्योति पद.

राग उपरनो.

परमज्योति परमेश्वर स्वामी, चिदानंद जयकारीरे;
आतम ते परमातम साचो, व्यक्तिपणे बलिहारीरे. परम. १
नित्यनिरंजन निर्भय निश्चय, व्यक्तित जीव अनंतारे;
कर्म खप्याथी जीव ते शिवरूप, भाखे छे भगवंतारे. परम. २
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता संगी, समये समये वखाणोरे;
सापेक्षाए धर्म अनंता, समजी शिव सुख आणोरे. परम. ३
नहि हुं कर्ता नहि हुं हर्ता, नहि हुं नर के नारीरे;
वृद्ध युवा के नहि नपुंसक, ज्ञात भात नहि मारीरे. परम. ४
स्याद्वाद सत्तामय पूर्ण, परमानंद पद भोगीरे;
बुद्धिसागर सुरता साधी, पावे निश्चय योगीरे. परम. ५

आश्चर्य पद.

राग उपरनो.

अचरिज मोटुं दीठुं संतों, साधु सरोवर झीलेरे;
अनहदनादे मुनिवर नाचे, दाणा धईने पीलेरे. अचरिज. १
वाहाण मांहि समुद्र समायो, राजा करे रंक सेवारे;
खरा धणीरे लेश न सुझे, पूजे पूजारीने देवारे. अचरिज. २
लक्ष्मीदारो भीक्षा मागे, भिक्षुक शेठ कहावेरे;
उलटो चोर कोटवाळने दंडे, जुठुं जनने भावेरे. अचरिज. ३
नपुंसकना वशमां सहु दुनिया, दुःखने सहु पंपाळेरे;
पोताने दुनियामां शोधे, छतां आंखे नव भाळेरे. अचरिज. ४
धामधूममां धर्म मनायो, भोगी जन संन्यासीरे;
जूठा बोला जग पूजाता, देखी आवे बहु हांसीरे. अचरिज. ५
पति सतीनी जोडज वीरली, अंधा अंधने दोरेरे;
बुद्धिसागर घटमां शोधो, आंबो शोभे मोरेरे. अचरिज. ६

जाग्रति सदुपदेश पद.

राग उपरनो.

जागीने तमे जुओ सन्यासी, जोगी, जति, विश्वासीरे;
खाखी, फकीर, वैरागी, त्यागी, साधु संत उदासीरे. जागीने १
समजी साचुं अंतर धारो, खटपट मनथी वारोरे;
साचुं ते पोतानुं मानी, आतमने झट तारोरे. जागीने. २
जड चेतन बे तत्त्व अनादि, कर्म ते जीव ग्रहेछेरे;

मिथ्यात्वादिक हेतुयोगे, चार गतिमां वहेछेरे. जागीने. ३
कर्म जतां आतम परमातम, ज्योति ज्योत मिलावेरे;
सादि अनंतिशिति सिद्धि, संसार फरी नावेरे. जागीने. ४
जीव ते इश्वर कर्मनो कर्ता, हर्ता पण ते थावेरे;
शरीर जगत्ने रचतो हरतो, ध्याने शिवपुर जावेरे. जागीने. ५
संग्रहनयथी ब्रह्म अनादि, सर्व जीवोमां साचेरे;
सत्ताव्यक्तिथी एक अनेक, अनेकांतनय व्यापेरे. जागीने. ६
देह जगत् अज्ञाने रचतो, इश्वर आतम पोतेरे;
असंख्य प्रदेशी देहे व्याप्यो, बीजे नीदने गोतेरे. जागीने. ७
भेद अभेद स्वरुप सुहायो, मुख्य बुद्धिथी ध्यावोरे;
बुद्धिसागर करुणानो घर, परमप्रभु परखावोरे. जागीने. ८

सोऽहं.

राग उपरनो.

सोहं सोऽहं सोऽहं सोऽहं, सोऽहं रटना धारीरे;
रेचक पूरक कुंभक साधी, केवल कुंभक भारीरे. सोऽहं. १
ईडा पिंगला सुषुम्णा नाडी, पवनाभ्यास संचारीरे;
द्रव्यभावथी ध्यान पिंडस्थ, थयुं हृदय जयकारीरे. सोऽहं. २
षट् चक्रोनो भेद करीने, बंकनाल अवतारीरे;
जई गगनगढ आसन कीधुं, अन्तरदृष्टि उतारीरे. सोऽहं. ३
स्थिरोपयोगे आनंद लहेरी, प्रगटी महागुणकारीरे;
अनुभवामृत पीधुं प्रेमे, अलख दशा अवधारीरे. सोऽहं. ४
चढवुं उतरवुं क्षयोपशमथी, करवी क्षायिक सिद्धिरे;
बुद्धिसागर सोहं सोहं, स्मरण करे सुखऋद्धिरे सोऽहं. ५

उच्चभाव.

राग उपरनो.

उच्च भावना उच्च करे छे, दोषो सर्व हरेछेरे;
आतम ते परमातम थावे, समजु चित्त धरेछेरे. उच्च. १
सद्गुणदृष्टिथी गुण लेवा, निन्दा दोष निवारीरे;
पिस्तालीश आगमने समजी, लेशो आतम तारीरे. उच्च. २
सम्यग्दृष्टि गुण ग्रहे छे, सद्गुण चित्त वहेछेरे;
दोषीना पण दोष न बोले, गुणिनो गुण लहेछेरे उच्च. ३
अवगुण उपर गुण करे छे, उच्च भावनाभ्यासीरे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावथी, धर्म तत्त्व मन वासीरे. उच्च. ४
आतम ते परमातम ध्यावो, उच्च भावना सारीरे;
बुद्धिसागर उच्च भावना, चित्त धरो नर नारीरे. उच्च. ५

जुओ तपासी.

राग उपरनो.

जुओ तपासी जुओ तपासी, अन्तरमां सुख साचुंरे;
अनुभवामृतसागर आतम, बाकी सघळुं काचुंरे. जुओ. १
क्षणिक दुनियाना बहु रंगो, चेन पडे नहि चारुंरे;
हुं मारु ए मुजथी न्यारु, समज्या वण अंधारुंरे. जुओ. २
झळहळ ज्योति जागी रही छे, लोकालोक प्रकाशीरे;
ज्ञाता, ज्ञेयने ज्ञानविलासी, जोतां टळशे उदासीरे. जुओ. ३
द्रव्य गुणपर्यायमयी जीव, निश्चय निज गुण भोगीरे;

परमब्रह्म पुरुषोत्तम स्वामी, योगीना पण योगीरे. जुओ. ४
शक्ति अनंति समय समयमां षड्गुण हानिवृद्धिरे;
बुद्धिसागर चेतन चिन्हे, पावे जिनपद शुद्धिरे. जुओ. ५

मैत्रीभावना धारो.

राग उपरनो.

ज्यां त्यां मैत्रीभावना धारो. इर्ष्या दोष निवारोरे;
दुश्मन कोइ न जीवो मारा, मानुं तत्त्व विचारोरे. ज्यां त्यां. १
स्वार्थ धरी कोइ जीव न मारो, मरता जीव उगारोरे;
दया धर्ममां मूल खरु छे, मैत्री भावमां धारोरे. ज्यां त्यां. २
सर्वे जीवो जो मारा मित्रो, तो केम अन्यने मारुरे.
मैत्रीभाव त्यां कदी न हिंसा, सम्यतत्त्व अवधारुरे. ज्यां त्यां. ३
द्रव्यभावथी मैत्रीभावना, शाश्वत सुख करनारीरे;
मोह दोषनो नाश करेछे, परमधर्म धरनारीरे. ज्यां त्यां. ४
चंडकोशिया सर्पनी उपर, मैत्री भावना सारीरे;
वीरजिनेश्वरना मनजाणो, बुद्धिसागर प्यारीरे. ज्यां त्यां. ५

निन्दा त्याग.

उठो चेतन आळस छंडी-ए राग अथवा प्रभात राग

कर्माधीन छे संसारी जीव, निन्दा कोईनी न करशोरे;
निन्दा करतां नीचपणुं छे, शिक्षा दिलमां धरशोरे कर्मा. १

तरतमयोगे दोषी दुनिया, करशो तेवुं भरशोरे;
निन्दक जन चंडाल समो छे, निन्दाने परिहरशोरे. कर्मा. २
पोतानामां दोष घणा छे, तेने कोई न पेखेरे;
परनां चांदां खोळे पापी, सद्गुण दृष्टि उवेखेरे. कर्मा. ३
निन्दकनी दृष्टि छे अवळी, परने आळ चढावेरे;
पोते सारो परने खोटो, कहेवामां ते फावेरे. कर्मा. ४
त्रियोगे निन्दक जन पापी, परनुं भूंडुं धारेरे;
बुद्धिसागर सद्गुण दृष्टि, धारी दोष निवारेरे. कर्मा. ५

एक स्वप्न.

राग-प्रभात.

स्वप्न समी आ दुनियादारी, समजो नरने नारीरे;
बाजीगर बाजी सम दुनिया, सुख नहि तलभारीरे. स्वप्न. १
जन्म्या तेने जावुं अन्ते, माया सर्व विसारीरे;
चेत चेत चेतनजी मनमां, मायामां दुःख भारीरे स्वप्न. २
हाजी हा सहु स्वार्थतणी छे, मोहे मारामारीरे;
स्वारथनुं सगपण जगमांहि, निश्चय देख विचारीरे. स्वप्न. ३
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र चक्रेछे, राणा रंक विहारीरे;
अमर रहे नहि कोई आ जगमां, फुले शुं संसारीरे. स्वप्न. ४
ज्ञान ध्यानथी अन्तर शोधो, आतम सुखनी क्यारीरे;
बुद्धिसागर धर्म जननी, हुं जाउ बलिहारीरे. स्वप्न. ५

त्याग ग्रहण नहि पुद्गल वस्तु, योगी सत्य सुहावेरे, शा माटे. ४
चिदानन्दमां लीन थइने, कर्म कलंक हटावेरे;
बुद्धिसागर निर्मल चेतन, परम महोदय पावेरे; शा माटे. ५

कपटक्रियामां पाप.

राग–उपरनो.

कपट क्रियामां पाप घणुं छे, मुख मधुर मन कातीरे;
बक शान्ति कपटी मन धारे, कपट कळायुत घातीरे. कपट. १
कपटे तप जप किरिया निष्फल, मौनपणुं पण खोटुंरे;
गगन उपर चित्रामनी पेठे, कपटीनुं सहु छोटुंरे. कपट. २
काष्ठ परे सुकाइ जावे, तो पण कपटी चूरोरे;
कपटीनुं छे काळुं मनडुं, पर निन्दामां शूरोरे. कपट. ३
फल किंपाकना सरखो कपटी, अहि सम संग निवारोरे;
बाहिर जुदु अन्तर जुदु, तेनो संग निवारोरे. कपट. ४
आप स्वार्थमां निशदिन रातो, धर्मि डोळ जणावेरे;
बुद्धिसागर आत्मज्ञानथी, समजी साचुं पावेरे. कपट. ५

हे आत्मा तुं वस्तुतः सिद्ध छे.

राग उपरनो.

शुद्ध बुद्ध हुं सिद्ध सनातन, जिनवर शिवमय काशीरे,
सत्तार्थी तुं त्रिभुवन स्वामी, चिदानन्द पद वासीरे. शुद्ध १

शिव ईश्वर पुराण महोदय, शुद्धद्रव्यथी न्यारोरे;
रत्नत्रयी विश्रामी नामी; गुण पर्यायाधारोरे. शुद्ध २
अविनाशी अकलंक स्वरूपी, परम मंगल पद धारीरे.
नित्य निरंजन निर्भय देशी, अक्रियने अणाहारीरे; शुद्ध. ३
परपुद्गल कर्ता हर्ता नहि, सहजस्वरूप सुखकारीरे;
आनन्दघननी मोजमझामां, रमण करु जयकारीरे. शुद्ध. ४
निश्चयनय एम मनमां द्वारी, व्यवहारे व्यवहारीरे.
बुद्धिसागर परम ज्योतिमां, मंगल पद घट धारीरे. शुद्ध. ५

गाडरीया प्रवाहनी अंधाधुधी.

राग उपरनो.

गाडरीया प्रवाहमां दुनीया, अंधाधुधी चालेरे;
सत्य वातनो शोध करे नहि, मन माने त्यां म्हालेरे. गाडरीया. १
सूक्ष्म बुद्धिवण गहन वातने, समजे नहि अज्ञानीरे;
आपमति त्यां युक्ति खेंचे, समजे शुं ते प्राणीरे. गाडरीया. २
सर्वज्ञ वाणीने गुरुगम, समज्या वण दुःख खाणीरे;
परम बोध प्रगटे नहि मनमां, समजे कोइ जिन वाणीरे.गाडरीया. ३
ज्ञान विना नहि भान लहे निज, अज्ञानी बहु भटकेरे;
सद्गुरु वाणी न मनमां धारे, लक्षचोराशी अटकेरे. गाडरीया. ४
अज्ञानी पशुसम अवतारी, ज्ञाने ते सुधरेछेरे;
बुद्धिसागर शुद्ध दशा लही, परमानंद वरेछेरे. गाडरीया. ५

आपवडाइ.

राग उपरनो.

आप वडाइ जे जन बोले, तेह टकाने तोलेरे;
आप वडाइ जे जन मारे, पुस्तक जलमां बोळेरे. आप. १
आप वडाइ गुण नवि संचे, अभिमान मन आवेरे;
निजगुण निजमुखथी नव बोले, ज्ञानी जन एम गावेरे. आप. २
आप वडाइ त्यां हलकाइ, समजो नरने नारीरे;
हुं त्यांथी सद्गुण छे आघा, उच्चदशा नहि धारीरे. आप. ३
उत्तम जननी नीति उंची, करे न आप वडाइरे;
उगे सूर्य सहु हर्ष धरे छे, बोल्या वण सुखदाइरे. आप. ४
मोटाइथी जलधर गाजे, त्यारे जल नहि वरसेरे;
बुद्धिसागर रहे न छानो, सूर्य उग्यो झळहळशेरे. आप. ५

शा माटे चिंता करवी.

राग उपरनो.

शा माटे अरे चिंता करवी, चिंता दुःख वधारेरे;
चिंताथी चतुराई टळे छे, जीवंतां अहो मारेरे. शा माटे. १
चिंता चितासम दुःखदाई, धैर्य त्यजावे भारीरे;
चिंतातुरने सत्य न सुझे, जोशो चित्त विचारीरे. शा माटे. २
चिंता कर्म वधारे पुष्कल, चिंता दुःखनी क्यारीरे;
चिंतासागरमां जे पडिया, नीच गति अवतारीरे. शा माटे. ३
चिंता कारण मोह खरो छे, चिंताथी नहि शांतिरे;

चिंता अग्नि मन पर बाळे, प्रगटे दुःखकर भ्रान्तिरे. शा माटे. ४
ज्ञान धैर्यथी चिंता नासे, प्रगटे छे हुंशियारीरे;
बुद्धिसागर अवसर आवे, धैर्य धरो नरनारीरे. शा माटे. ५

क्लेश त्याज्य छे.

राग उपरनो वा. प्रभात

क्लेश तजो अरे क्लेश तजो भव, क्लेशे अशुभ कठोरे;
क्लेशे घर पोतानुं भूंडुं, दुःखना द्वन्द्व प्रकटे क्लेश. १
क्लेशे वैर विरोध वधे बहु, सुख दहाडा परवारे;
क्लेशी जन संसारे कडवो, आप मरे पर मारे क्लेश २
क्लेशे कुटुंबमां नहि शान्ति, नातजातमां ओनारे;
बळता अग्नि सम छे क्लेशज, पडता निज सुख पोतारे. क्लेश. ३
क्लेशे देश राज्य अपक्रान्ति, धर्म राज्य अपक्रान्तिरे;
क्लेशे फाल्युं ज्यां त्यां दीठुं, क्लेशे बहु विष भ्रान्तिरे. क्लेश ४
क्लेशी जन पर दुःखनां वादळ, क्षणमां मारा मारीरे;
बुद्धिसागर शिक्षा पामी, क्लेश तजो नरनारीरे. क्लेश ५

ज्ञानी.

छप्पय छंद.

सत्य ज्ञानी छे तेह खरेखर समता राखे,
उलट आंखथी ध्यान धरी सुख रसने चाखे;
करे उपाधि दूर खरेखर मननी सघळी,
परिहरे छे दुःखकर सघळी चिंता सगळी;
द्रव्य क्षेत्रने काळ भावेज वस्तु धर्मने जाणतो,
दुर्गुणो सहु दूर करीने सद्गुणो मन आणतो. १
विस्तृतदृष्टि राखी जननुं भव्य विचारे,
सदाचार धरी आप तरेने परने तारे;
कपट क्रियामां रंगातो नहि मोह धरीने,
धामधूममां रंगातो नहि मान करीने;
स्थिरोपयोगे नित्य रहेवे पर रमणता परिहरे,
बुद्धिसागर ज्ञानी जनने धन्य छे सुखडां वरे. २
भणे भणावे ज्ञान ज्ञानिनी छे बलिहारी.
ज्ञानिनो शुभ संग ज्ञानी छे महाव्रतधारीः
ज्ञानी निर्मळ वाण सुणीने सहु जन बुझे,
ज्ञाने सत्य विवेक ज्ञानथी सत्पज सुझे;
ज्ञानी सेवा जे करे ते चिदानंद पदवी वरे
बुद्धिसागर ज्ञानि जनने दुनिया वंदन करे. ३
करो ज्ञानिनुं मान ज्ञानिथी शासन चाले,
करो ज्ञानिनी सेव ज्ञानीजन शिवमां म्हाले;
आत्मज्ञानिनी आण धरंतां सुखडां पासे.
करे कुमतिनो नाश उपाधि सर्व विनाशे;

कल्पद्रुम सुर द्रुमथी अहो ज्ञानी उपकारी बहु,
सम्यक्त्व दर्शन बीज पामे ज्ञानी शोभा शी कहुं   ४
ज्ञानि जनने सहाय करे ते प्रभुता पामे.
ज्ञानिनी बहु भक्ति करे ते ठरतो जावे;
परखे ज्ञानी कोइ जेहने ज्ञान प्रकाश्युं,
परखे ज्ञानी कोइ चित्त समताए वास्युं;
चंद्र सूर्यने मेघथी अहो ज्ञानि महिमा बहु कह्यो,
बुद्धिसागर ज्ञानि संगे आतमा निजपद लह्यो.   ५
पंच महाव्रत धरे हृदयमां समता धारे,
ज्ञानतणुं फल विरति निश्चय एम विचारे;
निश्चयदृष्टि चित्त धरे व्यवहारे चाले,
स्थिरोपयोगे अनुभव सुखमां निश्चय म्हाले;
अनुभवीए अनुभव्युं छे ज्ञानफळ शिव शर्म छे,
बुद्धिसागर सत्य ज्ञानी परम शिवपुर शर्म छे.   ६

कहेणी रहेणी.

छप्पय छंद.

कहेणी सम रहेणी राखे ते वक्ता साचो,
कहेणी सम रहेणी नहि जेनी ते जग काचो;
कथनी कथनारा वर्ते छे जगमां लाखो,
मासाहस पंखी सम कहेणी काढी नाखो;
कहेणी सम रहेणी खरेखर कोइ ज विरला धारता,
बोली वणगां फुंकता ते चेतनने नहि तारता.   १

नीति सद्गुण खरा जगत्मां सहु जन कहे छे,
कहेणी सम रहेणीनी वाटे विरला वहेछे;
धर्म मार्गने जाणीने वर्तनमां मूके,
विरतिनी रहेणीने विरला कदी न चूके
धर्म तत्त्वज्ञ जाणीने जे उच्च वर्तनमां रहे,
बुद्धिसागर तेह साचा सिद्ध शाश्वत सुख लहे. २
थोडी कहेणी रहेणी बहु ते सज्जन डाह्या,
धन्य धन्य ते वीर जगत्मां जननी जाया;
पापानी पेठे पोकारे दया न पाळे,
गद्दानी पेठे भूंके पण दोष न टाळे;
शुद्ध आत्मस्वभावमां जे रमणता करता फरे;
बुद्धिसागर तेज वक्ता धन्य सुगुरु हृद धरे. ३
उपर उपरथी फोनोग्राफनी पेठे बोले,
बोले पण पाळे नहि ते जन रासभ तोले;
ज्यां त्यां भाषण भषाइ करी कशुं न पाळे,
परोपदेशे पंडित जग शुं मे भजवाळे;
सदाचार जेवो नहिने स्वार्थथी ज्यां त्यां फरे,
उच्च सद्गुण प्राप्ति वण ते उच्च आतम शुं करे. ४
जैन मुनिवर ओछा जगमां प्रवीण पाळे,
कहेणी सम रहेणी धारीने ते अजवाळे;
कहेणी सदृश रहेणी धारे जग उपकारी,
तत्पदवीथी एक जगत्मां परोपकारी;
बुद्धिसागर कहेणी सदृश रहेणी धारो ते सदा.
धन्य धन्य ते सा जगत्मां जननी कुखे अवतर्यां. ५

९८

विद्या.

छप्पय छंद.

विद्या सुखनुं मूळ सज्जनो जाणी लेजो,
विद्याभ्यासी सज्जन सत्वर साचुं कहेजो;
सर्व देशमां सर्व काळमां विद्या सारी,
विद्याथी छे सत्य सुधारो जग जयकारी;
सर्व सुखनुं मूळ जगत्मां विद्या शुद्धि ज जाणीए,
विद्वान् जन छे सर्व पूज्य ज सत्य मनमां आणीए. १
सर्वोन्नतिनुं मूळ जगत्मां विद्या साची,
चक्षु विना जेम काया उम्मर तद्दन काची;
मूढपणुं अळगातुं विद्या तेजे जगमां,
विद्यानो शुभराग ज्ञानीने छे रगरगमां;
सर्वभाषा जाणवाथी ज बुद्धि विकसे छे खरी,
उन्नतिने शोधवामां सम्य विद्या जयकरी. २
विद्याथी सर्वत्र पूज्य छे नरने नारी,
विद्याथी नीतिनी वृद्धि छे सुखकारी;
आत्मतत्त्वनुं ज्ञान करावे विद्या साची,
टळे अविद्या विद्यायोगे रहेजो राची;
ज्ञातिधर्म देशोन्नतिमां भव्यविद्या मूळ छे,
जन्मी विद्या ग्रही नहि तो सर्व उमर धूळ छे. ३
घटशी पटती सर्व पिछाणे विद्यायोगे,
तन धन सघळां प्राप्ति छे विद्यायोगे;
विद्याविण जन पशु समाना आर्यो होवे,
विद्या पामे म्लेच्छोदय पण अधुना जोवे;

नीच जन पण उच्च थावे धर्मीने विद्या खरे,
उच्च कूळ पण नीच थावे समजशो सज्जन अरे. ४
विद्यार्थी अवसरने जाणे माणी प्रेमे,
विद्यार्थी सुकृत्य करे छे निश्चय नेमे;
विद्वज्जननी संगति थातां पाप टळे छे,
महामुनिवर ज्ञानी संगे धर्म मळे छे;
वात साची खरेखरी आ सज्जनो मन धारशो,
बुद्धिसागर जिनागमे सहु वस्तु तत्त्व विचारशो. ५

हांसी.

छप्पय छंद.

हांसीथी खांसी प्रगटे छे जगमां भारी,
हांसी जननो घात करावे दुःख करनारी;
परनी हांसी करनारो जन मूर्ख कहावे,
उत्तम जननी शोभा तेथी लेश न थावे;
हास्यथी छे युद्ध भारी वैर वृद्धि छे घणी,
मूढ जनने हास्य प्रगटे होय जे अवगुण घणी. १
हांसी करतां पाप घणुं छे ज्ञानी गावे,
सत्य धर्मनो लोप हांसीथी शिघ्रज थावे;
हांसी परने क्रोध करावे समजी लेशो,
हांसी दुःखनुं मूळ जाणीने दूरे रहेशो;
हांसी करतां जगत् जन सहु द्वेषनुं पोषण करे,
यत्र तत्र अपमान पामे दुःख कारण मन धरे. २

कुटुंबमां कंकास हांसीथी राज्य विनाशे,
आवे दुर्मति पास रहे नहि सुमति पासे;
सदाचरणनो नाश हांसीथी छोकरवादी,
पामे नहि सन्मान कहे जन छे उन्मादी;
हास्य करतां जगत्‌मां अहो दोष अेवि जन कहे,
हास्यमां अहो सार शुं छे उच तेने शुं वहे. ३
वहा हांसी दुर्गुण हेतु परखी लेजो,
परनी हांसी करवामां मन लस न देजो;
परनी हांसी करवामां छे निजनी हांसी,
विद्वज्जन अेरे पाद उपर केम मारे वांसी;
उच सद्‌गुण धारीने अहो सत्य वाणी दिल धरो,
बुद्धिसागर सत्य शिक्षा पामी प्राणी सुख वरो. ४

दया

छप्पय छंद.

दया सर्वथी श्रेष्ठ दयामां धर्म समाया,
दया धर्मनुं मूळ दयाथी सुरनरराया;
दया धर्मथी सुख दयाथी पाप टळे छे,
दया धर्मथी मोक्ष दयाथी पुण्य मळे छे;
द्रव्य भाव बे भेदथी अहो दया जगत्‌मां सार छे,
उच्चमां ते उच भण्यो धन्य तस अवतार छे. १
प्रिय स्वकीय प्राण अन्यनो तेम खरे छे,
पोताने जेम दुःख अन्यने तेम अरे छे;

प्रिय पोताने सुख अन्यने तेमज व्हालुं,
परने नावे दुःख अहो हुं तेमज चालुं।
आत्मशक्ति दयामयी तो मुक्ति करमां जाणशो,
समजीने अहो भव्य लोको दया धर्म मन आणशो. २
पोताना सम अन्य जीवोने निश्चय धारे,
प्राण पडे पण अन्य जीवोने कदी न मारे;
गृहस्थ धर्मने योग्य दयानी रहेणी राखे,
साधु निज पर हेतु दयाथी शिव सुख चाखे।
दया धर्मनी माहात्म्यथी अहो देवता पाणी भरे,
बुद्धिसागर दया वहाणथी जगत्मां सहु जन तरे. ३
दया धर्मनी कहेणी समजे रहेणी राखे,
दया धर्मना सुख खरेखर ते जन चाखे।
दया धर्मनी परोपकारि वृत्ति मोटी,
दया धर्मवण धर्मनी कहेणी लागे खोटी।
दया धर्मवण जगत्मां अहो सुख नहि तलभार छे,
बुद्धिसागर दया धर्मथी जगत्मां जयकार छे. ४
जेवुं वावो तेवुं लणशो दया कर्याथी,
दया धर्मथी उच्च भावना सत्य वर्याथीः
दया धर्मथी परम प्रभुता घटमां जागे,
इंद्र चंद्र नागेन्द्र खरेखर पाये लागे।
दयाना बहु भेद भाख्या एक पण जे आदरे,
बुद्धिसागर सिद्ध पदवी प्राणी ते प्रेमे वरे. ५
दया धर्ममां उच्च खरेखर जूठ न बोले,
दया धर्ममां उच्च खरेखर कूट न तोले;
ब्रह्मचर्यना भेद दयामां सर्व भळे छे,

पन मूर्खनो त्याग दयामां सर्व मळे छे;
स्वकीय परना शर्म माटे दया जगत्मां श्रेय छे,
बुद्धिसागर दया धर्मथी परम शर्म हमेश छे. ६

वेश्या संग.

छप्पय छंद.

वेश्या संगे पाप जगत्मां मोटुं भाख्युं,
वेश्या संग कर्याथी मूर्खोए दुःख चाख्युं;
वेश्या संगी वित्त विनाशे भलुं न जोवे,
निज पत्नीनो प्रेम हणीने मूरख होवे;
कुटुंब घर निज देशनी अहो अवनतिनुं घर अहो,
जगत्मां ते मूर्ख मोटो हृदयमां समजी रहो. १
वेश्याना नाचे मोह्या ते ल्हे गुन्हारी,
कूतर सम तेनी वृत्ति जोशो नरनारी;
वेश्याना घरमां जावाने हृदय निवारे,
पण समजे नहि मूर्ख सत्यने नहीं विचारे;
वीर्यकीर्तिनो नाश थावे मोहथी ते करगरे,
धिक् तस अवतारने अहो समजीने नहि आचरे २
करे आयुनो नाश लोकमां मान न पामे,
वेश्या संगी अहो जगत्मां ठरे न ठामे;
वेश्यानो शो प्यार विचारी जोशो प्राणी,
करे देशनो नाश वात नहि कोई अजाणी;
जीवननी साफल्यताने टेकथी करशो अहो,

ब्रह्मचर्यनी रुचि धारी जगत्मां सुखकर रहो. ३
अंठ समो वेश्यानो संग करे ते खोटो,
वेश्या संगे निश्चय आवे छे बहु तोटो;
वेश्या संगे शरीर कांति घटशे नक्की,
वेश्या संगे अल्प आयुनी समजो वकी।
संग वेश्यानो जे करे ते कार्य सारुं शुं करे,
देश दोलत धर्म खोवे दुःखना दहाडा वरे. ४
वेश्या संगी अज्ञाने दुःखमां सपडातो,
अल्प सुखने हेत मीन ज्युं गोळी खातो;
वेश्या संगे अनेक जीवो संपत् हार्या,
वेश्याए लक्ष्मीना लोभे जन बहु मार्या;
त्याग वेश्यानो करीने शीयलमां जे मन धरे,
बुद्धिसागर धन्य ते नर सिद्ध शाश्वत सुख वरे. ५

परनारी संग.

छप्पय छंद.

परनारीनो संग करे ते कर्म वधारे,
परनारीनो संग करे ते धळने हारे;
परनारीनो संग करे ते ठरे न ठामे,
परनारीनो संग करे ते दुःखडां पामे;
परनारी संगे जे रम्या ते दुःख रौरव भोगवे,
परनारी संगी जे जनो ते चित्त आव्युं ते लवे. १
परनारीना प्रेमे रावण राजा हार्यो,

वस्त्राकर्षक कीचकने तो भीमे मार्यो;
परनारी संगे जन दुःखी ज्यां त्यां होवे,
परनारीना फंद फसीने अंते रोने;
चित्त वीर्यने माननो अहो नाश थावे छे खरो,
किंपाक फळने भखतां तो प्राणिया अंते मरो. २
लंपट लुच्यो परनारीना संगे थावे,
कीर्तिनो धूमाडो करीने कांइ न पावे;
लागे कुळ कलंक लोक जन म्हेणां मारे,
आयुः माणनो नाश पामीने नरभव हारे।
परनारी संगे घात थावे केदमां पडतो अरे,
क्षणिक भ्रांति सुख माटे सत्य धर्मने परिहरे. ३
परनारीनी संगे रोगो केडक थावे,
चित्त न ठरतुं ठाम भटकतुं ज्यां त्यां भावे;
चिंता शोग विकार दोष बहु पेहेला प्रगटे,
कायानुं वहुं जोर सत्वर पेहेलुं विघटे;
लक्ष्मीपत्नी तोरमां जे विषय संग म्हालता,
पर त्रियानो संग करीने दुःख पंथे चालता। ४
परनारीनी संगत बूरी शास्त्र कहे छे,
परनारीथी हसतां मानव आळ सहे छे;
परनारीनी संग कुळमां आग पडी,
करो मोहने दूर धर्मना दुश्मन कह्यो;
पर त्रियाना पाशमांहि पशु परे जे जन रह्या,
हाय हाय करता अरे ने दुःखना दहाडा सह्या. ५
परनारीनी संगे चेतन शक्ति हणाती,
परनारीनी संगे मनमां कुमतिव्हाली;

परनारीनी संगे जगमां कोण उगरीया,
परनारीनी संगे सुखडां कोइ न वरिया;
परनारी त्यागे धन्य ते नर द्रव्यभावे वेश छे;
बुद्धिसागर वचन सिद्धि परम सुख हमेश छे. ६

समाधिलय.

धीराना पदनो राग.

समाधिलय लागीरे, आनंदघन परखायो;
झळहळ ज्योति जागीरे, चिदानंद घर पायो;
धरी धारणा ध्यान धर्युं निज, तन्मयता थइ आज;
ब्रह्मरन्ध्रमां आसन पूर्युं, पाम्यो भुवननुं राज;
सुखसागरनी ल्हेरोरे, देखी बहु हरखायो. समाधि. १
हरवुं फरवुं खावुं पीवुं, करूं सर्व व्यवहार;
अन्तर सुरता अन्तर रहेती, लय लागी निर्धार;
उलटी आंखे देख्युंरे, कदी न जायो हुं आयो. समाधि. २
जन्म मरण नहि मुजने जाण्युं, निश्चयनयथी वेश;
कर्मलगी व्यवहारदशा छे, आनंद ध्याने हमेश;
सिद्ध बुद्ध स्वामीरे, दया गंग घट न्हायो. समाधि. ३
त्रिपुटी काशीनी अंदर, निर्मल आतम ज्योत;
आतम शंकर महादेवजी, देखतां उद्योत;
मनना मेळा मळीयारे, आनंद रोम रोम छायो. समाधि. ४
जाण्युं अनुभव्युं मन निश्चय, छुं आनंद स्वरूप;
समभावे अन्तरमां खेले, नावे भवभय धूप;
क्षयोपशमना ध्यानेरे, बुद्धिसागर घट आयो. समाधि. ५

सदाचार.

छप्पय छंद.

सदाचारथी उच्च खरेखर सर्वे थावे,
सदाचार वण उच्च जाति पण नीच कहावे;
सदाचारथी नीच जनो पण उच्च विचारो,
सदाचार वण धर्म खरेखर ढोंग ज धारो;
सदाचार त्यां धर्म साचो समजशो समजु जनो,
अशुभ आचारो तजी श्रेष्ट सदाचारी श्रेष्ट बनो. १
सदाचार वण सन्त न शोभे ज्ञानी ध्यानी,
सदाचार वण प्रभुपूजा पण कर्मनिशानी;
सदाचार वण ज्ञातिवंश ने कूळ न शोभे,
सदाचार वण दुष्ट विचारो कदी न थोभे;
सदाचारथी जाणशो अहो जगतमां कीर्ति खरी,
सदाचारथी योग्य पुरुषे शर्मलीला वर वरी. २
सदाचार वण पोपट सम अहो विद्या परखो,
सदाचारिजन देखी भव्यो मनमां हरखो;
सदाचारिनुं ज्ञान खरेखर समजो साचुं,
सदाचार वण ज्ञान खरेखर समजो काचुं;
धामधूम पण सदाचार वण शोभती नहीं छे जरा,
सदाचारने पाळता जन धन्य जगमां अवतर्या; ३
सदाचार वण धर्म क्रियाथी ढोंग जणातो,
सदाचार वण ढोंगी अंते दुर्गतिमां जातो;
सदाचार वण शेठ न शोभे वेठ बरोबर,
सदाचार वण सन्त न शोभे जगमां दुःखदर;

सदाचार वण चोरनीश जगत्मां भमती रही,
धामधूमे पूर्ण राच्या सदाचार वण सुख नहीं. ४
सदाचार वण नगर शेठिया नीच कहाया,
सदाचार वण धामधूममां ढोंग कराया;
सदाचार वण भक्ति नकामी शुष्क विचारो,
टीलाटपकां करो हजारो पण नहि आरो;
सदाचारथी जय थाता जगत्मां सहु जन कहो,
बुद्धिसागर सदाचारमां भव्य जन रामी रहो. ५

नगरशेठ पुत्रो.

छप्पय छंद.

नगरशेठना पुत्र थइ फेर धर्म न पाळे,
नाम मोटुं पण दर्शन मुंडुं शुं अजुवाळे;
नगरशेठना पुत्र अहो केइ छूतर पाळे,
छूतर संगी जन्मी खरेखर सत्य न भाळे;
ढोंगी जनथी प्रेम करता छेल छबीला थइ फरे,
श्वान सरखी हिंमत नहि मन पापळा केइ अवतरे. १
धर्म क्रियाने व्हेम कहीने कांइ न करता,
नहि देशनी दाझ लाजवण ज्यां त्यां फरता;
साधु गुरुनी पासे जातां बहु शरमाता,
परनारी वेश्याना संगे मन मकलाता;

जनक जननी नमन करे नहीं टाटमाटमां मन रहे,
धर्म कर्मनी गमत नहि धरे धर्म करणी शुं करे. २
दारमां बेमान रहे मन भाव्युं थांडे,
नहि मधुरर नेम पोरवार टका नांडे;
छोक बातणी धर्म करे छे मग न धारे,
हिंदी धर्मनी शास्त्र वरणविने मारे धारे;
पापमूर्धमां रही पडे छे सदाचारने परिहरे.
मसू उपर नहि नेम किंचित तरमींने ते शुं करे ३
नगारंडेदना पुत्र अहा हा धर्म कर छ
नगारंडेदना पुत्र अहा हा पुण्य कर छ
नगारंडेदना पुत्र अहा हा धर्म पुण्य छ
नगारंडेदना पुत्र अहा हा ज्ञान धन छ,
नगारंडेदना पुत्र [illegible]
सदाचारमां [illegible] ४
[illegible]
धर्म [illegible]
[illegible],
धर्म [illegible],
[illegible]
[illegible]

आत्मशक्ति खीलववी.

व्हाला वीर जिनेश्वर–ए राग.

खरेखर शक्ति अनंति चेतननी वखणायछेरे,
ध्यानथी शक्ति अनंति अंश अंश प्रगटायछेरे;
आत्मज्ञानथी ध्यान धरो घट, अनुभव अमृत स्वाद लहो झट;
आत्मनुं सुख अनंतु ध्यान विना न जणायछेरे, खरेखर. १
बाह्यदृष्टिथी बाह्य धसो छे, आत्मदृष्टिथी मांह्य वसोछो;
दृष्टि जेवी तेवा मानव थायछेरे, खरेखर. २
रत्नत्रयीनो धर्म खरो छे, अनुभवीए मनमांहि वर्यो छे;
रत्नत्रयी वण कूलाचार गणायछेरे, खरेखर. ३
बाह्य क्रियाथी केईक राच्या, साध्य शून्य थई केईक माच्या;
आत्मज्ञानवण सत्य अरे न ग्रहायछेरे, खरेखर. ४
आत्मज्ञानथी शक्ति प्रकाशे, आनन्दमय जीवन झट भासे;
जिनपद निजपदनो त्यां ऐक्यभाव वर्तायछेरे, खरेखर. ५
जे जाणे तेने छे प्रीति, आत्मज्ञानथी जाय अनीति;
प्रेमे बुद्धिसागर शाश्वत सुख प्रकटायछेरे. खरेखर. ६

दुःख समयमां समता.

व्हाला वीर जिनेश्वर–ए राग.

अरे जीव दुःख समयमां समता मनमां धारजेरे,
दुःखनुं कारण जाणी मूर्छा तेह निवारजेरे;

धीरवीर धारे नहि ममता, सम विषममां धारे समता;
चेतन चेतनभावे जडमां जडत्व ग्रहायछेरे, सुखना. ३
समनिस्सरणिथी शिव महेले, चढतां अनहद आनंद रले;
शुद्ध समाधि चेतन घर परखायछेरे, सुखना. ४
पुद्गलमां छे दुःखना दरिया, अनंत सुख चेतनमां भरिया;
प्रेमे बुद्धिसागर परमानन्द हृदयमां ग्रहायछेरे, सुखना. ५

परोपकार.

छप्पय छंद.

प्राण लक्ष्मीने सत्ताथी उपकार भलेरो,
धन्य धन्य उपकारीनो जगमांहि घेरो;
सूर्य चंद्र घन पृथ्वी सरखो उपकारी जन,
दुःख पडे पण उपकृतिने धरशो सज्जन;
तृणथकी पण तुच्छ मानुं अनुपकारी जन अरे,
तृण रक्षण करे पशुनुं भीरु जननुं जग खरे. १
आत्मार्थे तो सर्व जनो जगमांहि जीवे छे,
आत्मार्थे तो सर्व जीवो शीत नीर पीवे छे;
परोपकारे जीव्यो ते जगमांहि वखाणुं,
अनुपकारी पामर जीवन बेश न जाणुं;
उपकृतिथी शून्य जीवनुं जीवन निष्फल जाणवुं,
समजीने अरे भव्य जीवो सारुं मनमां आणवुं. २

धरी भावना चार कर्मना फन्द निवारे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावे शुद्दिधर्मने आदरे,
अचळ श्रद्धा अचळ भक्ति धर्मनी लही सुखवरे. ३
धरे प्रभु पर प्रेम गुरुनी भक्ति करे छे,
सदाचारथी पाछो अरे ते नहि फरे छे;
सब सुधारा करे कुधारा दूर करीने,
प्रभु आज्ञानो लोप करे नहि प्रेम धरीने;
सत्य प्रभुनो धर्म पाळे सत् क्रियाओ सहु करे,
फ्लेश कजीया परिहरीने धर्म रीति दिल धरे. ४
करी शक्तिनो तोल बळाबळ कार्य करे छे,
आत्मिकशुद्धस्वभाव दृष्टिथी शर्म वहे छे;
वंदे गुरुना पाय गुरुनी आज्ञा पाळे
करी धर्म अभ्यास दोषना वृन्दने याळे;
धन्य धन्य ते पुत्र सारा जननी कुखे अवतर्या,
बुद्धिसागर अनेकान्तनयज्ञानपाथेधि भर्या. ५



पितृलक्षण.

छप्पय छंद.

करे कुटुंब प्रतिपाळ न्यायथी वित्त वधारे,
करे सुधारा बेश कुधारा दूर निवारे;
दया सत्य धरी चित्त शक्तिनो तोल करे छे,
उच्चभाव धरी बेश अनीति दोष हरे छे;

पिताना जे योग्य धर्मो साचवे संपद्वरे,
बुद्धिसागर जनक साचा सत्य करणी जग करे. ६

जननी प्रशंसा.

छप्पय छंद.

माता ते कहेवाय मजानुं पालन करती,
पुत्र पुत्री पर प्यार धर्म निज सहु अनुसरती;
करे न कजीया क्लेश द्वेष नहि धारे मनमां,
पतिव्रता व्रत धरे सदा गुणकारी तनमां;
आवक देशने काळ जाणी खर्च करती विवेकथी,
भणे भणावे पुत्र पुत्रीओ वर्तती शुभ टेकथी. १
पति आज्ञा धरे शिर विचारी वाणी बोले,
हिताहित जे कार्य विचारी सत्यन तोले;
क्षण क्षण करे न क्रोध बोध बाळकने आपे,
दुखी जनने सहाय करी दुःखडाने कापे;
धर्म उपर सद्म श्रद्धा गुरुदेव भक्ति करे,
कुंटुंबनो निर्वाह करती अशुभ स्थाने नहि फरे. २
करे पतिने सहाय सुधारा नागाधारे,
भौडा बोले बोल कदि नहि जीवने मारे;
संकटमां धरे धैर्य आळ पण आव्युं सहती.
कर्म करे ते थाय विचारी समता वहती.

धर्म अर्थने काम मोक्षनी चौवट राखे घोगणी,
सत् कथाओ करे सदा ते जननी छे सोहापणी. ३
सगां संबंधी साथ संपथी निशदिन चाले,
अवसरनी बहु जाण शुभाशुभ कार्य निहाळे;
नवरी रहे न वेश वेष धारे गुणकारी,
गंभीरता धरे दिल वहे जे शुभ हुंशियारी;
धर्म करतां धाड आवे तोपण धर्म न त्यागती,
देवगुरुने नमन करती रात्री पहेली जागती. ४
द्विधा केळवणी वेश बाळकने प्रेमे आपे,
सदाचार धरे वेश मजानुं संकट कापे;
करे दया उपकार संपीली सहुनी साथे,
सत्य प्रभु विश्वास धरे आज्ञा निज माथे;
धन्य धन्य ते जननी जगमां स्वपर हित करती रहे,
बुद्धिसागर जननी शिक्षा पामी सर्वे सुख लहे. ५

पुत्री प्रशंसा.

छप्पय छंद

पुत्री ते कहेवाय धर्मनी श्रद्धा धारे,
जननी शिर धरे चित्त नीतिपर प्रेम वधारे;
देशकाळ निज धर्म विचारी वेष धरे छे,
अपकीर्ति नहि थाय योग्य ते स्थान फरे छे;
बहुविध केळवणी लहीने उन्नति करे आपनी,
उपकारीने चित्त आणी भक्ति करे मावापनी. १

भणेगणे देह नित्य रहे नहि क्लेश करीने,
संपी रहे सहु साथ हृदयमां प्रेम धरीने;
सर्व साहेली साथ प्रेमथी वर्ते निशदिन,
सदाचारमय अंग सुजनना जेवा छे मन;
सर्व जीवनुं भव्य इच्छे दया हृदयमां धारती,
यतनाथी सहु कार्य करती त्रसजीवो नहि मारती.
धार्मिक विद्या धरे हृदयमां श्रद्धा राखे,
मातपिता गुरु देव विनयथी शिवसुख चाखे;
विकथानो करी त्याग क्लेशमां कदी न पडती,
करे दान बहु शील करे निज धर्मनी चडती;
शिक्षा धारे धैर्यधारी सर्व विद्या जाणती,
सर्व दोषो परिहरीने धर्म उदगार आणती. ३
कुटुंब जाणीने देशनुं जे भव्य विचारे,
दीपावे कुळवंश सर्वनुं दुःख निवारे;
नीतिथी सहु उच्चसूत्र ने साचुं धारे,
दुःखिजन उद्धार करे ते निजने तारे;
धर्म सेवा साधवेने जननी आशा पाळती.
अशुभ विचारो मनथी मेले धैर्यथी दूर त्यागती. ४
सारां कार्यो कार्य धर्मनां सकळ विचारे,
यथाशक्ति अनुसार सत्यनी सेवा सारे;
एक नहि कोइ साथ हृदयमां ममता राखे,
साथ सकल स्याद्वाद धर्मनो अनुभव चाखे;
धन्य पुत्री जगतमां जे धर्म कृत्यो बहु करे,
बुद्धिसागर एव विवेकी जगतमां सुखडां वरे. ५

मित्र सद्गुण धारतो मन उच्च जीवन गाळतो,
बुद्धिसागर मित्र सज्जन सर्वनां दुःख टाळतो. ४

हितवचन.

छप्पय-छंद.

करो क्रियानुं कष्ट ज्ञान वण धर्म न परखो,
उपर उपरनी शून्य क्रियाथी लेश न हरखो;
अन्तरना उपयोग विना नहिं कर्म टळे छे,
अन्तरना उपयोग विना नहि मुक्ति मळे छे;
माळा मणका फेरवो पण ज्ञान विना नहि मुक्ति छे,
आत्मज्ञाने सहज शांति ध्याननी त्यां युक्ति छे. १
पूजानां पाखंड करो पण सुख न मळशे,
टीलां टपकां करे अरे कंई कर्म न टळशे;
मननी स्थिरता थया विना सुखडां नहि पावे,
बाह्य वेशने क्रिया कपटथी धर्म न थावे;
अन्तरमां यदि धर्म छे तो बाह्य क्लेशे शुं थयुं,
अन्तरमां यदि धर्म नहि तो बाह्य क्लेशे शुं रह्युं. २
सम्यग् नहि आत्मार्थपणुं तो मौन रहे शुं,
सम्यग् यदि आत्मार्थपणुं तो वचन वदे शुं;
हृदय सरळ नहि यदि तदातो क्रिया करे शुं,
हृदय सरळ यदि नित्य सदा तो क्रिया करे शुं;
धर्म पार्यो नहि हृदय तो ढोर हरायां सम गणो,
जाण्युं तो केम भटकवुं अरे तत्त्व विया दिल भणो. ३

गुरु गुरु करी बहु भटायापी पार न आवे,
गुरु मळ्या यदि आत्मज्ञानी तो अन्य न जावे;
जाण्युं जो यदि आत्मरूप तो तीर्थे न रहेवुं,
जाण्युं यदिहि आत्मतत्त्व तो शिर सुप वहेवुं;
समानदृष्टि सर्व जीव पर आनंद उभरा घट अहो,
बुद्धिसागर समजे ज्ञानी तत्त्वमां निर्भय रहो. ४

धर्मभेद

छप्पय छंद.

धर्म भेदमां खेद घणो छे विना विचारे,
धर्म भेदमां घसी पडया केइ कर्म वधारे;
दया धर्मथी दूर रहीने पक्ष ज ताणे,
अनेकान्तनयवस्तु विचारे सत्य ज जाणे।
म्हारु त्हारु करी घणा जन क्लेश कजीया बहु करे,
युक्तिथी निज पक्ष ताणी हठ कदाग्रह मन धरे १
सत्ता तर्कनी शक्ति विशेष पक्ष सबळ छे,
सत्ता तर्कनी शक्ति अभावे पक्ष अबळ छे;
उदय जेहनो ते जन फावे पक्ष वधारे,
जल तरंगो पेठे कोइ न कार्य सुधारे;
जन्म्या त्यारे कंइ नहिने भण्या गण्याथी मत पडया,
ज्ञाननो नहि दोष तेमां मोह योगे लडथडया. २
जे जे पासे जइ पुछो ते कहे निज साचुं,
बाकीनुं सहु जूठ बतावे छे बहु काचुं;

आप आपनो पक्ष वधारे मत रंगाणा,
तर्क शक्ति अनुसार करे छे ताणंताणा;
हठ कदाग्रह पोषवाने अन्य दोषो उच्चरे,
भाषानो बहु डोळ राखे कोइक साचुं अनुसरे. ३
बाह्य क्रियाना भेद अनेको नजर पडे छे,
करीने ताणंताण अन्यने बहु कनडे छे;
साधनयोगो बाधक रूपे करता प्राणी,
आत्मधर्मनी वात हृदयमां लेश न आणी;
हेय वातो आदरे छे उपादेयने त्यागता,
अनुभवामृत परिहरीने मोह भिक्षा मागता. ४
एक एकनो पक्ष उथापे मनमा माचे,
धामधूममां धसी पडीने मन बहु नाचे;
अनेकान्तनय पक्ष विचार्या वण सहु भूल्या,
समता राख्या विना जगत्मां सहु जन झूल्या.
सापेक्षदृष्टि मन रहे तो पक्षपात हणाय छे,
बुद्धिसागर नय अपेक्षा समजुने समजाय छे; ५

दयाभाव.

छप्पय छंद.

दयाभाव नहि चित्त अरे ते वयाथीज उंचो,
दयाभाव नहि हृदय अरे ते निशदिन नीचो;
दयाभाव नहि हृदय अरे धर्मीन शानो,
दयाभाव नहि हृदय अरे ते मूढ पिछानो;

टीलां टपकां बहु करे ने माळा अंगे धारतो,
धर्म ढोंगी करी न निर्मळ दुःख जीवने आपतो. १
प्रभु दर्शननी दाझ धरे पण जरा न मूके,
नाम प्रभुनुं मुखथी बोले मुखथी चूके;
घंट वगाडे प्रभु भजनमां कपट न त्यागे,
दुःखी उपर नहि दया तो दरशन मागे;
भलुं करे नहि अन्यनुं त्यारे भक्त नामे शुं थयुं,
गर्दभ उपर रत्न पोठी ज्ञानवण त्यां शुं रह्युं. २
जो ईश्वर तुं नाम प्राथना मुखथी बोले,
पशु पक्षीना भक्ष थाय न एथी तोले;
सर्व जीवना नाश करीने हिंसक थावे,
जो ईश्वर तुं नाम मुखथी अरे जणावे;
प्राथना प्रभुनी करे बहु पाप कृत्यो बहु करे,
इश तेने कर्म नाखे नरकमां न अवतरे ३
दया दया पोकार्याथी थाइ काइ न वळतुं.
दया कर्या विण पाप कर्मनो नाश न टळतुं;
सर्व जीवनी दया करे न सम विचारी,
मनथी पण कोइ नारे न पाप कीधां सुधारी;
दया धारवा जगत सघळुं कुटुंब मानो छे अहो.
बुद्धिसागर दया विचारी एथी शिवसुख लहो. ४

भलुं करनार.

छप्पय छंद.

भलुं करे ते भक्त जगत्मां संपत् पामे,
भलुं करे ते भव्य जगत्मां ठरतो ठामे;
भलुं करे ते नदी चंद्र सम जगमां प्यारो,
भलुं करे ते सुजन अन्य सहु दुर्जन धारो;
सर्व जीवनुं भलुं करे ते धर्मी साचो जाणशो,
धर्म झघडा जे करे ते भला न जगमां आणशो. १

भलुं सर्व करनार दयाथी मन उभरातो,
भलुं सर्व करनार खरेखर उत्तम थातो;
भलुं सर्व करनार खरेखर पूज्य गणातो,
भलुं सर्व करनार भक्तमां मुख्य भणातो;
सर्व जीवनुं भलुं करे ते उच्च जाति विचारीए,
भलुं कर्यामां भाव साचो राखी चेतन तारीए. २

दुःखि जीवनुं भलुं करे नहि ते केम धर्मी,
सर्व जीवनी घात करे ते होय अधर्मी;
मुख थकी प्रभु नाम रटेने मनमां काती,
स्नान करे शतवार पापमय वर्ते छाती;
भलुं करे शुं अधमजीवो नास्तिको भवमां भमे,
पापमां सहु जीवन जातुं रौरव दुःखडां ते खमे. ३

भलुं करे तें जीव जगत्मां जन्म्यो सारो,
भलुं कर्या वण जीव जगत्मां जाण नठारो;
धिक् तेनो अवतार स्वात्म पर भलुं न कीधुं,
धिक् तेनो अवतार जन्मीने सत्य न लीधुं;

दुर्जननुं पण दया भावथी भव्य विचारे,
स्वार्थ धरीने अन्य जीवोने कदी न मारे;
बोले निशदिन सत्य चोरीथी दूर रहे छे,
उत्तम तेनी जाति भावना उच्च लहे छे;
प्रभु गुरुनी भक्ति करतो चिदानंद राजी रहे,
बुद्धिसागर जाति उत्तम सदाचरण ज्ञाने वहे. ४

गुरुनिन्दा.

छप्पय छंद.

गुरु निन्दाथी नाश कूळनो प्रथम विचारो,
गुरु निन्दाथी मूढ वन्या केइ दिलमां धारो;
गुरु निन्दाथी वित्त विनाशे ज्ञान न प्रगटे,
गुरुनिन्दाथी उच्चमति पण क्षणमां विघटे;
सद्गुरु निंदक जनोनुं चित्त ठामे नहि ठरे,
नीचमां पण नीच निंदक चतुर्गतिमां अवतरे. १
गुरु निंदा करनार बुडे ने अन्य बुडाडे,
गुरु निंदा करनार भमे ने अन्य भमाडे;
गुरु निन्दा करनार पापनो पुंज ग्रहे छे,
गुरु निन्दा करनार दुःखना दीन लहे छे;
गुरु निन्दा करनारनुं अहो पाप जीवन जाय छे,
उपकार घातक जाप भवमां भटकीने दुःख पाय छे. २
गुरु निन्दा करनार खरेखर अधम कह्यो छे,
गुरु निन्दा करनार खरेखर दुःख लह्यो छे;

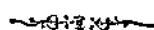
गुरू निन्दा करनार पापी दुनार छे माथा,
गुरू निन्दा करनार पापी उपर छे टाणा।
गुरुनी निंदा पाप मोटुं गुरु भजीने वारीए,
बुद्धिसागर मग्न समभी जप सद्गुण धारीए. १

कलंक पाप.

छप्पय छंद.

आळ चडावे जेह अधम नर पापी पूरो,
धरे साधुनो वेश तोय पण पाप सनूरो;
परने देतां आळ अन्यना प्राणज लीधा,
परने देतां आळ पापमय प्याला पीधा;
परने आळ चडाववाथी घातकी नर घोर छे,
पर पोतानुं कार्य बगडे जगत्मां महा चोर छे. १
परने आळ चडावे ते नर परभव दुःखी,
परने आळ चडावे ते जन थाय न सुखी;
आळ चडावे जे जन तेनुं मुखडुं काळुं,
आळ चडावे ते जन साचुं द्रुम कंटाळुं;
रीस इर्ष्या लोभथी अहो कलंक जेह चडावतो,
वावे तेवुं लणे ते न्याये करणी परभव पावतो. २
कलंक चडावे पापभोगी ते खूब नठारो,
आळ चडावी पापे नहि अंते भव आरो।
कसाई जेवो कलंक चडावे ते नर होवे,
परना प्राण हरे ने पछी ते निमना सोवे;

आळ देतां जे न अटके तेह पापी जाणवो,
कर्म आधीन जीव जाणी दयाभाव मन आणवो. ३
कलंक चढावे तेमां सघळा दोष प्रवेशे,
कलंक चढावे ते जन ठरीने ठाम न बेसे;
धिक तेनो अवतार कलंक चढावे कुरु,
धिक् तेनो अवतार दोषनुं घर छे पुरु;
कलंक दाता दुःख पामे जाणी दोषन परिहरो,
बुद्धिसागर सत्य समजी मोहपाथोधिं तरो. ४



सहुनुं सारुं इच्छो.

छप्पय छंद.

इच्छो सहुनुं वेश द्वेष मनमांथी काढी,
इच्छो सहुनुं भव्य वैरनी वल्लि बाढी;
सर्व जीवो मुज मित्र चित्र तेमां शुं देखुं,
जेवुं मारुं इष्ट तेवुं हुं सहुनुं लेखुं;
सारु इच्छो सर्वनुं मन चित्त शुद्धि उपाय छे,
सारु इच्छे सारु थाशे मलीन बुद्धि जाय छे. १
शुभ इच्छक जन उच्च विचारे धर्म वरे छे,
शुभ इच्छक जन भव्य मोहाब्धि शिघ्र तरे छे;
शुभेच्छक जन आप तरेसे परने तारे,
उच्च नीचनो भेदभाव सहु दूर निवारे;
भलुं करंतां अन्य जननुं कठीण कर्म हणाय छे,
प्रेम भक्ति लीलवणी शुभ धर्म मर्म जणाय छे. २

क्लेश न करीए पंडित साथे विद्या जावे,
क्लेश न करीए शिक्षक साथे सद्गुण जावे;
क्लेश करीए नहि कदि अरे मातपितानी साथमां,
जाणी शिक्षा धारशो तो सुख जीवन हाथमां. १
प्रिया साथे पण क्लेश न करीए लक्ष्मी टळे छे,
भाइ साथे पण क्लेश न करीए प्रीति गळे छे;
मित्र साथे पण क्लेश न करीए टळे विसामो,
सन्तनी साथे क्लेश करे पण दुःखडां पामो;
क्लेश दुःखनुं मूळ जाणी परिहरो शुभ टेकथी,
क्लेश जातां सहु टळ्युं अरे समजशो विवेकथी. २
जेना घरमां क्लेश थयो त्यां वित्त न रहेतुं,
क्लेशे धर्म विनाश क्लेशथी सुख न रहेतुं;
क्लेशे संप विनाश जंप पण क्यांथी होवे,
देश राज्यमां क्लेश प्रवेशे क्षयता जोवे;
धर्मना बहु पन्थमां जो क्लेश पेठो जो खरे,
वित्त सत्ताज्ञान नाशज लडीलडीने जन मरे. ३
क्लेश कर्याथी सुख टळे छे प्रगट विचारो,
क्लेश कर्याथी महाजन मंडळ भेदज धारो;
क्लेश प्लेगथी सदा हठीलो सहुने मारे,
द्वेष भूतडुं पेठुं ते जन सत्य न धारे;
क्लेश करे ते तुच्छ जगमां क्लेश टाळे दुःख टळ्युं,
बुद्धिसागर संप धरतां पूर्ण शाश्वत सुख मळ्युं. ४

बाळलग्न.

छप्पय छंद.

हानिकारक रीति तजो अरे उन्नत थावा,
पढो कुधरो परिहरो भज सत्य स्वभावा;
बाळलग्न देशवटो यो वळवा माटे,
बाळलग्नथी अवनति बहु अवळी वाटे;
बाळलग्नथी देशनी बहु पायमाली थइ अरे,
[illegible] जागो आदरो सद्गुण खरे. १

[illegible] निर्बळने रोगी,
[illegible] प्रजा निरोगी;
[illegible] हानि,
[illegible] प्रजानी;
[illegible] बाळलग्नथी [illegible],
[illegible] उत्तम मने. २

[illegible] न [illegible],
[illegible] न [illegible];
[illegible] न [illegible],
[illegible];
[illegible] कोम छे,
[illegible] मनुष्य मानि होय छे. ३

[illegible] न [illegible],
[illegible] न [illegible] विद्या [illegible];
[illegible],
[illegible];

वाळग्नने कदी करो नहि सत्य शिक्षा मानशो
बुद्धिसागर धैर्य धारी सत्य मनमां आणशो.

खंडमंडनमां सार नथी.

छप्पय छंद.

करो न वादविवाद धर्ममां कलेश करीने,
नहि सत्यनो नाश कदापि दील धरीने;
बुद्धिवाळो जय मेळवतो जगमां देखो,
मिथ्या नाहक वाद कर्याथी सार न लेखो;
धर्म झघडो जे करे ते चित्त निर्मल नहि करे,
बुद्धिसागर समजु समजे परमप्रभुता घट वरे. १
खंडनमंडनमां शुं पडवुं सत्यज कहेवुं,
खंडनमंडनमां शुं पडवुं सत्यज लेवुं,
अखंड व्यापक आत्मतत्त्वतो नहि खंडाशे,
परिपूर्ण स्याद्वाद ब्रह्म तो नहि छेदाशे;
अखंड आत्मस्वरूपमांहि आनंद अपरंपार छे,
नाम रूपथी भिन्न समजो अनुभवे जयकार छे. २
खंडनमंडन करतां कदी न सारु थाशे,
खंडनमंडन करतां कदी न सार ग्रहाशे;
खंडनमंडन मनना धर्मो परखी लेशो,
खंडनमांहि महाविकल्पो चित्त न देशो;
वाद मिथ्या परिहरीने धर्म विद्या आदरो,
बुद्धिसागर आत्मध्याने परमप्रभुता झट वरो. ३

वित्त सत्ता ज्ञान जेनुं परोपकारी नहि थयुं,
जननी भारे मारी जन्मी जीवन निष्फल सहु गयुं. ४
वेश्या नचवी करे धूमाडो धननो भारे,
वेश्या संगी तरे अरे केम परने तारे;
पदवी पुच्छो माटे धननो नाश करे छे,
परोपकारिधर्म विना नहि ठाम ठरे छे;
रासभ उपर कस्तुरी घुण मूढ पासे धन अहो,
बुद्धिसागर सत्य सबनी परोपकारी थइ रहो. ५

समाधि.

अजपा जापे सुरता चाली. ए राग.

सहस्रकमलदलपर श्री प्रभुजी, बेठा कृष्ण जिनवर देवा;
असंख्यप्रदेशे आसन पूर्युं, झळझळ ज्योतिनी सेवा. सहस्र. १
ब्रह्मरन्ध्रमां ब्रह्मानन्दी, उलटवाटथी चढी आयो;
हंसराय सुरता सीतानी, साथे सुखडां बहु पायो. सहस्र. २
रत्नत्रयी लक्ष्मीनी साथे, चेतन विष्णु रमन रमे;
चौद भुवनना स्वामी साचा, अनुभवामृत गृह जमे. सहस्र. ३
पिंड अने ब्रह्मांड ऐक्यता, आत्मभावना सर्व टरी;
अनुभवानंद सागर प्रगट्यो, उल्टट आंच देख्यो उतरी. सहस्र. ४
स्याद्वाद सत्तामय चेतन, सातनये जाणे योगी;
षड्दर्शन सागरने पखोची, अमृत पाणे गुणभोगी. सहस्र. ५
शुद्ध समाधि योगे प्रगटे, केवलज्ञान महाज्योति;
बुद्धिसागर विष्णु पोते, लोकालोक बहु दिस्तोति. सहस्र. ६

शक्ति अनंति खीलवुं निशदिन, अन्तर स्थिरता वासी;
देहदेवळमां झळहळ दीवो, शक्ति अनंत विलासी. चिदानंद. ४
अलख जगावी अलख देशनी, अलख धूनमां रहीशुं;
बुद्धिसागर आतम उजागर, निश्चय ध्रुवपद लहीशुं. चिदानंद. ५

खटपट खोटी.

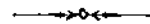
लगा कलेजे छेद गुरोकाटे–ए राग.

खटपट सर्वे खोटीरे, तेमां रहारु कांइ न वळशे;
मान मूर्खे मन जूठी माया, जन्म मरण दुःख टळशे खटपट. १
सर्वे कार्यमां म्हारु रहारु, ममता दूर निवारी;
अन्तरथी तुं अळगो रहेजे, समजण सत्य विचारी. खटपट. २
सर्प दाढथुं विष जतां तो, सर्प थकी शुं थाशे;
राग द्वेष अभावे जगमां, आतम नहि बंधाशे. खटपट. ३
वस्त्र चीकणाने रज लागे, निर्मळ नहि लेपातुं;
अन्तरथी न्यारा रहेतां तो, कांइ न थातुं जातुं, खटपट. ४
खटपट लटपट झटपट त्यागी, अन्तर मांहि जागी;
बुद्धिसागर अनुभव अमृत, स्वादंतां सौभागी. खटपट. ५

माया.

चेतावुं चेती लेजेरे. ए राग.

माया महा मस्तानीरे, सहुने फरजामां ते लेती;
जोगीने पण ते डोलावे, करती शिघ्र फजेती. माया. १
मायानुं अंधारु मोटुं, भलाभला पण भूलया;
नरपति सुरपतिने नहि छोडे, डहापणीया केइ डूलया. माया. २
मायानी पूजारी दुनियां, माया वशथी घेलेली;
चौदभुवनमां बहु रखडावे, पाप कार्यमां पहेली. माया. ३
माया मीठी पापी जनने, सत्य वात नहि सुझे;
मायाथी गांडा छे जगजन, समजाव्या नहि बुझे. माया. ४
मायाना उंडा छे कूवा, तेमां शी हुशियारी;
बुद्धिसागर शिक्षा सारी, समजी ल्यो नरनारी. माया. ५



ममता.

लगा कलेजे छेद गुरोकारे—ए राग.

ममता मनथी वारीरे, चेतन अवसर पामी चेतो;
ममता योगे दुःख घणां छे, काळ झपाटा देतो. ममता. १
मननी ममता तनुनी ममता, धननी ममता खोटी;
अवसर आवे जावुं खाली, साथ न आवे लोटी. ममता. २
ममताथी युद्धो छे भारी, समजी ल्यो नरनारी;
ममता त्यागे त्याग मजानो, परमानन्द पदकारी. ममता. ३
कोना चेला कोना पुत्रो, मूकी सर्वे जावुं;

हाय हाय शा माटे करवी, केम अरे मकलावुं. ममता. ४
ममता मोटी दुःखनी क्यारी, दुःख बहु देनारी;
ममतानुं बंधन नासे तो, मुक्ति शिघ्र थनारी; ममता. ५
घर जंगलमां भेद न कांइ, ममता त्यागे परखो;
बुद्धिसागर आतम उजागर, दशा लहीने हरखो. ममता. ६

संतो चेत्या.

कोई संत वीरले जाणीयुंरे भाई-ए राग.

कोई संत वीरला चेतीयारे, कोई संत विरलो चेतीयारे;
दुनियामां दुःखडां जाणशोजी, कोई.
जुठी गाडी लाडी माया, एवुं मनमां आणशोरे. भाई. दुनिया. १
म्हारु त्हारु मिथ्या समजी, खोटो पक्ष न ताणशोरे; भाई दुनि.
दुनियामां स्वारथनां सगपण, जुठां तन धन मानशोरे. भाई दुनि. २
स्वार्थतणी छे मारामारी, वैराग्ये मनडुं वाळशोरे; भाई दुनि.
मरतां साथे कांई न आवे, पाप कर्म सहु टाळशोरे. भाई दुनि. ३
पणी ठणी शुं फुले फोगट, व्रत नियमने पाळशोरे. भाई दुनिया.
बुद्धिसागर धर्म खरोछे, धर्मे शिवपुर म्हालशोरे. भाई दुनिया ४

सम्यक्त्व वधारी, दुर्गतिनिहारी; देश विहारी, सुपकारी.
गुण व्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, वलिहारी. १
तें मोह निवार्यो, जाय ते हार्यो; आतम तार्यो, उर धार्यो.
तें शिष्य सुधार्यो, पार उतार्यो; गुणमां टार्यो, भव तार्यो.
जग धर्म वधार्यो, मेम मसार्यो; राग विसार्यो, शिवकारी.
गुण व्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, वलिहारी. २
तुं सद्गुण गामी, जयनिष्कामी; अन्तरयामी, स्वगामी.
तुं छे निष्कामी, ब्रह्म अनामी, निजपद पामी, बहु नामी.
जगजय गुणकामी, मन विश्रामी; वाणी स्वामी, कामारि.
गुणव्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, वलिहारी. ३
तुं छे पूर्णांशी, गंगाकाशी; त्यजी उदासी, विश्वासी.
कापी तें फांसी, लेश न हांसी; पूर्ण प्रकाशी, सुखवासी.
शिवपुर निवासी, धर्म विलासी; कीर्तिदासी, छे तारी.
गुणव्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, वलिहारी. ४
तुं मनमां प्यारो, निश्चय सारो; माण हमारो, निधार्यो.
हुं शिष्य तमारो, उर उतारो; शिघ्र सुधारो, जन्मारो.
उर मेम वधारो, करो न न्यारो; पाप निवारो, लयो तारी.
गुणव्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, वलिहारी. ५
कोइ वात न छानी, नहि अभिमानी, आतम ज्ञानी, गुण गानी;
समतामृतपानी, अन्तर्यानी, आतम ध्यानी, मस्तानी
गुणगणनी खानि, लेश न हानि, सद्गुणदानी, कामारि;
गुणव्यक्ति मचारी, कर्म विदारी, जगदुपकारी वलिहारी. ६
लळीलळी करगरशुं, विनति करशुं, सत्य उच्चरशुं, सुखवरशुं;
सुख निर्मल धरशुं, भ्रांति हरशुं, कदी न डरशुं, संचरशुं.

खराखरीनो खेल आतम, भूल न वारंवाररे;
मननी वृत्ति ज्यां मळे त्यां, सुख गणे नरनाररे. समज. ३
सत्य दीलथी सत्य नेमे, आतमनी धर टेकरे;
अलख अरूपी तत्त्वमसि तुं, धरजे सत्य विवेकरे. समज. ४
आडुं अवळुं जगत् बोले, तोपण धर्म न छोडरे;
धर्म करतां धाड आवे, तोपण अंग न मोडरे. समज. ५
नास्तिकोना संगथी जीव, सत्य टेक न हाररे;
बुद्धिसागर धर्मयोगे, सफळ छे अवताररे. समज. ६

निश्चयरहस्य.

श्रीराग.

हवे जाण्युं जगत् सहु काचुंरे, मने लाग्युं आतमरूप साचुंरे; हवे.
कोइ न जगमां मारु निश्चय, मारु मारु जाणी शुं माचुंरे. हवे. १
चेला चेली कोइ न मारु, शा माटे अहो शुं याचुंरे; हवे.
अन्तरनो अलबेलो मळीयो, सत्य बुद्धिसागर गुण राचुंरे हवे. २

प्रभुस्तुति.

प्लवंगम छन्द.

नमुं नाथ त्रिभुवन पूज्य प्रभु जयकार छो,
जय दिनमणि दीनदयाळ विभु सुखकार छो;

बाह्य ग्रहवि छोडीने, ध्यान धरो निरदोष;
परमानन्द स्वरूपतो, वरिए निशदिन पोष. ૬
सार सार प्रभु द्रव्यनुं, आत्मस्वरूपनी सिद्धि;
आत्मवीर्यनी साधना, ज्ञानादिक गुण वृद्धि. ૭
पद परमने साधवा, भव्य सदागुण साध;
बुद्धिसागर पदवी, वेतन जिनवर पाय. ૮

आत्मविवेक.

दूहा.

अनन्त रत्नत्रयी प्रभु परमानन्द स्वरूप;
पुरुषोत्तम करुणानिधि, स्मरतां नासे धूप. ૧
एकरूप छुं आतमा, द्रव्यार्थिक नयवाद;
अनेक छुं पर्यायथी, वांचे टळे प्रमाद. ૨
शुद्धज्ञानालंबीपणे, परम प्रभुनुं ध्यान;
करतां शिवसुख संपजे, व्यक्तिपणे भगवान. ૩
आत्मज्ञाननी सेवना, आत्म रमणता सार;
आत्मारामी मुनिवरा, जगमां छे जयकार. ૪
बाह्यदशा व्यवहारमां, कांई न आवे हाथ;
पुद्गलमां निज शोधतां, भूल्यो त्रिभुवननाथ. ૫
त्रिगुप्तिगुप्ता जना, ध्यावे आतमस्वरूप;
अनन्त आनन्द स्वादीने, थावे छे जगभूप. ૬
बाह्य दशामां तुं नहि, निश्चय निर्मळधार;
परम महोदय स्वामी तुं, अन्तरमां अवधार. ૭

चित्तने शिक्षा.

गझल.

भटकता चित्त वश थातुं, अरे तुं बाह्य नहि जातुं;
प्रभुना ध्यानमां रहेजे, विचारी तत्त्वने कहेजे. १
खरेखर उद्यमी सारु, जपे नहि ठाम तुं प्यारु,
खरेखर चित्त तुं मोटुं, गणुं नहि तुजने छोटुं. २
प्रभुने मेळवी आपे, अनंतां दुःख तुं कापे;
केळवणी चित्तनी सारी, विचारो भव्य निर्धारी. ३
प्रभुना ध्यानमां राखुं, अनंतां सुखने चाखुं;
हरु सहु बाह्यनी पीडा, उपाधि दुःखना कीडा ४
खुमारी आत्मनी लहीशुं. प्रभुना रूपमां रहीशुं।
मुनिना ध्यानमां आव्युं, मुनिए प्रेमथी गाव्युं. ५
अखंडानंद परखायो, खरेखर ध्यानमां पायो;
बुद्ध्यब्धि सन्तनो संगी, प्रभुना प्रेममां रंगी. ६

सत्य जाणे शुं दुनिया दिवानी.

राग–मारु जंगली.

सत्य जाणे शुं दुनिया दीवानीरे, जे मायामां मस्तानीरे; सत्य.
जन्मी ज्यांथी तेमां राचे, खरेखर अरे तोफानीरे. सत्य. १
खरु तत्त्व न खोळे खांते, म्हारु म्हारु करे अभिमानीरे. सत्य.
रात्री उंघे दीवस उंघे, अरे वात नहि कोई छानीरे. सत्य. २
सत्य जूठनो भेद न समजे, निशदिन घांचीनी घाणीरे. सत्य.

१५३

जगतनुं भलुं इच्छवुं.

हरिगीत छंद चाल.

आ जगत् सघळुं मित्र मारुं हुं छुं सहु स्नेहभर,
वर्ते न हिंसा कोईनी हुं भावना ए चित्त धरुं;
सुख शांतिने सुख देवी एवी वृत्तिने उर धरुं,
मात्सर्यरहित हृदय धारी सर्वनुं भलुं करुं. १
आ स्थूळ ने आ सूक्ष्म एवी जीव सृष्टि विविधनी,
आत्मवत् सर्व जाणी सत्यता दिलमां धरी;
जगत जननुं भलुं करवुं सत्य धर्म विचारीने,
जगत जननुं भव्य करवुं चित्त करुणा धारीने. २
सहु आत्म सरखा जगत जीवो जाणीथी सुंदर गणी,
कोईने संतापुं नहि ए भव्य रचना दिल गणी;
देशी के विदेशीनो नहि भेद मनमां आणवो,
सर्व जीवनुं भव्य करवुं प्रेम सत्य बतावतो. ३
ज्ञाति जाति भेद नहि मन जीव सघळा रूप छे,
जीवने जे दुःख जाणे कदी नहि ते जीव छे;
जगत जनने धर्मी करुं हुं भावना दिलमां धरी,
द्वेषबुद्धि दूर नाखी धर्म वृत्ति धगधगी. ४
धर्मनां हुं कृत्य करतो दुःख कोणज आपशे,
पापनां हुं कृत्य करुं तो स्वर्गमां कोण थापशे;
धर्म करतां सुख थाशे न्याय सारो हुं करुं,
पाप करतां दुःख थाशे अन्यने नहि करगरुं. ५
आत्मबळ विश्वास लावी धर्म पन्थे संचरुं,

करवो कोनो सत्समागम मन्त्र कोने जाणवा,
सन्तनी करणी अने शुं भेद तेना जाणवा;
आतमाने सिद्ध तेमां भेद शो छे धारीए,
आगम अने अनुमानथी ए सर्व प्रश्न विचारीए. ५

आतमा हुं द्रव्यथी नित्य अन्यगतिथी आवीयो,
पूर्व भवमां कर्या कर्म जे ते ज साथे लावीयो;
द्रव्य षट्थी जगत पूर्णु काल अनादि जाणीए,
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता ए द्रव्य लक्षण आणीए. ६

कर्म पुद्गल द्रव्य जाणो बंध छे परभावथी,
कर्मथी भिन्न आतमा छे मुक्त शुद्ध स्वभावथी;
ज्ञेय सघळां द्रव्य ज्ञाने हेय पर वस्तु करी,
आदेय जगमां आतमा एक सत्य श्रद्धा सद्दही. ७

जीव जड बे तत्त्व भाख्यां तत्त्व नव पण जाणीए,
काल अनादि तत्त्व बे छे ने अनंत पिछाणीए;
आतमाने कर्मनो संबंध काल अनादिथी,
पहेलुं कर्म के आतमा नहि जाणीए ते ज्ञानथी. ८

देहरूप जे सृष्टि तेनो आतमा कर्ता कह्यो,
पर स्वभावे कर्म कर्ता बोध ए मन सद्दह्यो;
आत्मभावे रमणताथी कर्म सृष्टि परिहरे,
अवर कर्ता कह्यो नहि ईश सत्य युक्ति ए खरे. ९

सर्व जीवनो आतमा नहि एक एवुं धारीए,
प्रतिशरीरे भिन्न चेतन युक्ति नयथी विचारीए;
सर्वव्यापी आतमा ने देश व्यापी छे खरो,
व्यक्तिथी छे देश व्यापी ज्ञानथी व्यापक धरो. १०

कर्मयोगे आतमानी सिद्धता तिरो रही,
अंश अंशे कर्म टळतां सिद्धता आविर् कही.
सिद्धव्यक्ति प्रगट करवा धर्म उद्यम आदरो,
बुद्धिसागर तत्त्वज्ञाने परम महोदय पद वरो. १७

संसारमां सुधरो.

हरिगीत छंद चाल.

संसारमां सुधरो अरे जन धर्मकरणी साचवी,
धर्मविण नहि उन्नति जग शिख साची मानवी;
मावापनी भक्ति करो बहु दारु ताडी परिहरो,
केफी वस्तु परिहरो झट उन्नति वेगे करो. १
छेलछबीला बणीठणीने वित्त व्यय नाहक करो,
खर्च खोटां शुं वधारो सत्य नीति अनुसरो;
सहेलाइमांहि छाकी जइने अवनति पायो रचो,
धर्मनी जो दाझ होय तो धर्म उद्यममां मचो. २
भापा भणीने फुलता शुं दीर्घदृष्टि वापरो,
परोपकारी शिघ्र थाओ सत्य रस्तो ए खरो;
देशनी जो दाझ होय तो देशीओने पाळवा,
दोषनी जो दाझ होय तो दुर्गुणोने खाळवा. ३
न्यायथी धन मेळवीने न्यायथी चालो खरे,
कहेणी जेवी रहेणी राखो सुजनता वधशे अरे;

अलख अरुपी हंस हुं हुं अनुभवे वाणी कहुं।
सुख के नहि दुःखकारी भिन्न वस्तु अनुभवुं,
शाने माटे करुं हुं ममता वाणी दीठ खोटी लवुं. २

जगत सारु तेथी शुं मुज खोटुं तेथी शुं गयुं,
अध्यात्मभावे रमण करतां नित्य निर्मळ सुख लहुं;
सत्य वाणी जिन प्रभुनी अनुभवीने अनुभवी,
सापेक्ष वस्तु जाणवाथी धर्म पामे जन भवी. ४

अनंतभवमां भ्रमण करतां चित्त ठाम न आवीयुं,
आत्मज्ञाने गुरु कृपाथी चित्त शिव पद भावियुं;
रमण करवुं रमण करवुं ध्यानथी निश्चय कहुं,
बुद्धिसागर सत्य निश्चय लावी मंगलपद लहुं. ५



प्रातः स्मरणीय हितशिक्षा.

हरिगीत छंद चाल.

विश्वासघाती उग्र पापी नरकमांहि अवतरे,
परनी निंदा जे करे ते पापनी पोठी भरे;
आळ परने जे चढावे आळ पामे ते खरो,
परनुं भूंडुं ताकतो जन पामतो दुःखनो घरो. १

परनुं सारु देखीने जे दीलमां दाझी बळे,
दोषी एवा दुःख पामे दुःखी थइने सळवळे;
स्वार्थ साधक जे बनीने कपटमां राची रहे,
कपटी काळा नाग जेवो दुःख अंते बहु लहे. २

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उद्योग.

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

चिद्घन चेतन परम महोदय, हुं तो आनंदमय वटमार्गीरे. मारी. ५
ध्यानदशामां हुं हुं नाउं, अलख झळहळ ज्योति त्यां जागीरे. मारी. ६
बाह्य दुःख अन्तरमां सुखडां, एवी स्फुरणा मोरली झट वागीरे. मारी. ७
बुद्धिसागर आनंदघन प्रभु, एकरूपे मळीने सुहागीरे. मारी. ८

योगी.

श्रीराग.

मन मोह्या जंगल केरी हरणीने—ए राग.

जोगी थइने अलख हुं जगावुंरे, सोऽहंसोऽहं परमप्रभु ध्यावुंरे. जोगी.
उदासीनता कंथा पहेरुं, वैराग्यनी भभूति चोळावुंरे. जोगी. १
दयाभावनी चाखडीओ धरुं, शीलव्रतनो लंगोट लगाउंरे. जोगी. २
सर्वत्यागरूप शिर्षे मुंडावुं, प्रभु धारणा खप्पर धराउंरे. जोगी. ३
ध्यान दंडने मेभे धारुं, पवन पावडी उपयोग लावुंरे. जोगी. ४
अन्तर आतमप्रदेशे विचरु, दया गंगमां स्नाने सुहाउंरे. जोगी. ५
अस्ति नास्तिमय परमब्रह्ममां, ब्रह्मांड आखुं हुं समाउंरे. जोगी. ६
अनुभव अमृत भिक्षा मागुं, हुं तो धूणी संयमनी जगाउंरे. जोगी. ७
अन्तर आतम परमातमनी, ऐक्य भावना भांग घुंटावुंरे. जोगी. ८
मन प्यालामां भरीने पीतां, देखुं उलटी आंखे सुख पावुंरे. जोगी. ९
बुद्धिसागर योग महोदय, पामी निश्चय निर्भय थाउंरे. जोगी. १०

૧૬૫.

જોયા બાદ સાર નથી.

હરિગીત છંદ ચાલ.

નર રમ્ય ભોગાદી ધર્યું હું ચાવો જગ ભાવી કેર
સુખ ભોગની હોંશે કરી હરખ ધરી મન તે કોડ,
ઈંગત ભીલાવણીયા તો દુઃખની લાગ્યા નહીં,
પરણીને જોયું પછી તો સાર તેમાં કંઈ નહીં. ૧

ઘર માંહીં દરિદ્ર હાંકે ભરણ ભાગી બહુ જોર,
છોકરાંનો જગ વિલાણી હોરી હોરી બહુ જોર,
સાથ પાસે તો પડે નહીં દૂર જગ જાવે નહીં,
પરણીને જોયું પછી તો સાર તેમાં કંઈ નહીં ૨

ભવ ભાર જવના જગમાં સુખ માની નહિ જરી,
જગતની જંજાળ ખોટી ખોટી જોતાં તે ઠરી,
સુખ આ સુભાગનું ક્ષણમાં જાણું તે નહિ,
પરણીને જોયું પછી તો સાર તેમાં કંઈ નહીં. ૩

મીન માંડું મરણ માટે ચોરથી વિચાર તે
પતંગની સુવાસ માટે ભ્રમર દુઃખ સહાય છે.
સાર સાચું જગમાં જો સુંદરતા મનમાં ઠરી,
પરણીને જોયું પછી તો સાર તેમાં કંઈ નહીં. ૪

અનુભવી એ અનુભવ્યું એ સર્વ વિષયો સંગ્રહી,
સુખ પાછળ દુઃખ તે તો સુખ જગમાં છે નહીં.
બુદ્ધિસાગર સમુપદેશે પ્રભુ સાધો ગહગહી,
પરણીને જોયું પછી તો સાર તેમાં કંઈ નહીં. ૫



भव्य आराधक थये ते भवदधि पारलो।
महावीर प्रभुनीवचनधर्मोत्रिभुवन दिवसी धारशो,
उपाध्यायशुभबुद्धिसागर वांचो धर्म वधारशो. ६

श्री यशोविजय वाचककृत.

अथ श्री सीमंधरजिन निश्चय व्यवहारगर्भित विनतिरूप स्तवन.

श्री सीमंधर साहिब आगे वीनती रे,
मन धरी निर्मळ भाव; कीजेरे (२)
लीजे लाहो भवतणो रे १

बहु मुख प्राणी तुज वाणी परिणमे रे,
जेह एक नय पक्ष; भूलारे (२)
ते प्राणी भव रडवडे रे. २

में मति मोहें एकज निश्चय नय आदर्यो रे,
के एक जे व्यवहार; भेळारे (२)
तुज करुणाए ओळख्यारे. ३

शिबिका वाहक पुरुष तणीपरे ते कह्यारे,
निश्चयने व्यवहार; मिळियारे (२)
उपकारी नवि जुजुआरे. ४

बहुलां पण रत्न कह्यां जे एकलां रे,
ते माळा न कहाय; माळारे (२)
एक सूत्र जे सांकल्यां रे, ५

ढाळ बीजी.

कोइक विधि जोतां थकांरे, छांडे सवि व्यवहाररे। मन वशीया;
न लहे तुज वचने कधुंरे, द्रव्यादिक अनुसाररे; गुण रसीया. १

पाठ गीत नृत्यनी कळारे, जिम होय प्रथम अशुद्धरे; मन०
पण अभ्यासे ते खरीरे, तेम क्रिया अविरुद्धरे. गुण० २

मणी शोधक शत खारनारे, जिम पुट सकल प्रमाणरे; मन०
सर्वे क्रिया तिम योगनेरे, पंचवस्तु अहिनाणरे. गुण० ३

प्रीति भक्ति योगे करीरे, इच्छादिक व्यवहाररे; मन०
हीणो पण शिव हेतु छेरे, जेहने गुरु आधाररे. गुण० ४

विष गरल अनुष्ठान छेरे, हेतु अमृत जिम पंचरे; मन०
किरिया तिहां विष गर कहीरे, इह परलोक प्रपंचरे. गुण० ५

अनुष्ठान हृदय विनारे, समूर्छिम परे होयरे; मन०
हेतु क्रिया विधि रागथीरे, गुण विनयीने जोयरे. गुण० ६

अमृत क्रियामां जाणीयेरे, दोष नहीं लवलेशरे; मन०
त्रिक त्यजवां दोय सेववांरे, योगबिंदु उपदेशरे गुण० ७

किरिया भक्तिए छेदीयेरे, अविधि दोष अनुबंधरे; मन०
तिणे शिवकारण ते कह्योरे, धर्मसंग्रहणी प्रबंधरे. गुण० ८

निश्चयफल केवल लगेरे, नवि त्यजीये व्यवहाररे; मन०
चक्री भोग पाम्या विनारे, जिम निज भोजन साररे. गुण० ९

पुन्य अग्नि पातिक दहेरे, ज्ञान सहजे ओलहायरे; मन०
पुन्य हेतु व्यवहार छेरे, तिणे निरवाण उपायरे. गुण० १०

भव्य एक आवर्त्तमांरे, क्रियावादि सुसिद्धरे; मन०
होवे तिम बीजो नहींरे, दशाचूर्णी सुप्रसिद्धरे. गुण० ११

मूरख आगेरे परमारथ कथा, त्रणे एकज रीत. अं ९
एवुं जाणीरे हुं तुम वीनवुं, किरिया समकित जोडि;
दीजे कीजेरे करुणा अति घणी, मोह सुभट मद मोड. अं० १०

ढाळ ४ थी.

ईणि पेरे में प्रभु वीनव्यो, सीमंधर भगवंतोरे;
जाणुं हुं ध्याने, प्रगट हुं तो, केवळ कमळा कंतोरे;
जयो जयो जगगुरु जगधणी. १
तुं प्रभु हुं तुज सेवको, ए व्यवहार विवेकोरे;
निश्चय नय नहीं अंतरुं, शुद्ध निरंजन एकोरे. जयो० २
जिमजल सकलनदीतणो, जलनिधि जल होय भेळोरे;
ब्रह्म अखंड सखंडनो, तिम ध्याने एक मेळोरे. जयो० ३
तुज आराधन जिणे कर्युं, तसु साधन कुण लेखेरे;
दूर देशान्तर कोण भमे, जे घर सुरमणि देखेरे. जयो० ४
अगम अगोचर कथा, पार कुंणे न लहीएरे;
तिणें तुज शासन इम कहे, बहु श्रुत वयणडे रहीएरे. जयो० ५
तुं मुज एक हृदय वस्यो, तुंहींज पर उपकारीरे,
भरत भविक हित अवसरे, प्रभु मत मुंको विसारीरे. जयो० ६

श्री यशोविजय वाचककृत.

॥श्री पञ्चपरमेष्ठि गीता॥

पणमीइं प्रेमस्युं विश्वत्राता, समरीइं सारदा सुकविमाता;
पंच परमेष्ठि गुण थुणण कीजे, पुण्य भंडार सुपरिं भरीजे. ॥१॥

चालि.

अरिहंत पुण्यना आगर गुण सागर विख्यात,
सुरघरथी चवि उपजे चउद सुपन लहे मात;
ज्ञान त्रणें जू अलंकरिया सूरय किरणे जेम,
जनमे तव जनपद हुई सकल सुभिख बहु प्रेम. ॥२॥

दुहा.

दश दिशा तव होई प्रगट ज्योति, नरकमांहि पणि होई खिण उद्योति.
वाय वाई सुरभि शीत मंद, भूमि पणि मानु पामे आनंद. ॥३॥

चालि.

दिशि कुमरी करे ओच्छव आसन कंपे ईंद,
रण कंईरे घंट विमाननी आवे मिलि सुरवृंद;
पंचरुप करि हरि सुरगिरि शिखरें लेई जाई.
न्हवरावई प्रभु भगतिं क्षीर समुद्र जल ल्याई. ॥ ४ ॥

दुहा.

स्नात्र करतां जगत् गुरु शरीरे, सकल देवें विमल कलसनीरे;
आपणा कर्ममल दूरि कीधा, तेण ते विबुध ग्रन्थई प्रसिद्धा. ॥५॥

चालि.

न्हवरावी प्रभु मेहलेंरे, जननी पासे देव;
अमृत ठवईरे अंगुठडे, बाल पिये एह टेव.

धर्म चक्षु गोचर नहीं जे आहार नीहार; (४)
अतिशय एहज सहजना च्यार धरे जिनराय,
हवे कहइं इग्यार जे होइ गए घनघाय. ॥ १२ ॥

दुहा.

क्षेत्र एक योजनमें उच्छांहिं, देवनर तिरिय बहु कोडि माहीं; १
योजन गामिणी वाणी भाखे, नर तिरिय सुर सुणे निरय उल्ला-
सें. २ ॥ १३ ॥

चालि.

योजन शत एकमांहि जिहां जिनवर विहरंत,
इति मारि दुरभिक्ष विरोध विराधि नहुंत;
स्वपरचक्र अतिवृष्टि अवृष्टि भयादिक जेह,
ते सवि दूरि पलाये जिम दव वरसत मेह ॥ १४ ॥

दुहा.

तरणि मंडल परे तेज ताजे, पूंठिं भामंडल विपुल राजे; (११)
सुरकृत अतिशय जे? लहिए. एक उंणा हवे वीस कहीए ॥१५॥

चालि.

धर्मचक्र शुचिचामर वपत्रय विस्तार,
छत्रत्रय सिंहासन दुंदुभि नाद उदार;
रत्नत्रय ध्वज उंचो चैत्र द्रुम सोहंत
कनक कमल पगलां ठवे चउ मुह धर्म कहंत ॥ १६ ॥

दुहा.

वायु अनुकूल सुखमल वाये, कंटका उंध मुख सकल थाए;
स्वामी जवथी व्रत योग साधे, केश नख रोम तवथी न वाधे.
(१३) ॥ १७ ॥

दुहा.

[२७]चित्रकर [२८]अद्भुतता राति अनति अविलंब (२९)
जाति सु विचित्र (३०) सु विशेष विंव (३१)
तत्त्व पर (३२) वर्ण पद वाक्य शुद्ध (३३)
नहिय विच्छेद (३४) खेदे न रुद्ध (३५)॥ २३ ॥

चालि.

इम पांत्रिस गुणे करी वाणी वदे अरिहंत,
सर्व आयु जो कोइ सुणे तो नहीं भूख न भ्रंत;
रोग शोग न जागे लागे मधुर अत्यंत,
इहां आवश्यक भाष्ये किवि दासी दृष्टांत ॥ २४ ॥

दुहा.

[१]देव [२]दुंदुभि [३]कुसुम वृष्टि [४]छत्र, [५]दिव्य ध्वनि [६]चामर आसन पवित्र;
[७]भव्य भामंडल [८]द्रुम अशोक भाति हारय हरे आठ शोक ॥ २५ ॥

चालि.

रागादिक जे अपाय ते विलय गया सविदोष (१)
उग्यो ज्ञान दिवाकर (२) जय जय हुओ जगिघोष;
वाणी कुमति कृपाणी (३) त्रिभुवन जन उपचार (४)
पामे जन जे व्यापक मूलातिशय ए च्यार. ॥२७॥

दुहा.

महा माहण महा गोपनाह, महा निर्यामक महा सार्थवाह;
विसद महा कथित तणुं जे धरंत, तेहना गुण गणे कुण अनंत ॥२७॥

चालि.

पुण्य महातरु फलदल, किसलय गुण ते अन्य,
अन्य ते क्षायिक संपति, उपकारे करी धन्य;

ढाल.

नमस्कार अरिहंतने, कारिज जेहनुं चित्त,
धन्य तेह कृत पुण्यने, जीवित तास पवित्र;
आर्तध्यान तस नवि हुए, नवि हुए दुरगति वास,
भव सय फेरारि नवकार, करिए सुकृति अभ्यास. ॥१४॥

दुहा.

आत्मगुण सकल संपद समृद्ध, कर्मक्षय करि हुआ जेह सिद्ध;
तेहनुं शरण कीजै उदार, पामीइं जेम संसार पार. ॥ १५ ॥

ढाल.

समकित आतम स्वरूपना केवल ज्ञान अनंत,
केवल दर्शन वीर्य ते शक्ति अनाहत संत;
सूक्ष्म अरूप अनंतनी अवगाहन जस्या काठ,
अगुरु लघु अव्याबाधपए मगट्या शोभि गुण आठ ॥१६॥

दुहा

सर्व शत्रु क्षये सर्व रोग, विगमथी होत सर्वार्थ योग;
सर्व इच्छा टले होइं जेह. तेहथी सुख अनंतो अछेह. ॥ १७ ॥

ढाल.

सर्व काल संपिंडित सिद्ध तणा सुखराशि,
अनंत वर्गनें भागे माए न सर्व आकाश;
व्याबाधा क्षय संगत सुख छत्र फलवे राशि,
तेहनो एहन समुदय एहनो एक प्रकाश. ॥ १८ ॥

दुहा.

सर्व काला कलणणंत वग्ग, भयण आकाश अणुमाण सग्ग;
शुद्ध सुहणं तणं तथ्य देखो, राशि त्रिणे अणंते विशेसो. ॥१९॥

चालि.

काळ भेद मति भेदक चित गुण एक विभाग,
जिम घन कोकिली तथा अनुभवथी चिह्न काग;
कोकिल वायसादि भावना भिन्नता नहीं होइ भीति
आगे पण न करे निरभिय पूरगुण चित जाति. ॥४०

दुहा.

आगंतो पण नगर गुण अनेक, भीलनी पायमांदि भीड प
नहि करे दिवस उपमान जेम, केसनी सिद्ध सुण इस तेम ।

चालि.

अश्व वाहन करि पालखी नरपति सुरपति रूप,
एक तिलक सिरने ए बीजे ए गाज अनूप;
अर्थ अवहुत सैन्य ते छोटी होदी जाय,
पाछिने परिसादि मेल्ही ते बेठो एक तरु छाय ॥ ४२ ।

दुहा.

एक ते भील अविनीत तुरगइ कष्ट उपनीत दूर तरस लगई;
ध्यान मुख देखीओ भील एके तेह पण घमकीओ तास देखे

चालि.

एक एकने देखेरे न विशेषे नीम रूप,
एक सुवर्ण अलंकृत एक ते काजळ कूप;
दग मग जोइरे पशु परिभाषा नवि समझाय,
अनुमाने जळ आणिओ भील भेद नृपते पाय ॥४४॥

दुहा.

मधूर फूल आणी नृपने चखावे, चितने मेघ परि परि सिल
बंधु पितृ मातृथी अधिक जाण्यो, भील ते भूपति चित्त आण

चालि.

एतलें आवीरे सेना पगिं पगिं जोती मग्ग,
गर्जित गज हेषीत हयरथ पादातिक वग्ग;
वाजांरे वागां जितिनां छांटणां केसर घोल,
ओछवरंग वधामणां नव नव हुआ रंग रोळ. ॥ ४६ ॥
बंदिजन छंदस्यूं विरुल बोले, कोइ नहीं ताहरे देव तोले;
थेइ थेइ करत नाचे ते नटुआ, गीत संगीत सधान पटुआ॥४७॥

चालि.

आगे धरिआरे मोदक मोदकरण सुपबंध,
दिव्य उदक वळि आण्यां शीतल सरस सुगंध;
नृप कहे भील आरोगे, ते मुज आवे भोग,
वेचातो हुं लीधो, इण अवसरिं संयोगे ॥ ४८ ॥

दुहा.

वस्त्र अलंकार तेहने पहिराव्यां मूळगां तूच्छ अंबर छोडाव्यां;
दिव्य तांबूल भृत मुख ते सोहे, विजय गजराज साथे आरोहे ४९

चालि

कोइ आरोह्यारे वारण दमक्यां ढोल निसाण,
नादें अंबर गाजे साजे सबल मंडाण;
नगर प्रवेश महोच्छव अचरिज पामे रे भील,
जाणे हुं सरगमां आविओ राखी तेहज डील. ॥ ५० ॥

दुहा.

देखी प्राकार आकार हरख्यो, नगरनो लोक सुरलोक परख्यो;
आपण श्रेणि बेठा महेभ्य, मानिआ सुगण गणराज सभ्य. ॥४१॥

चालि.

पहरींरे पीत पटोळी ओळी केश पुनीत,

ते कहे जे तुम्हें सुखदीआ, मुज होए दुःख परिणाम.
बंधु विरह जोटालो, फिरि आवुं तुम ठाम. ॥ ५८ ॥

दुहा.

बोले लेइ मोकले तेह राजा, बंधु मिलिया हुया सुख दिवाजाः
एकदा नगर वृत्तान्त पूछे, कहोने ते केहवुं तहां किस्युं छे. ॥५९॥

चालि.

इहांथी तिहां ऋद्धि विमणी, त्रिगुणी चोगुणी मित्त;
ते कहे इंदुने विंदुने वर्ण सगाइ मित्त,
उपमा विण न कही शके, जिम ते पुरनो भाव;
तिम जिन पण न देखावे, इहां शिव सुख अनुभाव ॥६०॥

दुहा.

तोहि पण अतिं निराबाध सट, सुख अधिक व्यंतरादिक ते हेठी,
जाव सत्य (सर्वार्थ) शिव सुखथी जाणुं, वीतरागे कहुं ते प्रमाणुं ६१

चालि.

संपूरण सुरनर सुख काल त्रय संवद्ध,
अनंत गुण शिव सुख अंश अनंत वरग नविलद्ध,
सिद्ध सरसु सुख सरिआ विस्तरि निज गुणतासार;
शीतळ भाव अतुल वर्या ज्ञान भर्या भंडार ॥ ६२ ॥

दुहा.

सिद्ध[1] प्रभु[2] बुध्ध[3] पारग[4] पुरोग[5], अमल[6] अकलंक[7] अव्यय[8] अरोग[9];
अमर[10] अज[11] अमर[12] अक्षय[13] अमाइ[14], अनय[15] अक्रिय[16] असाधन[17] अयाइ[18] ६३

चालि.

अनवलंब[19] अनुपाधि[20] अनादि[21] असंग[22] अभंग[23],
अवश[24] अगोचर[25] अकरण[26] अचळ[27] अगेह[28] अनंग[29];

ढाल.

नमस्कार ते सिद्धने, वासित जेहनुं चित्त,
धन्य ते कृत पुण्य ते जीवित्त तास पवित्त;
आर्तध्यान तस नवी हुई, नवि हुई दुरगतिवास,
भवक्षय करतारि समरतां लहिई सुकृत उल्लास. ॥७०॥

दुहा.

पद तृतीये ते आचार्य नमीए, पूर्व संचित सकलपाप गमिए;
शासनाधार शासन उल्लासी, श्रुतबले तेह सकल प्रकाशी. ॥७१॥

ढाल.

कहिई मुगति पधार्यारे, जिनवर दाखी पंथ,
धरेईरे आचार्य आर्यनीति प्रवचन निग्रंथ;
मूरख शिष्यने शिखवी, पंडित करेरे प्रधान,
ए अचरिज पाषाणे, पल्लव उदय समान. ॥ ७२ ॥

दूहा.

भाव आचार्य गुण अति प्रभूत, चक्षू आलंबन मेढि भूत;
ते कहिओ सूत्रें जिनराय सरिखो, तेहनी आणमत कोई परखो ।७३

ढाल.

सुबहुश्रुत कृतकर्मा धर्माधार शरीर,
निज पर सम व्यवहारी, गुण धारी व्रतधीर;
कुत्तिया वण सम हवा आचारच गुणवंध,
ते आराध्ये आराध्या जिन वलि अनिंद्य. ॥ ७४ ॥

दुहा.

चउद पडिरूव पमुहा उदार, खंति पमुहा त्रिंशद दस प्रकार;
बार गुण भावनाना अनेरा, पद छत्रिस गुण सूरि केरा. ॥७५॥

ढालि

मतिरूप तेजे गुरूवी, तेजस्वी बहु तेज,
युग प्रधान तत्कालई, वर्तना सूत्रसुं हेज;
मधुर वाक्य मधुभाषी, गुरुत्व नहीं गंभीर,
धृतिमंत ते संतोषी, उपदेशक श्रुत धीर. ॥ ७६ ॥

दुहा.

नवि झरे मर्म ते अपरिश्रावी, सौम्य संग्रह करे बुद्धि भारी;
अकल अविकत्थने अचपलशांत, चौद गुण ए धरे सूरि दांत ।

ढालि.

धर्म भावना विश्रुत इम छत्रीसी छत्रीस,
गुण धारे आचारज तेह नमुं निशदीस;
आचारज आणा विण न फले विद्यामंत,
आचारज उपदेसई सिद्धि लही जई तंत. ॥ ७८ ॥

दुहा.

द्रह हुए पूर्ण जो विमल नीरे, तो रहे मच्छ तिहां सुख शरीरे
एम आचार्य गणमांहि साध, भाव आचार अंगि अगाध. ॥

ढालि.

आणा कुणनीरे पाळीई, विण आचारय टेक,
कारणि त्रिक पणि जिहां हुई तिहां आचारय एक;
श्रुत पडिवत्तीमां पणि आचारय समरथ,
जिन पणि आचारय हुई तव दाखे श्रुत अरथ.

दुहा.

सूरि गणधर गणी गच्छधारी, सुगरु गणिपिटक उद्योतकारी;
अत्थधर सत्तधर सदनुयोगी, शुद्ध अनुयोगकर ज्ञान भोगी॥

चालि.

[१२]अनुन्वान [१३]प्रवचनधर आणा [१४]इसर देव,
[१५]भट्टारक [१६]भगवान [१७]महामुनि [१८]मुनिकृत सेव;
गच्छ [१९]भारधर [२०]सद्गुरु [२१]गुरुगण [२२]युक्त अधीश,
[२३]गणि [२४]विद्याधर [२५]श्रुतधर शुभ [२६]आश्रय जगीश. ॥ ८२ ॥

दुहा.

नाम इत्यादि जस दिव्य छाजे, देशना देत घन गुहिर गाजे;
जेहथी पामीइं अचल धाम, तेह आचार्यने करुं प्रणाम॥ ८३ ॥

चालि.

आचारय नमुक्कारे वासित जेहनुं चित्त,
धन्य तेह कृत पुण्य ते जीवित तास पवित्त,
आर्तध्यान तस नवि हुइं, नवि हुइं दुरगति वास,
भव क्षय करतांरे समरतां, लहिइं सुकृत उल्लास ॥८४॥

दुहा.

पद चउत्थे तें उवज्झाय नमिए, पूर्व संचित सकल पाप गमिए;
जेह आचार्य पद योग्य धीर,सुगुरु गुण गाजता अति गंभीर.॥८५॥

चालि.

अंग ईग्यार ऊदार अरथ सुंच गंग तरंग,
वार्त्तिक वृत्ति अध्ययन अध्यापत वार उपांग;
गुण पंचवीस अलंकृत सुकृत परम रमणीक,
श्री उवज्झाय नमी जे, सूत्र भणावे ठीक. ॥ ८६ ॥

दुहा.

सूत्रं भणीइं सखर जेह पासे, ते उपाध्याय जे अर्थ भासे;
तेह आचार्य ए भेद लहीए, दोईमां अधिक अंतर न कहीए.॥८७॥

ढाल.

उपाध्याय सुत्रवाचक पाठक साधक सिद्ध,
करण भरण अध्यापक कृतकर्मा श्रुतरद्ध;
शिक्षक दिक्षक थविर चिरंतन रत्न विशाळ,
मोहजया पारिच्छक जित परिश्रम शुतमाळ ॥ ९४ ॥

दुहा.

साम्यधारी विदित पद विभाग, कुसिगावण विगत द्वेष राग।
अप्रमादी सदा निर्विषादी, अध्ययानंद आतम प्रमादी. ॥९५॥

ढाल.

नाम अनेक विवेक विशारद पारद पुन्य,
परमेश्वर आज्ञायुत गुण सुविशुद्ध अगण्य;
नमीए शासन भासन पति पावन उवज्झाय,
नाम जपतां जेहनुं नव निधि मंगळ थाय, ॥९६॥

दुहा.

नित्य उवज्झायनुं ध्यान धरता, पामीए सुख निज चित्त गमता;
हृदय दुर्ध्यान व्यंतर न बाधे, कोइ विरुओ न वयरी विराधे॥९७॥

ढाल.

नमस्कार उवज्झायने वासित जेहनुं चित्त,
धन्य तेह कृत्य पुन्य ते, जीवत्त तास पवित्त;
आर्त ध्यान तस नवि हुए, नवि हुए दुरगति वास,
भवक्षय करतां समरतां, लहिए सुकृत उल्लास. ॥ ९८ ॥

दुहा.

शिव पदालंब समरथ बाहु, जेह छे लोकमां सव्व साहू;
प्रेमथी तेहनुं शरण कीजे, भेद नवि चित्र रीते गणी जे ॥ ९९ ॥

ढाल.

समसारादि सम धरा गगणे आधार,
जिहां धनरुषि वसिहा सव उपगम विशाल;
ने विण बंध अनुसार सुरने नविं हुए अंत,
मन विरोध पण शुद्ध ने बंध करे भगवंत ॥१०७॥

दुहा.

एम दस धर्म पाळे विविध, मूळ उत्तर गुण मुनि पवित्र;
भ्रमर चारि गोचरी करीय भूंजे, शुद्ध सज्झाय अहर्निशं मर्जे॥१०७॥

ढाल.

रूप नागिनी देशना देश गणे न मयाण,
अभंदीन भिम हीर गणा भविजन आधाण;
तरण तारण करुणाकर जंगम तीरथ सार,
धन धन साधु शुद्धंकर गुण महिमा भंडार ॥ १०८ ॥

दुहा.

सम अनाश्रव सुगना गवेषी, धर्मवादि थिर हृदय हित उल्लेषी;
एहवा मुनिनुं उपमान नाहि, दीय नर सुर सहित लोकमांहि॥१०९॥

ढालि.

षट व्रत काय छ रक्षक निग्रहे इंद्रि न क्षोभ,
खंती भाव विशोदी पडि लेहण थिर लोभ;
अशुभ रोध शुभ योग करण तप शुद्धि नगीन;
सीतादिक मरणांतिक सहे गुण सतावीश. ॥ ११० ॥

दुहा.

मुनि महानंद अर्थी सन्यासी, भिक्षु निर्ग्रंथ आतम उपासी,
मुक्त माहण महात्मा महेशी, दान्त अवधूत निति शुद्ध लेशी. १११

ढाल.

श्री नवकार समो जगि मंत्र न यंत्र न तंत्र.
विद्या नवि औषध नवि एह जेवे ते धन्य।
बहु ढल्यां बहु एहने जापे सुरत सिद्ध.
एहना ध्यानथी सिद्धा नमि विनमीने सिद्ध ॥ १२० ॥

दुहा.

सिद्ध धर्मास्तिकायादि द्रव्य, जिनम नवकार ए भणे भव्य;
सर्वभुवनमां दर्शे ए समाण्यो, महानिशीथे भण्यो परिवनाण्यो॥१२१॥

ढाल.

गिरिमांही जेम सुरगिरि तरुमांहि जिम सुरसाल.
सार सुगंधमां चंदन नंदन वनमां विशाल;
मृगमां मृगपति खगपति खगमां तारा चंद्र.
गंगनदीमां अनंग सुरूपमां देवमां इंद्र. ॥ १२२ ॥

दुहा

जिम स्वयंभूरमण उदधिमांहि, श्री रमण जिम महल्ल सुभटमांहि।
जिम अधिक नागमांहि नागराज, शब्दमां जलद गंभीरगाज॥१२३॥

ढाल.

रसमांहि जिम इख्खुरस फुल्लमां जिम अरविंद,
औषधमांहि सुधा वसुधा धवमां रघुनंद;
सत्यवादीमां युधिष्ठिर धीरमां ध्रुव अविकंप,
मंगलमांहि जिम धर्म परिच्छद गुणमां संघ ॥ १२४ ॥

दुहा.

धर्ममांहि दया धर्म मोटो, ब्रह्मव्रतमांहि वज्जर कछोटो;
दानमांहि अभयदान रुडुं, तपमांहि जे कहेवुं न कुडुं. ॥ १२५ ॥

श्री यशोविजय वाचककृत.

पार्श्वनाथ भाव पूजा स्तवनम्.

सुविधिविधि भावीएजी, अंतरंग जे भाव.
ते विनु द्रव्य आचरणा करुंजी, नावे भवजल पार।
सुरंगा भविका पूजो—ए टेक. ॥ १ ॥

दातण करतां भावीएजी, प्रभु गुण जल मुख शुद्ध;
जीभ उतारी ममतनीजी, हो हुं निर्मल बुद्ध. सुरं ॥२॥
पवनाए स्नान करीभावीएजी, धारी पावन विध्यान;
अंगुछे अंग लोपवीएजी, जाणुं हुं अवदान. सुरं ॥३॥
क्षीरोदकना पोतीआंजी, चिंतवो चित्त संतोष;
अष्ट कर्म संवर भलोजी, आठ पडो मुखकोष. सुरं ॥४॥
ओरसीयो एकाग्रताजी, केशर भक्ति कल्लोल;
श्रद्धा चंदन चिंतवोजी, ध्यान घोळ रंगरोळ. सुरं ॥५॥
भाल (बहु) प्रभु आणा भलीजी, तिलकतणो ए भाव;
जे आभरण उतारीएजी, ते उतार्या परभाव. सुरं ॥६॥
जे निरमाल्य उतारीएजी, तेतो चित्त उपाध;
पखाल करतां चिंतवोजी, निर्मल चित्त समाधि. सुरं ॥७॥
अंगलूहणां बे धरमनांजी, आत्मस्वभाव जे अंग;
जे आभरण पहेरावीएजी, ते स्वभाव निज संग. सुरं ॥८॥
जे नववाड विशुद्धताजी, ते पूजा नव अंग;
पंचाचार विशुद्धताजी, तेह फूल पंचरंग. सुरं ॥९॥
दीवो करतां चिंतवोजी, ज्ञानदीप सुप्रकाश;

रुषभजिन स्तवनम्.

ढाळ फडखानी.

ऋषभ जिनराज मुज आज दिन अति भलो,
गुणनिलो जेण तुं नयन दीठो;
दुःख टळ्यां सुख मिल्यां देव तुज निरखतां,
सुकृत संचे हुवो पाप नीठो. ऋषभ. ॥१॥

कल्प साखे फल्यो कामघट मुज मिल्यो,
आंगणे अमियना मेह वुठा;
मोह महिराण महिभाण तुज दरसणे,
क्षय गया कुमति अंधार जूठा. ऋषभ. ॥२॥

कवण नर कनक मणि छोडि तृण संग्रहे,
कवण कुंजर तजी करह लेवे;
कवण बेसे तजी कल्पतरु बावले,
तुज तजी अवर सुर कोण सेवे. ऋषभ. ॥३॥

एक मुज टेक सुविवेक साहिब सदा,
तुज विना देव दूजो नही हुं;
तुज वचन राग सुखसागरे झीलतां,
कर्मभर घर्मथी हुं न बीहुं. ऋषभ. ॥४॥

कोडि छे दास प्रभु ताहरे भलभला,
माहरे देव तुं एक प्यारो;
पतित पावन समो जगतनो धारि कर,
मेहर करि मोहि भवजलधि तारो. ऋषभ. ॥५॥

मुक्तिथी अधिक तुज भक्ति मुज मन वशी,

श्री शीतल स्तवनम्.

राग अडाणो.

शीतल जिन मोहे प्यारा, शीतल जिन मोहे प्यारा;
भुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउ के जिउ हमारा. शीतल. १
जोत शुं जोत मिलित जब ध्यावे, होवत नहीं तब न्यारा;
बांधी मूठी खुले भव माया, मीटे महा भ्रमभारा शीतल. ॥२॥
तुमें न्यारे तब सबहि न्यारा, अंतर अमारा उदारा;
तुमही नजीक नजीकहे सबही, ऋद्धि अनंत अपारा.शीतल. ॥३॥
विषय लगनकी अग्नि बुझावन, तुम गुण अनुभव धारा;
भइ मगनता तुम गुण रसकी, कुन कंचन कुन दारा.शीतल. ॥४॥
शीतलता गुण हो(ओ)र करत तुम, चंदन काइ बिचारा;
नामही तुमचा ताप हरत हे, वाकु घसत घसारा. शीतल. ॥५॥
करहो कष्ट जत बहोत हमारे, नाम तिहारो आधारा;
जस कहे जन्म मरण भय भागो, तुम नामे भवपारा शीतल. ॥६॥



श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी कृत

समुद्र वहाण संवाद.



दुहा.

श्री नवखंड अखंड गुण, नमी पास भगवन्त;
करशुं कौतुक कारणे, वाहण समुद्र वृत्तांत ॥ १ ॥
एहमां वाहण समुद्रनां, वाद वचन विस्तार;
सांभलतां मन उल्लसे, जिम वसंत सहकार. ॥ २ ॥
मोटा नाना सांभलो, मत करो गुमान;
गर्व कर्यो रयणायरे, टाळ्यो वाहणे निदान. ॥ ३ ॥
वाद हुओ किम एहने, मांहोमांहे अपार;
सावधान थइ सांभलो, ते सवि कहुं विचार. ॥ ४ ॥

ढाल.

(थाहरां मोहलां उपर मेहझरोखें कोयलीरेके कोयली ए देशी. ॥

श्रीनवखंड जिनेश्वर केसर कुसुमस्युंरे, के० कुसुमस्युं ।
मंगळ कारण पूजीं मणमी मेमस्युंरे, के मणमी मेमस्युं ।
प्रभू पाय लागी मागी शकुन वधामणारे के०
विवहारि श्री पासना लेता भांपणांरे के ले० ॥ १ ॥
श्रीफल प्रमुखें वधावी रयणायर घणारे के र०
वाहण हकारीने चालिया ते सवी आपणारे के ते०
पणहीदीई आसीस कहे वहिला आवजोरे के वेला०
हीरचीर पटकुल क्रयाणां लावजोरे के क्रि० ॥ २ ॥

---

१ व्यवहारि. २ मणमी हीर.

सुख नवि राखें भाखें साचुं वागीआरे के सा०
राजकाज निर्वाहे ते नवि हाजियारे के ते० ॥ ८ ॥
दरिया तुमेछो भरिया नवि तरिया कुणेरे के न०
तुमे कोईथी नवी डरिया परिवरिया गुणेरे के परि०
तो पिण गुण मद करवो तुमनें नवी घटेरे के तु०
गुदानि वात कहेस्ये वटाऊ जे अंटेरे के जे० ॥ ९ ॥
जे निज गुण स्तुत सांभलि सिर नीचुं धरेरे के सि०
तस गुण जाई उंचा सुरवरनें घरेरे के सु०
जे निज गुण मुखि बोले उंची करी कंधरारे के उंची०
तस गुण नींचा पेसि वेसे तले धरारें के वेसे तले० ॥१०॥

दुहा.

एह वचन सायर[1] सुणीं, बोले हलुआ बोल;
सी तुजने चिंता पडी, जा तुं निगुण निटोल. ॥ १ ॥
आपकाज विण जे करइं, मुखरी परनीं तात;
पर अवगुण व्यसनें हुई, ते दुखिया दिनरात. ॥ २ ॥
वाहण कहे सायर सुणो, जे जग चतुर सुजाति;
ते दाखें हीतसीखडी, तेमत जाणे तात ॥ ३ ॥
जो पणि परनी द्राख खर, चरतां हांणि न कोय.
असमंजस देखी करी, तो पिण मन दुख होय ॥ ४ ॥

ढाल.

(विजय करी घरी आविया, वंदि करे जयकार ए देशी ॥
सिंधु कहे हवे सिंधुर बंधुर नादविनोद,
घटतो रे गर्व करुं छुं पामुं छुं चित्त प्रमोद;

१ सागर.

पत्त लक्ष जब तसतो पर्वत उपरिथाई,
कोपाटोप धरी गणो वज्र ग्रेई सुरराय;
तरफटी पडीयारे ते सवी एक ग्रहे मुज पत्त,
तब मेनाक रहीओ ते सुखीओ अक्षतपत्त ॥ ७ ॥
जग जसचराचर जस तनुं माया पील्ई चीर,
ते लक्ष्मीनारायण गोवर्द्धन धरधीर;
मुजमांहे पोढ्या हेजे सेज करी अहिराज;
होड करे कुंण माहरी हुं तिहुअण[1] सिरताज. ॥ ८ ॥
वाहण पाहण पणि तुजथी भारें तुं कहेवाय,
हलुओ पवन जकोर्ले डोर्ले गडथर्ला खाय;
तो हलुया बोलडा हलुओ छे तुम पेट,
मुज मोटाई न जाणें ताणें निज मति नेट. ॥ ९ ॥
गिरुयाना गुण जाणे जे हुई गिरुआ लोक,
हलुआर्ने मति तेहना गुण सवी लागे फोक;
वांझि न जाणेरे वेदना जेहुई प्रसवतां पुत्र,
मूढ न जाणें परिश्रम जे हुइ भणतां सूत्र. ॥ १० ॥

दुहा.

सायर जब इम कही रह्यो, वाहण वदे तब वाच;
मा आगल मोसाळनुं, ए सवी वर्णन साच. ॥ १ ॥
वाणीनें जिम ग्रंथ गति, सुरतिथि हरिने जेम;
कांई अजाणि मुज नही, तुम मोटाई तेम ॥ २ ॥
विस्तारुं छुं गुण अमे, ढांकुं छुं तुम दोष;
तो एवडुं स्युं फुलवुं, सो करवा कंठ सोष ॥ ३ ॥

१ त्रिभुवन.

आकाश मोटो पिण कालोजी, सा०
नान्हो चंद्र करे अजुआलोजी. सा० ॥ ४ ॥
आपे मोटाई अपनी कीजीजी, सा०
तिहां तेजवंत ते नानी कीकीजी; सा०
नानी चित्रवेल धीराजेजी, सा०
मोटो एरंडो नवी छाजेजी. सा० ॥ ५ ॥
नान्हो पंचजन्य हरि पूजेजी, सा०
तस नादे त्रिभुवन धुजेजी; सा०
नानो सिंह महागज मारेजी, सा०
नानो वज्र ते शैल विदारेजी. सा० ॥ ६ ॥
नान्ही औषधि जो होइ पासेजी, सा०
तो भूत प्रेत सवि नासेजी; सा०
नान्हे अक्षर ग्रंथ लखायेजी, सा०
तेहनो अर्थ ते मोटो थाएजी. सा० ॥ ७ ॥
तुमे रावणनुं सोचहिरोजी, सा०
इहां सार असारनो वहिरोजी; सा०
तुमे मोटाई नांखी ढोलीजी, सा०
निज मुखे निज गुण रस घोलीजी. सा० ॥ ८ ॥
तुमे रावणनुं बल पोरव्युंजी, सा०
पिण नीति शास्त्र नवि पोरव्युंजी; सा०
चोर संगी तुम्हने जांणिजी, सा०
रामचंदे बांध्या ताणीजी. सा० ॥ ९ ॥
वन द्वीपादिकनी सोहाजी, सा०
ए भुमिनो गुण संदोहाजी; सा०

ते देखी मद मत वहजोजी, सा०
मद छांडिने छाना रहजोजी. सा० ॥ १० ॥

दुहा.

एह वचन श्रवणे सुणी, पाम्यो सायर खेद;
कहे तुज स्युं बोल्तां, पामु छुं निर्वेद. ॥ १ ॥
जेहथी लक्ष्मी उपनी, परणी देव मोरार;
सिरसिपु तेजिहुओ, ते अम कुळ निरधार. ॥ २ ॥
ताहरुं तो कुल काठनुं, जे पोलां घणुं खाय;
तुज मुझ विच जे अंतरो, ते मुख कह्यो न जाय. ॥ ३ ॥
वाहण कहे कुल गर्वश्यो, माहरुं पणि (पण) कुल सार;
सुरतरुं जेहमां उपनो, वंछित फल दातार. ॥ ४ ॥
पशु पंखी मृग पथिकने, जे छाया सुख देत;
ते तरुअर[1] अमकुल तिलो, पर उपगार फळंत. ॥ ५ ॥
हुं लछि[2] दिउं (दिउ) पुरुषने, ए गुण मुजमां सर्व;
मुज तुजमां विवाद छइ, तिहां कुलनो स्यो गर्व. ॥ ६ ॥

ढाल.

कुल गर्व न किजे सर्वथा, हुओ रुडे कुल अवताररे;
गुणहिणो जो नर देखीए, तो कहिइ कुल अंगाररे. कुल० १
जो निज गुण जग उज्वल कर्यो, तो कुलमदनुं स्युं किमेरे;
जो दोषे निज काया भरी, तो कुलमदथी कुल लाजेरे; कुल० २
कचराथी पंकज उपनुं, हुओ कमलानुं कूलगेहरे;
कहो कुळ मोटुं के गुणवडा, ए भांजो मन संदेहरे. कुल० ३

१ तरुवर. २ लक्ष्मी.

मुग्धने हठ ते मन गमो, पंडितने गुणनो रंगरे।
फणिमणि लेई राणा गमारे, शिर धारे निज अंगरे. कुल० ४
खोटो कुलमद गृस्त करे, पिण गुण विण निगवादरे;
खोटो सिंह वन गयो,कुमरो पिण कुरंगे करसे सिंह नादरे.कुल० ५
नाम ठाम कुल नवी पूछीइ, जे जगमांहे गुण गरिठरे;
रवि चंद पयोधर मधुगनां, कुल कुंणे जाण्यां कुंण दिठरे.कुल० ६
रयो निमकुल रयो पारको, लखि अवगुण करि गुण मूकरे;
छांडिजे मल तनु उपनो, सार धारइ वनतु फूकरे. कुल० ७
इम जांणिने कुल मद छांडिए, कीजइ गुणना अभ्यासरे;
गुणथी जस कीर्ति पामीइं, लहीई जग लोक विलासरे. कुल० ८

दुहा.

वचन सुणी एह वाहणनां, भाखे जलनिधि बोल;
हुं रयणायर जगतमां, वाजे मुझ गुण ढोल. ॥ १ ॥
जग जननां दारिद्र हरे, रयणतणी मुज राशि।
होट करे शी माहरी, ए गुण नहिं तुज पास. ॥ २ ॥

ढाल.

वाहण कहे सायर सुणोरे, तुम्हे रयण धरो छो साधांरे;
पण एक हाथिआपरे, वेमे मुझ डाचारे. तुम्हे० ॥ १ ॥
तुझने दमिरे आकामिरे, रयण दिओ अम्ह लोकनेरे;
गज भाजे शुंढि करीरे, तव तरुअर फलवरस्येरे.
तिम दिइ कृपणपरें दम्पारे, पिण देतो नावि हरमेरे. तुम्हे० ॥ २ ॥
तुम्हने रसहीइं पीलि सेलडीरे, अगर दहिओदिइवासोरे;
फालाने गाढि भरियारे, कृपण दमीया तिम पासारे. तुम्हे० ॥३॥

---

१ पण. २ रत्नाकर.



पणि तरस्या पशु पंखीयारे लो, तेहथी नासे दूररे. क० ॥ ३ ॥
मछादि तुजमां रह्यारे लो, ज्युं विषमां विषकीडरे; क०
पिण हंसादिक तुज जलेरे लो, पामे बहुली पीडरे. क० ॥ ४ ॥
मारग जे तुजमां थइरे लो, चालई पुण्य प्रभावरे; क०
तिहां एक कुखें अम्रारडीरे लो, मरु मंडलीनी वावरे. क० ॥ ५ ॥
जो खुर्दे जल माहरुंरे लो, तो पाडइ जन सोसरे. क०
बहुले पणि जल तुज छतिरे लो, रति न लहै चिहुंओररे.क०॥ ६ ॥
जे पर आशा पूरवेरे लो, छति सारु दीई दानरे; क०
थोडुं पिण धन तेहनुंरे लो, जगमां पुण्य निदानेर. क० ॥ ७ ॥
खंड भलो चंदन तणोरेलो, स्यो लाकडमें भाररे, क०
सज्जन संग घडी भलिरेलो, स्यो मूरख अवताररे. क० ॥ ८ ॥
साद हुओ तुम घोघरोलो, घोरयो एक नाकाररे, क०
जो जाणो जस पामीएरेलो, तो सिखो दान विचाररे. क० ॥ ९ ॥

दुहा.

सिंधु कले सुणि वाहण तुं, हुं जगतीरथ सार;
गंगादिक मुजमां मले, तीरथ नदी हजार. ॥ १ ॥
तीरथ जाणी अति वडुं, मुजने पूजे लोक;
गंगा सागर संगमे, मले ते जनना थोक. ॥ २ ॥
वाहण कहे तीरथपणुं, तुज मुख कह्यो न जाय,
गंगादिक तुजमां भले, तास मधुर रस जाय. ॥ ३ ॥
गंगादिक आवि मले, तुजने रंग रसाल;
जाइ नाम पिण तेहनुं, तुज खारें ततकाल. ॥ ४ ॥

---

१ जाय.

वारण करे सुणी सायर, तुझ जलधीइ मलवंतोरे;
हरि निर्देम छोरि फरी, जोर घन गर्जतोरे;
गर्जित पपीया जलधरे, तुझ नेह मनमां नवि टरे;
में मेहने जल दान दीधुं, इस्युं तुझ स्युं उपरे;
जिम करणनुं धन हरत, नरपति नेह मनमें चिंतवे;
में पुन्य भवमांहे कीधुं, तिम अगस्तनुं तुं ल्ये. ॥ ३॥
जो छे ताहेरे साचली, जल धरस्युं बहु प्रीतरे;
तो ते उन्नत देखतो, स्युं पामे तुं भीतरे;
तुं भीत पामे सदा गाजे, मेह चमके वीजली;
अंबराडंबर करे वादल, मले चिहुं पख आफली;
हुं सदा कंपे विची झंपे, नाभिइं जाणे हवे;
रखे ए जल सर्व मारहं, ले इस्युं मन चिंतवे. ॥ ४ ॥
तुझ जल जे घन संग्रहे, ते हुइं अमीअ समानरे;
ते सघलो गुण तेहनो, तिहां तुझ किस्यो गुमानरे;
तिहां मान स्यो तुझ टामनो, गुण बहु परिजगि देखीए;
तृण गाय भखे दुध आपे, न ते तृण गुण लेखीए;
स्वाति जल हुइं पडिओ फणी, मुखें गरल मोती सिपमां,
इम सार तुझ जल करी, मीठा मेह वरसे द्वीपमां. ॥ ५॥
जीवन ते जल जांणीइं, जे वरसे जलधाररे;
ताहरुं तो जलजिहां पडे, तिहां होइ अखैर खाररे;
तिहां होइ खारो जिहां, तुझ जलविगाडेरेली मही,
दाधे दवे ते पल्लवेइं नवि पल्लवे तुझ दही;

१ सागर. २ होय अमृत. ३ अगर.

सुरपति नरपति जेहनो, नवि पामे दीदार;
ते पशु पति शिर उपरे, मुझ सुत छे अलंकार. ॥ २ ॥
जेहने देखी उगतो, मणमें राणा राय;
ते सुतनि रिधि देखतां, मुझ मन हरख न माय. ॥ ३ ॥
मुझ नंदन वरस्ये यदा, किरण अमी रसपूर;
तव दाधो विण पालवे, मन मथ तरु अंकुर. ॥ ४ ॥
कुंकमवरणी दृतिका, मुझ सुत निरखंत;
मन शृंगार जगावती, माननीं मान हरंत. ॥ ५ ॥
मानुं मनमथ रायनो, कलस राय अभिषेक;
लंछन तीलकमले करीत, सोहे मुझ सुत एक. ॥ ६ ॥
मुझ सुत मंडल सार्थतुं, सरवर रति आनंद;
जिहां मथमञ न करइ, उडइतारावींद. ॥ ७ ॥

ढाल.

हवे वाहण विलासि कहे, वदन विकासीरे;
सुत रुद्धिथी हासी सायर तुज तर्णारे. ॥ १ ॥
तुझ सुत उचग संगीरे तुं पातक रंगीरे;
निज गोत्रजा चंगी तुं अंगीकरेरे. ॥ २ ॥
नवि लोकथी लाजेरे, अभिमाने भाजेरे;
वली पाप करीने गाजेरे, पापीओरे। ॥ ३ ॥
इम हृदय विमासीरे, सुत तुझथी नासिरे;
हुओ अंबर वासी, सुरनर वंदीओरे. ॥ ४ ॥
द्विजराजते कहीएरे, अति निर्मल लहियेरे;
गुण उजल महिये, लोके चंदलोरे. ॥ ५ ॥

---

१. पण.

निज गुण होय तो गाजीए, पर गुण सविअकयथ्य;[१]
जिम विद्या पुस्तक रही, जिम बली धन पर हथ्थ. ॥ ४ ॥

बीजु तुझ नंदन कला, निति निति घटति जाय.
राते केवल तगतगे, दिवसे अगोचर थाय. ॥ ५ ॥
मोटी जसकीर्ति कला, पर उपगार विसेस;
अखय अखंडित सर्वदा, मुझविल्से सवी देस. ॥ ६ ॥

ढाल.

ठठर आंबा आंबलिरे ए देशी.

सायर कहे वाहण सुणोरे न कहे मुझ गुण सारः
काढे पूरा दुधमांरे, कहेतो दोष विचार.
सबल एम न मान्यानि वात,
तुन करे मुझ गुण ख्यात, मुझ मोटाइ छे अवदात. सब० ॥१॥
जे दिन कूप सरोवररे, सुके नदी अने निवाण;
भर उनालें ते दिनेरे, वाधे मुझ उधान. सब० ॥ २ ॥
मबल मताप रवितणेरे, नवि सुके मुझ निर;
मेरु अगनथी नावि गलेरे, जो पिण हेम सरिर. सब० ॥ ३ ॥
हुं संतोष करी रहुरे, अविचल ने थिरथोभ;
ठाम रहित भमतां रहोरे, वाहण तुं स्यो अति लोभ. स० ॥ ४ ॥
खिमावंत गंभीर छुरे, नवि लोपुं मर्याद;
तुं मुझ गुण जाणे नहीरे, स्युं तुझ स्युं मुझ वाद सब०॥ ५ ॥
वाहण कहे सुण सायररे, नवि सके तुं ठांम;
उनाळे जल अति वधेरे, पिण नवी आवे कांम सब० ॥ ६ ॥
सोष न पांमु कोयथीरे, एम मद धरे एक;

---

१ अकृतार्थ. २ निस नित्य.

ढाल.

शरण कहे सरण जगि धर्म विण को नहीं,
तूं सरण सिंधु मुझ केणी भांति;
शरण आव्या तणी सरम ते नवि रहे,
जेह आया हुं सुजस रांति वा० ॥ १ ॥
काल विकराल करवाल उछालतो,
फूक मूके मबल ज्वाल सीराखि;
जूड अति दृढ जन शूल सरडो हतो,
यम महिष सांभरई जेह निरखी. वा० ॥ २ ॥
घोर करि सोर मल्लवारिया यारिया,
मारिया क्रोध आव्यें हकार्या;
भूत अभूधुत यमदूत चम भयकरा,
अंजना पुत नूतन वकार्या वा० ॥ ३ ॥
हाथि हथिआर सिर टोप आरोपिया,
अंगि सन्नाह भुज वीर वळयां;
झलके तइं नूर दलपूर, बिंदु तव मल्यां,
वीररस जळधि ऊधांण वलियां. वा० ॥ ४ ॥
नीलसितपित अतिस्याम पाटल धजा,
वसन भूषण तरुण किरण छाजे;
मानुं यहुं रूप रण लछि हृदय स्थले,
कंचूआ पंच वरणी विराजे. वा० ॥ ५ ॥
भूर रणतूर पूरे गयण गडगडे,
आयहें कटकनी सुभट कोडी;
नावस्युं नावरण भाव भर मेलवी,
केलवी घाउ दीई मुझ मोडी. वा० ॥ ६ ॥

निशिचर धीर जन्धार वरस्यै मगुं,
संचरे गगन यक पवन नेजा।
गाज साजे सधन्न ढोल गाजे मयल,
वीज जिम कुन चमके सनजा. वा० ॥ ७ ॥
क्रूर रसस्तर गज कुंभ सिंदूर सम,
रुधिरनां पूर अविदूर चाले;
स्वर भूरई समर भूमि सुरण परिसीम,
कायर धरा हेठ चाले. वा० ॥ ८ ॥
भेद प्रभेद व्रत संद जे करी थाके,
उच्छले तेहना नाल गोला;
वरसता अगन रण मगरोमे भर्या,
मानुं ए यमतणा नयण डोला. वा० ॥ ९ ॥
घोर भुंके महा कोप मूंकइ वलि,
वाहण उपर भरी अगन होका;
कोकवाणे वदे सुभट रण रस चडे,
विरूद गाइं तिहां वंदिलोका. वा० ॥ १० ॥
उसरी घोर जाल सोर बहु पाथरइ,
अगन तिहां सबल लागे;
बालतो गालतो टालतो दर्प तुझ,
तेह हुं देख तो किम न जागे. वा० ॥ ११ ॥
द्वोप पिण सलसले मेदिनी चलचले,
खलभलई शैल ते समर रंगे।
लडथडे भीक इक एक आगइ पडे,
सुभट सन्नाह मादन अंगे. वा० ॥ १२ ॥
घोर रण जोर चिहु ओर भट फेरवे,

देव पिण देखता जेह चमके;
घाण बहु धूमथी तिमिर पसरे सबल,
कौतुकी अमरना डमरु डमके. वा० ॥ १३ ॥
एहवे रण शरण तुं किस्युं मुझ करइं,
खलपारे दुष्ट देखइ तमासा,
एक तिहां धर्म छे शरण माहरे वडुं,
सुजस दिइ ते करें सफल आस्या. वा० ॥ १४ ॥

दुहा.

सायर कहे तुं भोगवे, घणा पापनो भोग;
एह मुझ निंदा करी, स्यो अधिको फल भोग. ॥ १ ॥
विंध्यो खीले लोहने, तु निज कूख मझारि;
बांध्यो छे दृढ दोरस्युं, निज वस नहीं लगार. ॥ २ ॥
दुम्भर भरीइं तुझ उदर, घालि धूलि पाषाण;
वाय भरयो भभके घणुं, तुं जगि खरो अजाण. ॥ ३ ॥
वाहण कहे सायर तुमो, वडा जडा जग जगि;
देखो छो गिरि प्रजलतो, नवि निज पगविच अगि॥ ४ ॥
मेरु मथाळे तुं मथ्यो, राम सरे वलीदद्ध;
उच्छाली पाताल घट, पवने कीधो अद्ध. ॥ ५ ॥
पाडे मूर्छा ते दुखे, मुखे मुंके छइं फिण.
संनिपातिओ घुरघुरे, लोटे कचरे लीण. ॥ ६ ॥
भोगवतो इम पाप फल, नवि जाणे निज हांणि.
दोष ग्रहे तुं पर तणा, ते नवि आवे माणि. ॥ ७ ॥

ढाल.

सायर कहइं तुं बहु अपराधि, वाहण जिभ तुं अधिकी वाधी;
खोले मर्म अनेक अमारां,दाख्यां छिद्र अमे तुमारां. ॥ १ ॥

जो हवइ न रहिस्ये निंदा करतो, मर्म उघाडिसि माहरा फिरतो;
पोत तरंग घुमरमां बोळी, तो हुं नाखीस तुझनइं ढोली. ॥ २ ॥
तुझ बीण मुझ नवी हास्ये हांणी, तुझ सरिखा बहु मेलीस आंणी।
जो अखूट छे नृप भंडार, तो चाकरनो नहीं को पार. ॥ ३ ॥
उष्ण अगन तापे हुइं गाढुं, जेह स्वभावें जल छे टाढुं,
तिम तुझ मर्म वचनें हुं कोप्यो, क्षिमावंत धुरजें आरोप्यो. ॥ ४ ॥
मोटास्युं हठ वाद नीवारयो, निति मार्ग तें तें विसारयो;
मुझ केपिं तुं रहिय न सकइ, पडे एकल हरी नइं धक्केइं. ॥ ५ ॥
कोड तरंग शिखर परि वाधें, जइ आकीर इतें अंबर आथें;
एकतरंग सबल न भाजइं, काज घणा तुं स्युं इम लाजे ॥ ६ ॥
पवनझकोलें दिइ जळभमरी, मानुं मद मदिरनी घुमरी;
तेहमां शैलशिखर पणि तूटइं, हरि सय्या फणी बंध छुटइं. ॥७॥
नक्र चक्र पाठिन अतुछ उछळता, आछोटइं पुछ जइं लागे.
अंबर जल कणीया छमकइं, ग्रहगण गण ताता मणीया.॥ ८ ॥
एहवे मुझ कोपे तुझ सर्वे, गलस्यें जे मनमां छे गर्वे;
जे बोले असमंजस भाषा, ते फल्लसे सघली सन शाख ॥ ९ ॥

दुहा.

वाहण कहें मन राखजे, सायर पाछुं जोर;
धाछे ते करिस्युं कृपा, फूली करे बकोर. ॥ १ ॥
वचन गुमान तुझ भरियां, सावनका तिहां माप;
केतां कार्श्यां कारीइं, जिमतां दहि ने माप. ॥ २ ॥

ढाल.

सायर स्युं तुं उचछे, स्युं फूले छे फोक;
गरव वचन हुं नवी सहुं, देस्युं उत्तर रोक. सा० ॥ १ ॥

घात प्रसंगे में कहिया, उत्तर तुझ सार;
मर्म न भेदिया ताहरा, करि हृदय विचार. सा० ॥ २ ॥
निज हित जाणी बोलिइं, नवि शास्त्र विरुद्ध;
रुसोपरि वलि विष भखो, पणि कहीइं शुद्ध. सा० ॥ ३ ॥
छिद्र अमारां संवरे, तुं किहारें गमार;
छिद्र एक जो तनुं लहिइं, तो करेरे गमार. सा० ॥ ४ ॥
शोकनी परिं नीत अम्हतणा, ताकें तुं छिद्र।
पणि रखवाळो धर्म छे, ते न करें निद्र. सा० ॥ ५ ॥
बोळे शरणागत मति, जे नीर मझार;
कठिन वचन मुख उचरें, ते तुंझ आचार. सा० ॥ ६ ॥
पणि मुझ रक्षक धर्ममां, नहि तुझ बल लाग;
जेहथी मुझ बुडे नहीं, भंग बावनमो भाग. सा० ॥ ७ ॥
मनमां स्युं मुझी रहीओ, स्युं माने निःशंक;
अम्ह जातां तुझ एकलो, उगस्यै तो पंक. सा० ॥ ८ ॥
तुं पर समरथ छइं, करवा असमरथ।
श्रम करवो गुण पात्रनो, जाणे गुरु हत्य. सा० ॥ ९ ॥
हंस विना सरवर यथा, अलिविण जिम पद्म;
जिम रसाळ कोकिल विना, दीपक विण सद्म. सा० ॥१०॥
मलयाचल चंदन विना, धन विण जिम द्रंग;
सोहे नहिं तिम अम विना, सा तुझ वैभव रंग. सा० ॥११॥
गगन पात भयथी सुइ करि, उंचा पय टीटोडी;
जिम तुझ तथा, कल्पित मद थायें. सा० ॥१२॥
उन्हो स्युं थाइ वृथा, मोटाई जेह;
तेतो बेहु भली हुइ, बेहु पखसनेह. सा० ॥१३॥

---

१ रुसो.

दुहा.

राजा राज्य प्रजा सुखी, प्रजा राग नृप रूप;
निज कर छत्र चमर धरइं, तो नवी सोहे भूप. ॥ १ ॥
मद झरते गज गाजते, सोहे विंध्य निवेश;
विंध्याचल विण हाथीआ, सुख न लहे परदेश. ॥ २ ॥
अगर्नेय[१] वन ते दूर, सिंह करें जिहां वास;
वनने कुंज छाया विना, न लहें सिंह विलास. ॥ ३ ॥
हंस विणा सोहें नहिं, मानस सर जळपुर;
मानस सरवर हंसला, सुख न लहें मह मूळ. ॥ ४ ॥
इम सायर तुम्ह अमथीली, मोटाइ विहु परिरूप;
जो तुं चूकइ मद कर्यो, तो तुम्ह सम गुन लख. ॥ ५ ॥
हंस सिंह करिवर करे, जिहां जाइ तिहां लील;
सर्वे ठामिं तिम सुख लहे, जे छे साधु सुशील. ॥ ६ ॥
सायर कहे तुम्ह गुन विना, मरी न सकें टग्ग;
तुम्ह प्रसाद विलसें घणो, हु दिभो छुं तुम्ह मग्ग. ॥ ७ ॥
तुम्ह सारसुं बोलि वली, जो तुं छांडी लाज.
तो स्वामी द्रोहातणी, सीख होस्ये तुम्ह आज. ॥ ८ ॥
बाहण कहे सायर सुणो, स्वामि ते संसार;
गिरुभो गुण जाणी करइ, जे सेवे नीसार. ॥ ९ ॥
भार वहो जन भाग्यनो, बीजो स्वामी मूढ,
जिम खरवर चंदन तणो, एहुं जाणे गूढ. ॥ १० ॥

---

१ अगनेन्द्र.

ढाल.

मोलिडारे हंसारे वि० ए देशी.

त्रि वयणेरे हवे कोपेइ चड्यो, सायर पाम्योरे क्षोभ;
न झकोळेरे जल भर उच्छली, लागे अंबर मोभ. एहवे० १
री देतांरे पवन फीरी फीरीरे, वाले अंग तरंग.
वर वेदीरे भेदी आवता, भाजे ते गिरिशृंग. एहवे० २
त भयंकर सायर जब हुओ, वीज हुई तव हास;
हिरों गाजीरे गगने घन करे, डम डम डमरु विलास. एहवे० ३
लनइ जोरइरे अंबर उच्छलई, मच्छ पुछ करी वंक;
हण लोक नइरे जो देखो हुइ, धूमकेतु शतसंक. एहवे० ४
प अगननोरे धूम जलधि तणो, पसर्यो घोर अंधार;
यभर श्वासेरे मस्तक परिनद्दा, वाहणना लोक हजार. ए हवे० ५
गन चढावीरे वेग, तरंगनें तले घालिजेरे पोत;
द श्रट तुटेइरे बंधन दोरनां, जन लखजो तारे जोत. ए हवे० ६
ंगर त्रोडीरे दूरि नांखीइं फूल तणा जिमविंट;
गनउछालीरे हगिइंपाजरी, मोडि मंडप मिटि. ए हवे० ७
ुटे आडारे बंधन थंभनां, फूटइ बहु ध्वज पंड;
ूक वाहण पणिछो तापरि हुइ, कुपा थंभ सत खंड. ए हवे० ८
बल शिला वचि भागा पाटीयां, उच्छलते जल गोट;
माश्रित दुखथीरे वाहण तणो हूओ, मानु हृदयनो फोट. ए हवे० ९
उत्पत्तिरे प्रलय परि हुंति, लोक हुआ भयभ्रांत;
ायर रोवेरे धिरवे धृत धरी, परमेस्वर समरंत. ए हवे० १०

दुहा.

इमसायर कोपे हुओ, देखी वाहण विळख;
विघि आवि वांणी वदे, उदाधि कुमरनां करक. ॥ १ ॥

दुहा

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ २ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ३ ॥

राग,

[illegible]

[illegible]

[illegible] १

[illegible]

[illegible] २

[illegible]

[illegible] ३

[illegible]

[illegible] ४

[illegible]

इन्द्र अमर मुनि [illegible], अगम्य नाम जंपी ५

पतीत पावन प्रभु नाम, [illegible]

[illegible] ॥ ६ ॥

ते प्रभु शरण [illegible], [illegible];

[illegible] ॥ ७ ॥

[illegible];

[illegible] ॥ ८ ॥

तातें फिरत अंबर बलाका, उज्वल फरिहरया केतु प्रभु०॥ ३ ॥
कुआथंभ शिरि सनाफीओहो, मानुं नाचको वंस,
नाचें फिरती नर्त्तकी हो, श्वेत अंसुक धरी अंस. प्रभु० ॥ ४ ॥
सोहें मंडित चिहुं दिसें हो, पट मंडपचोसाल;
मानुं जयलछीतणो हो, होत विवाह विशाल. प्रभु० ॥ ५ ॥
बेठे सोहें पांजरीहो, कूआथंभ अग्र भाग;
मानुं के पोपट खेलतोहो, अंबर तरुअर लागि. प्रभु० ॥ ६ ॥
नव निधान लछि लही हो, नवग्रह हुआ प्रसन्न;
नव सढ ताण्यां ते भणी हो, मोहीं तिहांजन मन्न. प्रभु० ॥ ७ ॥
राचे माचे नाचे बहुजन, सब ही बनावत साज;
वाजे वाजां हरखना हो, पाम्युं ते अभिनव राज. प्रभु० ॥ ८ ॥
मेघाडंबर छत्र विराजें, पट मंडप अति चंग,
बीजे बिहु पखसोहताहो, चामर जलधि तरंग. प्रभु० ॥ ९ ॥
एक वेलि सायर तणी हो, दूजी जनरंग रेली;
त्रिजी पवननी प्रेरणा हो, वाहण चले निजगेलि. प्रभु० ॥ १० ॥
पवनहींथे दूनो वयो हो, पवन सिखायो विग.
जन मन गुरा कीएहो, वेग विद्या अति तेग. प्रभु० ॥ ११ ॥
प्रासें कच्छप चिहुं दिसे हो, आवत देखी जहाज;
मानुं जिहांजना लोकनांहो, नासें दालिद्र धरी लाज प्रभु० ॥ १२ ॥
इणिपेरे बहुआडंबरेरे, चाल्यां वाहण सुविलास;
निज इछित बंदिर लहीहो, पाम्यां ते सुजस उल्लास. प्रभु० ॥ १३ ॥

चोपाई.

मंदिर जइ मांड्या बाजार, व्यापारी तिहां मिल्या हजार;
जिम आवलिका देव विमान, तिम तिहां हाट बन्या असमान. १
रयण सेणी तिहां सोहे घणीं, कमलाहारतणीं सुखे भणी;

ढाल.

(गच्छपति राजिआ हो लाल—ए देशी)

भरियां किरियाणां वणां हो, हीरचीर पटकुल;
मेल्यां निज बंदिर भणी, हवे वाहण पवन अनुकुल. १
हरखित जन हुआ हो लाल, पाम्या जय तासरि सुखलील; आ०
दोय पंखि जिम पंखिआ हो, रथ जिम दोय तुरंग. ह० २
रणकई ध्वजमणीकिंकीणी हो, कनक पत्र झंकार;
वाहण मिसें आवे रमा, मानुं गरुड करी संचार. ह० ३
थापई जलझोलंचिइं हो मानुंझरे मदपूर;
वाहण चले जिम हाथिओ सिरकेसर छवि सिंदुर. ह० ४
भरकसी सगर नाखीइं हो, बाहिर तेह न जाइं;
एहवे वेगे चालिआं मनि वाहण हरखइ न माइ ह० ५
वाहण भाणस्युं तोली हो धर स्वर गयो सार;
तुला दंड थंभे करी, जोइ लेजो एह विचार ह० ६
कामिकरइं जिम कामीनि हो हृदय स्थल परिणाह;
सायर तिम अवगाहतां, हवइ वाहण चल्या उच्छाह ह० ७
गुण जित्यो सायर रहुओ हो सहजें मानिधकार;
देख्यां बंदिर आपणां, हवे हुआ जय जयकार ह० ८
बंदिर देखि वावटा हो धरिया लाल अग्र भाग;
मानुं बहुं दिननो हुं तो, तेह प्रगट कीओ चितराग. ह० ९
बंदिर देखि हरखस्युं हो, मेहलि नाली आवाज;
जे आगइं सुर गजतणो, वलि मेहतणो स्यो गाज ह० १०
वाज्यां वाजां हरखनां हो, करे लोक गीत गान
पदे छंदे गुहिरो दिइं मानुं सायरकरतान ह० ११
साहमा मिलवा आवीया हो, सज्जन लेइ नाव।

अंगों अंग मिलावडें, तो टळियां विरह भाव. इ० १२
आव्या वाहण सोहामणां हो ए या वेला कुल,
परपर हुवा वधामणां, श्री संघ सदा अनुकुल इ० १३
विवाही व्यवहारी भेटें मुदा हो. प्रथम पाम नवखंड;
सुरभि द्रव्य पूजा करे. लेई केसरने श्रीखंड इ० १४
मोतीना कर्या साथीयाहो. आंगीरचण बनाव.
ध्वजा आरोपी अतिभली, वळि कलस सुविभाव इ० १५
इण परि जेहना द्रव्यना हो, आव्यो प्रभुने भोग;
सायरथी मोटुं करओ तेजिहाज मिळि सवि लोक. इ० १६
ए उपदेस रच्यो भलो हो, गर्वत्याग हित काज;
तपगच्छ भूषण सोभतां, श्री विजयप्रभसूरिराज. इ० १७
श्री नयविजय विबुद्ध तणो हो. सीस भणे उल्लास,
ए उपदेसे जे रहे, ते पामे सुजस विलास. इ० १८
मुनि विबुध संवत जाणी एहो, ते हर्ष प्रमाण;
कवि जसविजए ए रच्यो, उपदेस चढो सुप्रमाण. इ० १९

इति यानपत्र यादस्पत्योः परस्परं प्रशस्यसंवादालापः समाप्तः॥
श्री घोघा मंदिरे.

श्री योगनिष्ठबुद्धिसागरेण शोधितम्.



श्री ज्ञानसारकृत भावषट्त्रिंशिका.

दुहा.

क्रिया अशुद्धता कछु नही, भाव अशुद्ध अशेष;
पर सप्तम नरके गयो, तंदुल मच्छ विशेष. १
भाव शुद्धता जो भइ, कहा क्रिया को चार;
दृढप्रहार सुगते गयो, हत्या कीनी च्यार. २
साधु क्रिया कछु नहि करी, रुषभ देवकी माय;
भाव शुद्धथी सिद्धते, सिद्ध अनंत समाय. ३
साठ सहस वरसे करी, किरिया अतिहि अशुद्ध।
भरत आरीसा भुवनमें, भावशुद्धतें सिद्ध. ४
नमुकारसी व्रत नही, करतो कूर आहार;
भावशुद्धतें सिद्ध ते, कूरगडु अनगार. ५
भावक्रिया अविशुद्ध ते, मेलयो नरक समाज;
भावशुद्धतें सिद्ध के, प्रसन्नचंद रुषिराज. ६
केवल श्री करणी करे, अभव्य लिंग संपन्न;
येगती भेदे नहीं, भावशुद्धतें शून्य. ७
पूर्व कोडी देसोनता, क्रिया कठीन जन कीन;
कुरड वकुरड नरक गतिः, अशुद्धभावते लीन. ८
वंश खेल किरिया करी, साधु क्रिया नहीं लेस;
इलापुत्र केवल धरे, कारण भाव विशेष. ९
चरण क्रमण किरिया करी, गुरुकुं खंध चढाय;
भाव शुद्ध केवल भजे, नव दक्षित मुनिराय. १०
कपिल द्रुमक अति लोभ वश, लालचमां लपलीन;
शुद्ध भाव तबही भज्यो, आतम पदवी लीन. ११

पातै किरिया आतमा, तीन काल असंबंध. २४
धर्मि अपने धर्मकुं न, तजे तीनुं काळ;
आतम ज्ञान गुण नित्यमें, जड किरियाकी चाल. २५
प्रकृति पुरुषकीजोड है, सदा अनादि स्वभाव;
भवस्थिति परिपाकते, शुद्धातम सद्भाव. २६
शुद्धातम सद्भावता, शुद्ध भाव संयोग;
भाव शुद्धकी सिद्ध ते, पाक काल परिभोग. २७
काल पाक कारण मीले, किरिया कछु न काम;
पातन किरिया बीन पडे, बाल दसन अभिराम. २८
काळ पाककी सिद्ध ते, सहज सिद्ध के जाय;
बीन वरषा फुले फले, ज्युं वसंत वनराय. २९
भव परिणत परिपाक विन, भाव शुद्ध नही होय.
मुनि करणी कर नरक गति, कुरड चकुरड दोय. ३०
क्रिया उथापी सर्वथा, वंछक किरिया चार;
ये वंछक लक्षण रहित, सो सब शुद्धाचार. ३१
निश्चय सिद्ध जोलुं नही, व्यवहारे जिवमेल;
जोलुं पिय फरसे नही, तब गुडीया सुखेल. ३२
निश्चे हुंति सिद्ध नहीं, विवहारे दे छोड;
एक पतंग आकाशमें, फीर दोरीदे तोड. ३३
जोलुं भाव न शुद्धता, तोलुं किरिया खेल;
घाणी गोळु पीलदे, तोलु नीकसे तेल. ३४
ज्ञान धरो किरिया करो, मन शुद्ध भावो भाव;
तो आतममें संपजे, आतम शुद्ध स्वभाव. ३५
जोलुं कारिज सिद्ध नहीं, तोलुं उद्यम खेद;
घट कारजकी सिद्धते, उद्यम खेद निषेध ३६

ફોરો દુખ દેદાર ધરિક ઉઠાવે ચતુરે સો. ૩
હરિ દુન દનદો ચણીદા ઉત્તમ મેર સુણીંદજો.
મન ધર્મધ્વ મોંઘા ધવ મઝ મારણીરે સો,
હરિ મે ધન્ને મરૂ પંચસર મદા મુનિચંદજો;
હરિ પુરી પરોપારટ પાળીને વારણીરે સો. ૪
હરિ નિર્લોભી મે પ્રભુકી ગાથા ગિનાવજો.
ઉત્તમ પદવી હરિ મેરની દેવધીરે સો;
હરિ બે શુભ પચ્છાપક ધર્મ લાભ દેનારેગા,
રમીક નેમ મન ચરણકમળ નિરધ મેવધીરે સો. ૫

બુદ્ધિસાગરજીની ગુંહળી સમાપ્ત.

मूर्तिपूजन महिमा.

સવૈયા.

મુર્તિ તણો મહિમા છે મોટો.
સમજે કોઇક સંસ્કારી.
મૂર્તિ પૂજનથી પ્રાપ્ત થાય છે,
સુંદર શિવ પદની યારી.
એ મહિમા સમજાણો આજે,
સદ્ગુરુ બુદ્ધિસાગરથી;
એ માટે એઓના ચરણે,
નમન કરૂં યે આ કરથી. ૧

वीर वाक्य तो सूत्रो मांहि,
 प्रतिमा पूज्य बतावे छे.
सिद्ध पुरुष पण मूर्ति केरां,
 गायन रूडां गावे छे.
मूर्ति भेद म्हने समझाणो.
 सद्गुरु बुद्धिसागरथी,
अजितसागर थयो कृतारथ,
 सद्गुरु पद शिर धरवाथी. ९

श्रीमद् बुद्धिसागरपष्टकमिदम् गुर्जरभाषायाम्.

छंद–त्रिभंगी.

जय नित्य उजागर, करुणाना घर, वैरागिवर, धर्माकर,
जय सुखना सागर, अनुभव आकर, ज्ञानसुधाधर, शिक्षाकर;
जय श्रेष्टदशाधर, दीनदयाकर, समतासागर, दीक्षाधर !
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्णप्रभाकर, प्रेमाकर. १

प्रभुपद निवासी, छो गुणवासी, अविचळ प्यासी, विश्वासी,
प्रभुपंथ प्रवासी विभु विलासी, वाणी सुधाशी, देवांशी;
तद्स्थान तपासी, तजी उदासी, उरथ उल्हासी शांत्याकर !
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर. २

गुरु ! म्हने तमारी, प्रेम खुमारी, लागीभारी, छे कारी,
हुं जाउं विचारी, करवा न्यारी, उरमां धारी, आवारी;

वत १३२७ मां रचाएलो गुर्जर भाषा साहित्यनो रास.

॥ श्री सात क्षेत्रनो रास ॥

॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

सवि अरिहंत नमेवि, सिद्ध सूरि उवझाय

पनर कर्म भूमि साहु, तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥

जिणसासणमांहि जो सारो, चउदह पूरवतणउ समुधारो

समरिउ पंच परमेष्ठि नवकारो मन्न खेत्रि हिव कहउ विचारो॥२॥

धुनु धुनु तेमि संसारे, जिहं जिणवर स्वामी,

गुरु सुसाहु जिणभणिउं, धम्मु सुगइ गामी ॥ ३ ॥

चारि अंगि दुल्लहु मणु जम्मु, अतीअविशेषि (अत्यंत विशेषे) जिहि

१ सर्व. २ अरिहंत=तीर्थंकर. ३ सिद्ध=अष्ट कर्मथी रहित परमात्मा. ४ सूरि=आचार्य. ५ उवझाय=भणावनार उपाध्याय. ६ साहु=साधु. ७ हिव=हवे. ८ कहउ=कहुं. सर्व अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय अने पन्नर कर्मस्थित साधु ए पंच परमेष्ठिना पादमां नमस्कार करीने सात क्षेत्रनो विचार कहुं छुं. पंचपरमेष्ठि-रुप नवकार छे ते जिन शासनमां सार छे. तेमज चौद पूर्वनो समुद्धार छे. ॥ २ ॥ ज्यां जिनेश्वर स्वामी छे ते देव तरीके छे. सुसाधु गुरुरुप छे. सुगति देनार जिनकथित धर्म ए त्रण रत्ननी जेने प्राप्ति थइ छे ते जीव जगत्मां धन्य धन्य छे. ॥ ३ ॥

९ धुणु धुणु=धन्य धन्य. १० जिहं=ज्यां. ११ जिणवर=जिनवर. १२ सुसाहु=सुसाधु. १३ जिणभणिउं=जिनभणित. १४ धम्मु=धर्म. १५ सुगइ गामी=सुगति गामी. १६ दुलहु=दुर्लभ. १७ मणु जम्मु=मनुष्य जन्म १८ जिहिं=ज्यां. १९ धम्म=धर्म.

त्रीजइव्रति परधन परिहारो, [35]चउथइ शीलतणउ सवारो ॥१२॥
परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांमचइ कीजइ
ईणपरि भवसहसमुद्धो जीव निश्चय तरीजइ ॥ १३ ॥
[36]छट्ठउंव्रतु [37]दिसितणउ प्रमाणु, [38]भोगुवभोगव्रत सातमइ [39]जाणु,
अनरथ व्रतु [40]दंड आठमउं होइ, नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥१४॥
देसावगासी दसमुव्रतु नथी मूह पोपध
व्रतु अग्यारमसउ जम समतूलु ॥ १५ ॥
व्रतुवारमउं [41]अतिथिसंविभागुओ तोइ सुकतियरतनमागो
[42]जईण मारगि चालइं संसारे, [43]धनु सक्रियारथे ते नरनारे ॥१६॥
समकितमूल [44]व्रतु वारइ गहिय धरमि पालेउ
सप्त क्षेत्रि जिन भणिया तिह वित्तु [45]वावेउ ॥ १७ ॥
सप्तक्षेत्रि जिन [46]कहिया महामुनि [47]वितु वावेजिउ विवहपार जिन
वचहु आराधीउ अवक्रमु साधिउ लहइ पारु संसारुसारे॥१८॥
सपते क्षेत्रि जिनसासणिहि सगली कहीजइं, अथिरु रिधि धनु
इव्यु वीजमुतहि जिवावीजाइ तेहि क्षेत्रि वावे त्रण थानकि
लाभइ देवलोको कणनी थाहरु मुक्तिफलो पामउ निसंदेहो॥१९॥

[48]पहिलउं क्षेत्र सुजिणहभुवण करावउ वंगूजीछे महिमाकरइ
सहु श्री चउविह संघमूलगनारउ गूढ मंडइ पुछ कुवउकी सहिउ

३५ चउ=चोथे. ३६ छट्ठुं व्रत. ३७ दिशिनुं परिमाण ३८ भोगोपभोगव्रत ३९ जाण ४० अनर्थ दंड आठमुं. ४१ अतिथि संविभाग ४२ यतिना मार्ग. ४३ धन्य. ४४ वृत्त. ४५ वावो. ४६ कह्यो. ४७ वित्त ४८ पहेलुं क्षेत्र.

भामंडलु[६९], सुर कुसुमवृष्टि, सींहासणु[७०], छत्र, भेरि, चमर देवंजु गिहिण जोइ फवणु मभुत्तुए थितिएसी वीतराग मेलही अवर न होइ सुरादिक जिनसेव फरइं[७१] नवि सगलइं[७२] ॥ २५ ॥

तउ जिन सविजीव विशेषिहि करीयइ भागउ जिण भुवणि तेउ समुद्धरियइ लीपिउ[७३] धउलीउ[७४] भीगु देइ चीत्रामु[७५] लिपीजइ इणपरि[७६] भुपणु ससारीय जन्मह[७७] फलु लीजइ ॥ २६ ॥

अतीउजुकाइं किपिठामु जिणभुवण सीदाइ, तंनिश्चिइं करावीयए वहुफलु[७८] बोलइ आपणि सामीउ[७९] वीतरागु ईणपरि भणेइ[८०] जीर्णोद्धारहणा[८१] पुण्य[८२] अतित होइ ॥ २७ ॥

बीजं[८३] खेत्रु सुजिनहबिंतु तेइहां विचारो मणिमय रयण सुवर्णमए बिंबरूपमकारे, हिव[८४] जिनभुवणह गृह चैत्यदेवदारा छकहीमइ कीजइ कणयभिंगार[८५] कलस जे नीर भरीजइ[८६] ॥ २८ ॥

---

६९ भामंडल. ७० सिंहासन. ७१ करे. ७२ सघळे ७३ लीपेलुं. ७४ धोळेलुं. ७५ चित्रामण. ७६ भवन ७७ जन्मफल लीजे. ७८ वहुफल बोले. ७९ आपणो स्वामी वीतराग. ८० एवी रीते कहे. ८१ जिर्णोद्धारतणा. ८२ पुण्य अत्यंत होय. वीतराग भगवान् कहे छे के जे जिर्णोद्धार करावे छे तेने निश्चय अत्यंत फल थाय छे. बीजुं क्षेत्र जिनेश्वर भगवान्नी प्रतिमा भराववी ते जाणवुं. मणिमय प्रतिमा, रत्न प्रतिमा, सुवर्णमय प्रतिमा करावीने जिन भवनमां तथा घर देरासरमां पधरावीने श्रावक जळकळश भरीने तेनी पूजा करे. ८३ बीजुं क्षेत्र. ८४ हवे. ८५ कनक भृंगार. ८६ भरीजे.

सारूयार भवियण मणिमोडइ सोनांकेरी पालठी कीज जिनपते सोइइ बीजउरुउं सामी जिण हथ्थे ॥ ३५ ॥

इणि विवेहि न हुय विशेषि हि जिणवर पूजसलख्खणीय करउ मनरंगिहि नवनवभंगिहि श्री संघनयण सुहामणीय ॥३६॥

एतीअजीइ आभरणतणी पूजा नीपन्नी हिव आरंभि सुजिणह अंगि सुरहां कुममपन्नी कीजइ कुसमेव गेरीयए पूजकारणि रूयडी वावरीइ दीहु देव काजि अन्न इच्छा जीछवडी ॥ ३७ ॥

रायचंपु, केतकी, जाइ, सेवती परिमल वउलि, सिरीवालउ विअलु अनुकरणी पाडल, नीलउत्री विविध पूजामाहि सोहइ अति विगी वितिपति दीसइ रूपडे तिणि नवनवभी ॥ ३८ ॥

नीकउ कणयरु, पूजमाहि वरणकि सोहंती परिमलु पसरइ असमजाति पाच्छइ विहसंती कुंदु अनइ मचकुंदु वालु जुई परिजाते पास कुसमि कर पूजउ तुम्हि तिहुयणपत्तो ॥ ३९ ॥

सुरहउ सरूपउवावची अअइ इकल्हार, सहुयइ वीतराग सामी सुरसार, नीलउत्री नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ईणपरिपूजइ सामि सामल नरनारी धन्न ॥४० ॥

पएहेरामणीयइ पूजतोइ नीकी सोहंती तउ नक्षत्र इतणी मालडी वाशूंवेमी पाखलायइ माहि तुयण बिंह केरी आणी कुसम पूजियइ तेसवि संखेवी ॥ ४१ ॥

समोसरणु जो पूजीयए जोतिन्नि पयारू विहु पखि दीसइ वीतरागु जहि तिहुयणसारू तउपूजानी पत्नीय पूवि धूप उट-

३ भविजन. ४ बीजोरु. ५ हवे. ६ वकुल ७ श्रीवालो. ८ पहेरामणी ९ समवसरण. १० वीतराग. ११ त्रिभुवनसार.

ज्मली जाइवीजणियं ऊखेवितु गुरु तहि घंटी वाजइ ॥ ४२ ॥

धूप अगुरु सादेति वीरे सिद्धावदा कीजइ संदंडासणे[12] अतिरूपडे जिणभुवणु[13] पुंजीजइ[14] आलेरिहिंमजूमली अन्नय चउकी वट दोईउ आले फरउ भलीय मंगलीकं[15] अट्ठय ॥ ४३ ॥

वद्धमाणु[16] वरकलसु[17] अनइ भद्दासणु[18] छत्तु[19] दप्पणु[20] नंदावरतु[21] तहि साथीउ[22] श्रीवत्सु[23] अठ मंगलीक नीणपाटि भरियइ जिन आगईण परिजंघन वेचीइ एतले खइ लागइ ॥ ४४ ॥

दीवा कीजइ जिनभुवणि छत्र[24]त्रउ दीजइ, चमर दलंते वीत-राग तेहि धनु वेवीजइ तेउऊलोवकारोवियइ जिणभुवण[25] गम्भारे वाटा मखर अलंवकीजइ जिनवारे ॥ ४५ ॥

तोरण वंदु खालि बारि साथि जिणभुवणि, पूजा जोइ सहु कोइ आवइ[26] तीणि[27] खिणि, पूजा जोइ वा जिणहभुवणि[28] भोइ सुह गुरु आवइ तउ संथिहि आग्र कहु करीउतीछेरहाविय ॥ ४६॥

पडपउ वेला एक प्रभु अहांउच्छयु होसिइ संघ वपणुमाने[29] वि सुगुरु तिसि सिरं[30] पइसइं[31] तिणि[32] वेलां वइसणां[33] पाटि जोइ

---

१२ संदंडासणे. १३ जिनभुवन. १४ पुजीए. १५ मंगलीक आठ, आठ मंगलनां नाम. १६ वर्धमान. १७ वरकलश. १८ भद्रासन. १९ छत्र. २० दर्पण. २१ नंदावर्त २२ साथियो. २३ श्री वत्स. ए आठ मंगलनां नाम छे २४ छत्रत्रय २५ जिनभुवन गभारे. २६ आवे. २७ ते क्षणे. २८ जिनभुवन. २९ शुभगुरु. ३० शिक्षा. ३१ देवे. ३२ ते वेला ३३ बेसणां.

पाल्हा पउकीवंदि वदंतनि सुगुरु तउ भावइ[34] भला[35] ॥ ४७ ॥

पइगइ सहूइ श्रमण संघ सावय[36] गुणवंता जोया उच्छव[37] भुवणि मनिहर[38] धुपुधरंता[39] तीछे तालारस पडइ घहु भाट पढंता अनइ लकुटा[40] रस जोईइ खेला नाचंता ॥ ४८ ॥

सविहू मरीपा सिणगार सवितेयड तेवड तेवडा नाचइ धामीयरं भेरतइभावइ रूडा सुललित वाणी मधुरि सादि[41] जिणगुण गायंता तालमानु वंदगीत मेलु वाजिंत्र वाजंता ॥ ४९ ॥

तिविलझालरि[42] भेरु[43] करडि कंसालां वाजइं, पंचशब्द मंगळी फहेतु जिणभुवणइं छाजइ[44], पंच शब्द वाजंति भाडु अंवर वहिरंती, इणपरि[45] उछवु[46] जिणभुवणि श्री संघु करंतउ ॥ ५० ॥

तउ आरती परगुण काउं आरती पटऊपरि ऊठिउ; संघ परि विधिहि सहिओतउ साहीउ बिहुकरि नीरलुण[47] ऊतारियए कुसम[48] ऊतारी संघपति ऊठी सेसिभरइं सहस्थिहि माडी संघपति आरतीछिया हुइ जउ वा चाडरीआरती जोग थांभली अआणउग रूपरी ॥ ५१ ॥

पाछइ जिण गुणगाइ पढइ साहू पाल्हउल लोक श्रीसंघवीह अहातुदियइ जाइ जेसाजोग ऊतारीया आरतीआ ताइ संघपति

---

३४ भावे. ३५ भला. ३६ श्रावक. ३७ उत्सव. ३८ मनोहर. ३९ धूप. ४० लकुटरस (डांडीयारस) ४१ मधुर सादे. ४२ झालर. ४३ भेर. ४४ छाजे. ४५ एणीपेरे. ४६ उत्सव. ४७ नीरलुण–जलनी साथे लुण उतारवुं ते) ४८ कुसुम.

धरम करइ मृगतं भणियउपइ सिद्धितु ॥ ५९ ॥

त्रिहु भुवणहतणउ जाणिय वरए आगममाहिविचारु,[६४] चउदपूरव इग्यार अंग मृगय करइ गोतमु मुतिहारु ॥ ६० ॥

सूत्रहार[६५] तहिनिउछणा एवर० जिणि[६६] जाणिउ[६७] एउ मूत्रात्रि पदी[६८] आपीय वीरनाथिइ[६९] मृ० आथउं गोतम गुरु ॥ ६१ ॥

केवलनाण पुच्छितिगय उवर० गयसावि पूरवधर जे हुंता गुरु[७०] महाधणउं मृग० गयासुते मुनिवरा ॥ ६२ ॥

अरथ महाइन विधाहर एवरपजिण वयणुं निरुपमु तीणकारणि श्री संघ मीलीय मूनण्यो घेटवीउ आगमु ॥ ६३ ॥

भक्षाभक्ष[७१] सो छुट्टियए वरए अन्नी गन्नी गम्मा गंध्र कृत्या कृत्य परीछिय ए मृग० जाणीय इ धम्माधम्मु[७२] ॥ ६४ ॥

नजीवीलाहु उलिउ एवरए च्छाहियइ एहु विचार श्री सिद्ध गुलिलय[७३] लिपए मृग० जोउ[७४]त्रिहुभुवणहसारु ॥ ६५ ॥

प्रीजउ[७५]खेत्रु इ गयावीय वए वरपविसि संवेगुधरेउ वेवीउ विएहविनरत मोइचलिखावीयए[७६] मृग० श्री सिद्धान्त[७७] जएउ ॥ ६६ ॥

पाहदंद पोथाकराउ एवर० पोथीयनीकीयनोट ज्ञान लग

---

६४ विचार. ६५ सूत्रधार ६६ जेणे ६७ जाण्युं. ६८ उपसेवा, विण्णेवा. धुवेवा १ उत्पन्न थवुं, विनाश पामवो, मूळ रूपे स्थिर रहेवुं एम वस्तुना त्रण धर्म छे माटे आ त्रणने त्रिपदी कहे छे. ६९ वीरनाथे. ७० गणधरा. ७१ भक्ष्याभक्ष्य. ७२ धर्माधर्म ७३ सिद्धान्त लखावीए ७४ जेनो. ७५ त्रिजुं क्षेत्र ७६ जोयुं लखावीए ७७ सिद्धान्त.

जे जिनआण सदाछड़ रत्तू,बावीसपरीसह सहइ अपमत्त जिन आदेसु परइ सिरिउपरि, तेजिमहामुनि नीपइ सुवरि ॥ ७६ ॥

बइतालीस दोषमु विसुद्धउ, लियइ आहार जे जिणवरि दिट्ठउ, इंद्रिय विषय व्यापिनगूंजइ, तवि, नीमि, संजमि खणवि न मूंचइ ॥ ७७ ॥

किसुं घणउं हउं कहुं विचारो, मुनिरयण गुण न लहउंपारो, अनुव्रतु पालइ जे जिन आण, ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥७८॥

मसेसीइ मुनिजिहिया तेगुणजिणवरि श्रीमणी कहिया एकु विशेषु पुणी श्रमणी दीसइ उपगरनोइ पंचवीसइ ॥ ७९ ॥

चालइ खड्गधार तोऊपरि, सीलवंत ते नमीइं सुरवरि, महासती जछइ अपमत्त, धाराभणइ तेहिपवित्त ॥ ८० ॥

जीहां जिन आण हियइ परिणमी, ते श्रमणी तोइ मेरुहसमी जे सुद्धी जिण आण करंती, धनुधनु श्रमणीइ महासती ॥८१॥

जिण सासणु जेहिय इम उज्जाआलिउ, फसिमल पावपंकु

९० रक्त. (आसक्त)९१ शिर्षपर. ९२ बेतालीस दोष रहित आहार लेनार. ९३ क्षण पण. ९४ न मूके. ९५ केटलो.९६घणो ९७ हुं. ९८ कहुं. ९९ पांच अनुव्रत. १०० पाळे. १ मेरु पर्वत समान. २ श्रमणी (साध्वी) ३ एक. ४ विशेष. ५ पुनः ६ सा-ध्वी पचीश उपकरणधारे. ७ तरवारनी धार.८ जे छे.९ प्रमाद रहित. १० पवित्र. ११ आज्ञा. १२ हैयामां. १३ मेरु समान.१४ शुद्धि. १५ धन्य धन्य. १६ जिन शासन. १७ अजवाळ्युं. १८ पाप. १९ पापपंक.

-पखालिउ[20], एउ साहू अनइ श्रमणी खित्त, वावन धामी हुइउ सवितू ॥ ८२ ॥

जा हिवडांहूं संपति अच्छइ, ईणीय वरासन पामि मिच्छइ, -जे भलखेत्रि वित्त न वाविसि, पाछइ[21] परभवि[22] किसउ[23] लुणाविसि[24], ॥ ८३ ॥

वरापटली विनु वाविसि सारु, उगिसिलउ मुग्धकाइ कतवारु, जउ भलो, खेत्रि वरापहवाविसि, तउ इक गुणइ अणंतगुण पाविसि ॥ ८४ ॥

एतलं क्षेत्रं जिनवरि कहिया, वाते धर्म्मी[25] भावणसहिया[26], तउ सींचे अनुमोदनापाणी[27], जिमहुइ सफली गयानिरुवाणी ॥८५॥

ईणपरि वाविजइ सुखेत्रु[28], दीजइं भक्त पानु सूझंतू[29] वियादा-तुंज्ज दीजइं सारु, जिणु भणइ ते पुन्य नहीं पारु ॥ ८६ ॥

ओषध आदि सहु सूझतउं[30] दीजइं, नियघर नियघरिहुंतउं[31] अनिउज्ञ काईं मुनि उपगरइ, तंसूझतूं वहरउं करइ ॥ ८७ ॥

जंजंमुनि जोअइ[32] सूझंतउं[33], तंतं दीजइ नियघरहुंतउं[34], गुरु आवंती कीजइ अभिगमणउं[35], दीजइ भक्ति थोभवंदणउ[36], ॥ ८८ ॥

विनय वयावच्च[37]भनीउ विशेषिउ, कीजइ सुवीउ महा मुनिदे

२० धोयुं. (पखाल्युं) २१ पछे. २२ परभवमां २३ शुं. २४ लुणीश २५ धर्मि. २६ भावना सहित. २७ अनुमोदनाजल. २८ क्षेत्र. २९ सुजतुं ३० सुजतुं. ३१ पोताना घेर होय ते. ३२ जोइए. ३३ सुजतुं. ३४ पोताना घेर होय ते. ३५ सामा जवुं ३६ स्थोभ वंदन. ३७ वैयावृत्य.

खीउ, पर्युपासित तही कीजइ घणीय, जिमजिम जिनवरि आगमि: भणीय ॥ ८९ ॥

एहज परिश्रमणी जाणेवी, करउं भक्ति तुम्हि हरिस धरेवी, जेम्हइ महामुनि दीजइ, तंनं श्रमणी कीजइ ॥ ९० ॥

[३८]आगइतोइ [३९]पूर्विहि सुणीजइ, [४०]धनुधनु सारथवाह कहीजइ, [४१]धीउ [४२]विहिराविउ जिणिमुणिंदउ, तिणि फालि [४३]हूयउ पढम [४४]जिणंदू, ॥ ९१ ॥

[४५]हथिणाउरि [४६]नयरि श्रयांसि, हियरो त्रिडारिपु भुरिपुरिमि, तिणि फलि तिणभवि केवलु [४७]ज्ञानु, दिउनु भविक मुनि इणपरि [४८]दानु॥९२॥

वीर जिणेसर छट्ठा मास, चंदण पारवेइको मास, नीणि दानि व संपनि पामी, दियउ [४९]दान तम्हि अनशन [५०]धामी ॥ ९३ ॥

जोइन संगविसीउं, मुनिशारावीउ गंद [५१]गीम [५२]घीउ, तिणि फलि नु सर्वाथ सिद्धि पामी, पाउइ होसिइ [५३]त्रिभुवनस्वामी ॥ ९४ ॥

इउ [५४]भल्लउ मेरु यारउ विन, सिरमुह संपनी देइन भवि न भवि मामि माल्लु आगमि अभिनि ॥ ९५ ॥

हिवतोइ श्रावक तणओ सेन भजी पडीमइ मइ जिनशासन तणी सूपिं अनि मनइं पर्नागिर किणइ सुश्रावक नांजिवइ

---

३८ आगितो ३९ पूर्व ४० धन्य धन्य ४१ घी ४२ वहोराव्युं. ४३ थयो ४४ जिनेंद्र ४५ हस्तिनापुर ४६ नगरी ४७ केवलज्ञान. ४८ दान ४९ [illegible] ५० अनुसरवाने ५१ [illegible] घीर. ५२ घी. ५३ त्रिभुवन स्वामी ५४ भलुं.

दणि गृहवास ऊपरि ज्ञानुना सुपसरीउ तिहुयणि ॥ २ ॥

तिम तुम्हि वावेउ भलीपरि भविउइउ खित्तु[७३] लहिमउ लुण निरवाण नयरिति पतिद्दाउहूतुपहिलुं कीजइ महाविनउं गुणश्रावक ज्ञानाउ जाणी पाय पोय पखोलीय सइहाविलेउ कुंकुम वाणी ।३।

इछइ भोजनुं भलीयभक्ति सविवेकिहि सयउ दीजइ श्राविकां पउ आगमि कहिउ उपरिउगटि फल पान कापड अनुमानिया दीजइ निजभक्ति भलागरूयइ वहुमानि ॥ ४ ॥

भद्रधेसर जिम श्रावकह दीजइ आवास लीणाजे जिनवयणि अछइ वणहनिवास आछिलनी परि एक कीसउ परिहुइ अइअ संखाविधि मानु फरसइ सहू नरनारी दुःख ॥ ५ ॥

वाछिलनी परि एकजीतहउंकहीउ नमसाकउ एकहवार सकूसाह तुम्हकहीउ अजमूकिउं जीजो कीजइ कुणवकाजिए अति भलांभलेरांतो कीजइ साहमिय[७४] प्रति अजी अधिकेरां ॥ ६ ॥

कीधे काजे कुटुंब भाण अतिघणउ[७५] संसारेउ सोरे संकीजइ साहमियकेरउज कीजइ साहंमिअकाजिते परत भडारो इणपरि वाछिल श्रावकह कीजइ सुरवंगू हवते कहीइसिइ जिणभवणि वाछिल अंतरंगू[७६] ॥ ७ ॥

जिणपरि लोगथाकइ जिम संसारमझि वलिवलि एउ फेरु कीजइ श्रावक श्राविकारोहि घरपोयपधशालनी छे करिसइ धरमध्यान तुहराखि सविकालो ॥ ८ ॥

पडुजीवरक्षा[७७] सद्धि काल सीचछेदंसीतीसमकितसिउ वारय[७८]

---

७३ क्षेत्र. ७४ साधर्मिक. ७५ अतिघणं. ७६ अन्तरंग. ७७ पड्जीवरक्षा.

सावक्षेत्र इम बोलिलिया पुण एकु[92] कहीसिए कर जोडी श्री संघ पासि अविणउ मागीसइ[93] काइिउऊण आगउं बोलिउं उत्सूत्रूतो बोल्यामिच्छादुकडं श्री संघ वदीतुं ॥ १५ ॥

मूं मूरप तोट् ए कुण मात्र पुण सुगुरु पसाऊं अनइ जत्रिभुवन सामि वसइ हियडइ[94] जगनाहो तीणि प्रमाणिइ सात क्षेत्र इमकीधऊ[95] रासो स श्री संघु दुरियह[96] अपहरउ[97] सामी[98] जिणपासो[99] १६

संवत तेरसत्तावीस[100] एमहामसवाडइ गुरुवारि आवा यदसमियहि लइ पखवाडइ तहि पुरु हूऊ रासु सिव सुख निहाणू जिणचुवीसइ[1] भवीयणह[2] कारिसिइ कल्याणु[3] ॥ १७ ॥

जां[4] सिसिरवि[5] गयणंगणिहि[6] ऊगइ[7] महि[8] मंडलि ताव[9] रतउ एउरासु[10] भवियणा जिणसासणि निम्मल जग्रह नक्षत्र तारिका व्यापइं गयवंतु[11] श्री संघ अनइ[12] जिणसासणु[13] ११८ ॥

॥ इति ससक्षेत्र रास समास ॥

लि० मुनि बुद्धिसागर.

---

९२ एक. ९३ मागीश. ९४ हैयडामां. ९५ कीधो. ९६ दुरित. ९७ अपहरो. ९८ स्वामी. ९९ जिन पार्श्व=(पार्श्वनाथ.) १०० संवत १३२७ तेरसे सत्तावीशनी सालमां आ रास रच्यो. १ जिनचोवीश. २ भविकजन ३ कल्याण. ४ यावत्. ५ शशिरवि. ६ गगनांगणो. ७ उगे. ८ महीमंडलमां. ९ तावत् (त्यां सुधी.) १० ए रास तो. ११ जयवंतु. १२ अने. १३ जिनशासन.

सात क्षेत्रनो रास सं. १३२७ नी सालमां गुर्जर भाषामां रचायो छे. बुद्धि प्रमाणे सुधारो कर्यो छे. मूळ प्रति प्रमाणे मूळ छपाव्यो छे, अने तेमां कोइ ठेकाणे शब्दो सुधार्या छे. फुटनोट पण बुद्धि प्रमाणे यथाशक्ति करी छे तेमां दोष होय तो पंडितो सुधारशो, अने आ रास संबंधी गुर्जर भाषाना पंडितो शोध करशे तो आ रासने सारी स्थिति उपर मूकी शकशे. एम आशा रखाय छे शुभे यथाशक्ति यतनीयं ए न्याय अनुसरी प्रयत्न कर्यो छे. जिनमंदिर, जीर्णोद्धार, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, ज्ञान, आ सात क्षेत्र जाणवां.

शोधक मुनि.
बुद्धिसागर.

अथ श्री यशोविजयवाचककृत.
ब्रह्मगीता.

दुहा.

समरीय सरसती विश्व माता, होये कविराज जस ध्यान ध्याता;
करिय रंगरसभरि ब्रह्मगीता, वरणवुं जंबु गुण जग वदीता. १

राग फाग

ब्रह्मचारी सिर सेहरो, ब्रह्म मनोहर ज्ञान;
ब्रह्मवतीमांहि सुंदर, ब्रह्म धुरंधर ध्यान.

मोह अब्रह्म निवारण तारण तरण जिहाज,
जंबुकुमर गुण थुणतां जन्म कृतारथ आज. २

होय जस वदने शत सहस जिहा,
आउखु वळी असंख्यात दीहा;
तास पणि जंबु मुनि सुगुण गातां,
पार नावे सदा ध्यान ध्यातां. ३

शील सलिल जे पाले वाले चंचळ चित्त,
आप शक्ति अजुवाले त्रिहु काले सुपवित्त;
पाप पखाले टाले मोह महामदपूर,
ब्रह्मरूप संभाले ते निज सहज सनूर. ४

एहवा जंबु मुनि पुरुष सिंह,
जेहनी कोप लोपे न लीह;
भवतर्या शील सम्यक्त्व तुंबे,
स्त्री नदी मांहि ते केम विलम्बे. ५

सोहमवयणे जागी वयरागी सिरदार,
सोभागी वडभागी मागी अनुमति सार;
मातपिता मनियुजवे आठ कन्या उपरोध,
परणी परणी तरुणी जीपे मन्मथयोध. ६

आठमदनी महा राजधानी,
आठ ए मोह माया निशानी;
जगवशी करणनी दिव्य विद्या.
कामिनी जयपताका अनिद्या ७

सुर हटके जगमोहे लटके लोयण वंग,
नव यौवन मोहन घन भूषण भूषित अंग;

शृंगारि नारि माणो गमी रंग अनंत,
अनंतेकी गुणतेकी मधुर मरेकी मंत. ८

जेहने देखी रति मंद मंत,
थंभ हरिहर भमणे निरधेः
कवणनुं गीत रहे तेह आत,
जंबुनी टेक जाणि एक जात. ९

भार ते धुंधि भयंकर अंकर कर जिन लेइ माण,
थम कहि मोरलिने मन थयो फिरि जणिजग परिणाम।
मरर मंगलालिंगित देखी जंबु कुमार,
जुंभ धुंभ पादन जिहां नवभव प्रकार १०

पाप न थपण काह पाण .हार,
जंबुवर पेथ गमार गाते;
पाप दुर पद हुआ भगृह ठाम,
पंथ पुना कुमुम जंबु पासे ११

एणी नयनानी पेखा गइ धायां नरनारि,
ते तिहां पंखी देखी नयने पायी हारि;
कानि झाल्ड नवुंक नाखी रहयो मानु चक्र,
तेह सुदर्शन धारीस्युं पणि न हुवे वक्र. १२

नाकि मोती ते शुक्र छाकि,
गोलिका ते रयो मानु तारि।
छांटि करि जंबु पंथ नाइ लोपे,
रहे हलसी ते आभरण रूपे. १३

दिपदारा हिवे फोरवे जोर माया अंधकार,
जेहमांहि थंभ पुरंदरनो पणि नाहि पार;

तत्त्वविचार उद्योतने शस्त्रे ते जंबु कुमार;
मोष शक्ति करि संवरी पाम्या जगि जयकार. १४
जाणीये काम उत्पत्ति मूल,
थाइ संकल्पथी ते त्रिशूल;
ज्ञान धरी जो न संकल्प कीजे,
उपजे काम कहो कोणि बीजे. १५
हुओ अनंग तेसारुरे जोतुं धरतो अंग,
बाणकरण तांइ तांणीने नांपत होत अनंग;
थोथां कृदये स्युं होइ जो तुं चित्त विकार,
कांटे कांटो काढस्युं चिधिरि ब्रह्म विचार. १६
भावना इम क्षमादिक प्रपंची,
शस्त्र लीधां सकल तास पंची;
तेणि न वले ते नाठा कषाय,
पडि अवेलाइ कुणहोइ सहाय. १७
तुं जाणे जित काशी जगवासी कीयोजेर,
पणि जिनमांणनी आंणमां वर्तनो हुंछु सेर;
अम्ह साहमिणी शीतादिक अवलाथी पणि भग्ग,
तुजस्युं जुझस्ये किणिपरे इम कहि नाठा ते नग्ग. १८
सज्ज थाती हुंति मदन फोज,
आठ कन्या कथा सुणत मोज;
जंबुनी अडकथाये ते भाजे,
जंबु जीते अने कंदर्प लाजे. १९
आठ ते कामिनी ओरडी गोरडी चोरडी चित्त,
मोरडी परिमद माचती नाचती गीत;

दीठि गलावइ छोरडी चोरडी पाकी जेम,
जंबुकुमार ते देखवे कोरडी दोरडी तेम; २१

विश्व वशीकरणथी जेह सबला,
तेहनो नाम किम होइ अबला,
नाम माला तणी माम राखी,
जंबु धैर्य तणा सकल साखी, २२

आठ कन्या आप ते जननी जनक समेने,
चोरी करवा आव्या ते चोरने प्रभव सहेत;
ए सवि दीक्षा आदरी विचरी उग्र विहार,
जंबु ते पूर्वधर हुआ सोहम पट्टधार. २३

वर्ष अतिक्रमे अनुत्तर विमानी,
सुर अधिक सुख लहे ब्रह्मज्ञानी.
ते हुआ शुक्र शुक्लाभिजाति,
आत्मरति आत्मतृप्ति कर्मघाती. २४

ब्रह्मरूप निरुपाधिक आतमज्ञान ते योग,
इन्द्रजाल सम सघला पुद्गलना संयोग;
उपादान पुद्गलथी एकल उपनय होइ,
कर्ता नहि तिहां आतमा निश्चय सार्गी सोइ. २५

एह अध्यातम ते मोक्ष पंथ,
एहमां जे रह्या ते निर्ग्रंथ;
एह अंतःकरणे होइ शुचि चीजे,
विहित किरिया तेहमाहली कीजे. २६

नय होइ युक्ति जोतां किरिया ज्ञाननी व्यक्ति,
साधन करता दोइमां साधन शक्ति;

आणा विणा आचारमांहि आणे अनाचार;
जंबु भते इम सोहम कहे अंगे आचार. २७

ज्ञान किरियातणा इम अभ्यासी,
हुइ चिदानन्द लीला विलासी;
स्थानवर्णार्थ आलम्ब अन्य,
योग पांचे हुआ जंबु धन्य. २८
वली इच्छा प्रवृत्तिने थीरवली सिद्धि ए भेद छे चार,
प्रीति भक्तिने वचन असंग तिहां सुविचार;
सकल योग ए सेवी पामी केवलनाण,
मुगते पुहता तेहनुं नाम जपे सुविहाण. २९
खंभनगर थुण्या चित्त हरखे.
जंबु वसुभुवन मुनि चंद वरखे;
श्री नय विजय बुध सुगुरु सीस,
कहे अधिक पुरयो मनय जगीस ३०
॥ इति श्री यशोविजय विरचिता ब्रह्मगीता समाप्ता: ॥

श्री यशोविजय वाचक कृत.

आदि जिनस्य संस्कृतभाषायां स्तवनम्.

आदिजिनं वंदे गुणसदनं,
सदनंतामलबोधंरे;
बोधकतागुणविस्तृतकीर्ति,
कीर्तितपथमविरोधंरे. आ० १

मनभ्रमर.

ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने-ए राग.

मनः भ्रमर बहु भ्रमण करे भववनविषे,
घडी घडीमां नवनव वृक्ष जायजो;
गुंजारव करतो गर्वित थइ भावदे,
विषय पुष्पने देखीने हरखाय जो. मन० १

रागद्वेष बे पांखो काळी मेहनी,
पररहना मिषे [illegible]
नवनवरंगी विषय [illegible] जाता,
कामकमळमां लपटातो दुःख पामजो. मन० २

शाम्यवंशने कोतरतो जे तुर्तमां,
काळहस्तिथी काम कमळ भक्षायजो.
चौकी करतो काळहेलीयो थइ रहे,
रविविद्युत् पेठे ते चंचळ थाय जो. मन० ३

काळ अनादि विषय पुष्प सुंध्यां घणां,
मनभमराने तोषण तृप्ति न थाय जो;
अकळगति मनभ्रमरतणी क्षण क्षण विषे,
मनभमरो अहो त्रणभुवनमां जाय जो. मन० ४

मन भमराने पुरो समता पांजरे,
रखे न उडे लेशो बहु संभाळजो;
चौदभुवननो मोझीलो स्थिरता धरे;
त्यारे थावे झटमां मंगळमाल जो, मन० ५

ध्यान दोरीथी मनभमराने बांधीए,
अनुभव अमृत स्वाद करावो वेश जो;
बुद्धिसागर अन्तरमां समज्या थकी,
आत्मस्वभावे आनंद होय हमेश जो. मन० ६

ॐ शान्तिः

श्री सद्गुरु सत्तरी.

ओधवजीना राग.

नमन हजो मुज एवा सद्गुरु ज्ञानीने,
जगत जीवोने शान्ति दायक देवजो,
सदाश्रवण जे कहावे समता आदरी,
दर्शनथी शाश्वतपद छे नजरे रमो नमन० १
ज्ञायकभावे वर्ते सम्यक्त्वमां,
साध्यक्रियाने करता गुणनी खाणजो;
उपशम परिणामे रहेता चारित्रने,
मोटे विश्वासोपमणिपरमान जो नमन० २
द्रव्य सदवने माणे भागोभागथी,
जिन आज्ञाने छंडे नहिं क्षवदेन जो;
आगमनी साखे जाणे सौ भावने,
विनय विकाशे मध्ये परमा वर्तन जो. नमन० ३
दीन कृपणना दूर करे घरी मुर्ने
सहजाथी निज शांति अर्पे अनूप जो;
आत्मपरायणे दीन रहे सम सम लिये,
बुद्ध महाधारी परमा अनूप जो नमन० ४

उपसर्गो सहवामां सिंह समा वळी,
समभावे रहे समुद्रसम गंभीर जो;
शुद्ध ज्ञान धरता जे अलख अभेदनुं,
ष चक्रोने भेदे योगि वीर जो. नमन० ५

द्रव्य भावथी परवस्तुने त्यागता,
निर्विकल्पने वैरागे तल्लीन जो।
अचळ अडोल अफंद अविकारी सदा,
गुरुपरंपर आगममांहि प्रवीण जो. नमन० ६

त्रण शल्यने तृणवत् जाणी त्यागता,
गारव रस रिद्धिने शाता साथ जो;
धर्म करण कारणने सहेजे संग्रहे,
राग द्वेषनो त्याग दयाना नाथ जो. नमन० ७

निंदा विकथा चारे त्यागे नित्य जे,
कषायने तो कहाडे घरनी बहारजो;
वचन जेहनां पडे हृदयमां सोंसरां,
तत्वज्ञान ने धर्मकथानी वखार जो. नमन० ८

चरण नावमां बेठा मुनिवर साधता,
मुक्तिपुरीनो मार्ग वीकट सुखमेवजो।
चार भावना मित्रादिक जे भावता,
जग जंतुथी वैर शमावे देव जो. नमन० ९

पंचमहाव्रत विशुद्धतार्थी पालता,
गुप्ति समिति अजुआळि स्वयमेव जो;
अतिचारने दूर करी ज्ञानी गुरु,
पंचाचारे चरे ज्ञानामृतमेव जो. नमन० १०

छकायना जीवोनी रक्षा बहु करे,

शत्रु मित्र सम गणता गुरु गुणवान् जो;
षट् आवश्यक नित्य करे लही अर्थने,
क्रिया न करता फोनोग्राफ समान जो — नमन० ११

पर परिणतिने त्यागे शुद्धातम थकी,
आठ मदोने त्यागे दुःख देनार जो;
छत्रीस गुण धारक म्हारा श्री सद्गुरु,
सरळ अने मृदुभाव हृदय धरनार जो. — नमन० १२

अष्टदश सहस शिलांग रथे बिराजता,
नवविध पाळी ब्रह्मचर्य मतिमान जो;
[illegible]
[illegible] जो — नमन० १३

[illegible]
आत्मज्ञाननी [illegible] जो;
दुर्ध्यान [illegible] सद्गुरु,
ज्ञानामृत [illegible] जो — नमन० १४

[illegible] ज्ञान [illegible]
[illegible] ज्ञान ज्ञान न ज्ञान जो;
ज्ञान [illegible]
ज्ञानानंदी [illegible] जो. — नमन० १५

[illegible]
[illegible] जो;
[illegible]
[illegible] जो. — नमन० १६

[illegible]

तप भव गणती निश्चयथी समजाय जो।
बुद्धयब्धिअंकित सद्गुरु महाराजना,
बे कर जोडि मणी वंदे शुभ पाय जो नमन० १७

सांवत्सरिक क्षमापना.

राग धीराना पदनो.

जीवोने हुं खमावुंरे, वैरझेर दूरे करी;
मित्रो सर्वे म्हारारे, खमावुं सहु प्रेम धरी.
लक्ष चोराशी, जीवनीयोनि, उपन्यो वार अनंत.
मन वाणी कायाथी दुहव्या जीवो मोहे अत्यंत;
पश्चाताप तेनोरे, करु हवे ज्ञान धरी. जीवोने १
मनुष्यजन्म धारी आ भवमां, बांध्यां में जे वेर.
स्मरण करी हुं दुर करुं छुं समताए लीला लहेर;
वैरीनां वैर नासोरे, उपशम भावे मुक्ति वरी जीवोने. २
क्रोधमान मायाने लोभे, जीव संताप्या बहु.
अज्ञाने मांडुं जे मे कीधुं, खम वुं छु ते सहु
नमी नमी खमावुंरे. सकलसंघ भक्ति धरी. जीवोने ३
पापी मिथ्यात्वी जीवो तेम मित्रो भक्तो सर्व.
खेद अप्रीति जे उपजावी, खमावुं छुं तजी गर्व;
पर्युषणाना पर्वेरे, परभाव परिहरी जीवोने. ४
क्रोध कपट मानादिक तापे, संताप्यो निज जीव.
पोते पोताने हुं खमावुं. निश्चयथी जीव शिव;
अन्तरना देशे उतरेरे, खमापना शुद्ध करी. जीवोने. ५

सिद्धसमा सर्वेछे जीवो, सत्ताए गुणवंत,
कोइ न शत्रु तेमां म्हारो, निश्चय चित्तवसंत;
शिष्योने हुं समावुंरे, गुरुओने प्रेमभरी. जीवोने. ६

करुणा सर्व जीवोपर रहेशो, द्रव्यभावथी नित्य,
परगुण परमाणु पर्वतसम भासो प्रमोदे चित्त;
माध्यस्थभावे रहीनेरे, सर्वुंखमावुं करगरी. जीवोने. ७

अहंभावनो खेद टळो सहु, नासो माया दूर,
द्रव्यभावथी जीव खमावुं, ज्ञानानंद भरपूर;
द्रव्यभावपर्वेरे, मलीनता दूर हरी जीवोने. ८

त्रण भुवननो नाथ अहो हुं, सत्ताए कहेवाउ,
आप स्वरुपे ध्याने रहुं तो व्यक्तिपणे शुद्ध थाउ;
बुद्धिसागर ज्ञानेरे, जागतां शिवशांतिवरी. जीवोने. ९

वाणी.

वाणी वाणीरे म्हारा गुरुनी वाणी,
योगिए पकडी घर आणीरे, म्हारा. १
वाणी उपर जे जन बेठा, मुक्ति पुरीमां ते पेठारे. म्हारा. २
वाणी पाणी मांहि पीलाशे, खोळ तेनो ढोर खाशेरे. म्हारा. ३
वाणी येडपाना संदेशा, समजे नहि तो अंदेशारे. म्हारा. ४
मार्ग अनेकने नगर छे एक, बुद्धिसागरनी छे टेकरे. म्हारा. ५

२७३
अवळी वाणी.

भला जग सांभळो संतोरे, के नाव पर दरियो चाल्यो जाय,
बुढिया बाबा जति सन्यासी, खाखी जोगी फकीर.
जळमय दुनिया देखी ज्यारे, रही नहि कोइनी धीर. भला १

एक कीडीए दरियो पीधो, तो पण तरसी थाय.
चार मेघनां पाणी पीधां, नदीमां डुबी जाय. भला. २

एक सरिता नीची व्हेती, ऊंची चाली जाय;
ए सरितामां स्नान करे ते, हतो न हतो थाय. भला. ३

पूजारीने तीरथ पूजे, रची माछळे जाळ;
पकडाणा धीवर ते जाळे, जोया जेवो ताल. भला. ४

एक तमासो एवो देख्यो, ज्यां सहु एकाकार।
हिंदु मुसल्ला पारसी सहु, खाय पीवे एकलार. भला. ५.

एक त्राजवुं अद्भुत देख्युं, त्रण भुवन तोलाय.
बुद्धिसागर अवळी वाणी, कोइकने समजाय. भला. ६

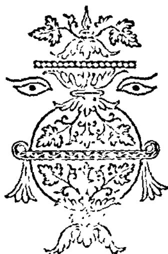
अन्त्यमंगलम्.

श्री संखेश्वर पार्श्व प्रभु जयकारी, पग पग जगजयकारीरे. श्री
चिंतामणि सुजमंत्र सवायो, धारणा ध्यानथीज ध्यायो,
भक्ति प्रतापे दर्शन पायो, अनुभव आनन्द पायोरे. श्री १

धरणेन्द्रपद्मावती देवी, साह्य करे जयकारी.
पार्श्वयक्ष बहु साह्य करेछे, मंत्रचिन्तामणि धारीरे. श्री २
इष्टदेव वामादेवीना नन्दन, शरणुं छे एक तमारुं;
नाममंत्र तुज जगमांहि मोटो, काम करे छे सहु धार्युंरे.श्री ३
दर्शन देइने आनन्द आप्यो, विघ्न हर्यां बहुभारी;
साकारने निराकार तुंहि प्रभु, जिनशासन सुखकारीरे.श्री.४
पुरिसादाणी परमकृपालु, ध्यान धरुं उरधारी;
बुद्धिसागर शासन देवो, पग पग मंगलकारीरे. श्री. ५

सं. १९६५ विजयादशमी. अमदावाद.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः



श्री भजनपद संग्रह चोथा भागनुं अशुद्धि शुद्धि पत्रक.

पत्र.	ळीटी.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१	१०	तुस	सत्
९	१४	स्रुद्धि	रुद्धि
९	१८	बुद्धि	बुद्धि
११	११	सनाव	सनाथ
१२	१	औदपिक	औदयिक
१६	९	व्यबहार	व्यवहार
२६	१७	शुद्ध	शुद्ध
२६	१८	बुद्धि	बुद्धि
२८	४	दुख	दुःख
३१	९	खयं	स्वयं
३२	१७	वडी	घडी
४२	१४	सुषुम्णा	सुषुम्णा
४७	२०	स्थिरोपयोगो	स्थिरोपयोगे
४७	२०	शोधतां	शोधतां
५३	१६	चिदान्द	चिदानन्द
५५	५	शुद्व	शुद्ध
६९	५	सद्व	सद
७२	९	कया	कयां
८२	५	मीतथी	मतिथी
८२	१६	खाइ	खोइ
८४	८	वीर्यात्साहे	वीर्योत्साहे

पत्र.	लीटी.	अशुद्धि	शुद्धि
१००	६	अहां	अहो
१०९	७	घसोछे	घसोछो
११	३	रले	रेले
१२	६	मूट	मूढ
२०	१५	पडी	पडे
११	११	मनमा	मनमां
२३	१४	झल्या	झूल्या
२३	२१	अरे	अरेते
१५	९	नाश	नाश
१०.	९	मभुना	मभुने
१२	२१	आत्मा	आतमा
३	१९	करतो	करतो
३	२३	संवरु	संचरु
४	१७	आत्मा	आतमा
८	२१	वरतु	वस्तु
२	४	गी	गीत
२	११	आरापन	आरापन
	८	शील	शील
	१०	वत्र	पत्र.
	४	विपय	विषय
	११	निण	निगुण
	३	दिठ	दिठ
	२१	नेहां	निहां
	४	सनता	सनेम.

पत्र	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
२२४	६	विलाम	विळास
२२४	१५	कलश	कलशदंड
२४८	२०	२९ शुभगुरु	२९ वचनमाने
२४९	२०	४६ उत्त	४६ उत्सव
२५१	२	आगममगांहि	आगममाहि
२५५	११	४९ दान	४९ दानु
२५५	२१	वीर	खीर
